जून 2022

मूल्य : ₹ 22

आज़ादी का अमृत महोत्सव

कुरुक्षेत्र

ग्रामीण विकास को समर्पित

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

ग्रामीण पर्यटन

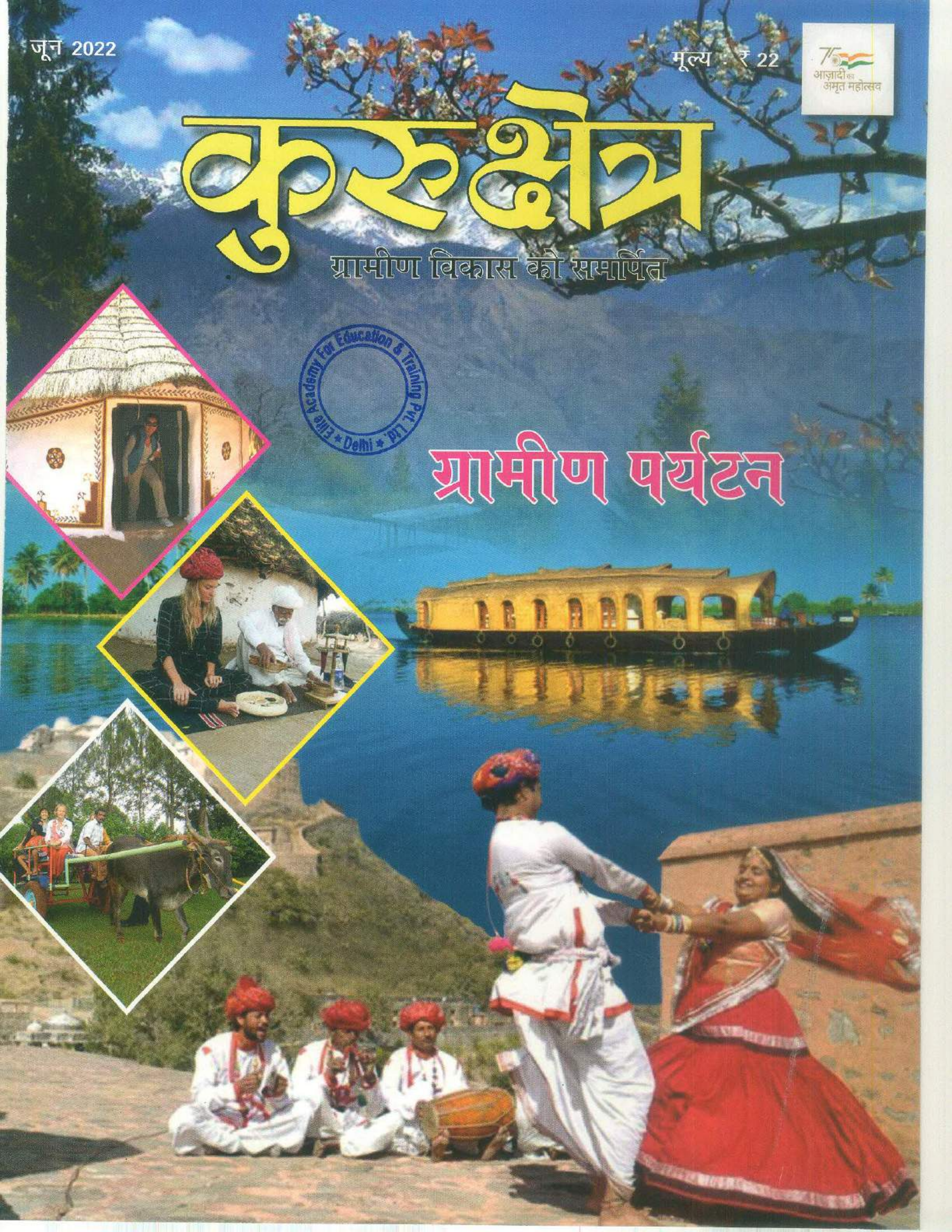

अब प्रिंट संस्करण और ई-बुक संस्करण उपलब्ध

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत 2022

भारत के प्रांतों, केंद्रशासित प्रदेशों,
भारत सरकार के मंत्रालयों और विभागों तथा
नीतियों, कार्यक्रमों और उपलब्धियों की
आधिकारिक जानकारी देने वाला
वार्षिक संदर्भ ग्रंथ

मूल्यः प्रिंट संस्करण ₹ 330/- ई-बुक संस्करण ₹ 248/-

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

पुस्तकें खरीदने के लिए प्रकाशन विभाग की
वेबसाइट : www.publicationsdivision.nic.in और मोबाइल ऐप **Digital DPD** पर जाएं

ई-बुक एमेज़ॉन और गूगल प्ले पर भी उपलब्ध

देश भर में प्रकाशन विभाग के विक्रय केन्द्रों और
पुस्तक विक्रेताओं से भी खरीद सकते हैं

ऑर्डर के लिए संपर्क करें :
फोन : 011-24367260
ई-मेल : **businesswng@gmail.com**
हमारी पुस्तकें ऑनलाइन खरीदने के लिए
कृपया **www.bharatkosh.gov.in** पर जाएं।

प्रकाशन विभाग
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय,
भारत सरकार
सूचना भवन, सी जी ओ कॉम्पलेक्स,
लोधी रोड नई दिल्ली -110003
वेबसाइट : www.publicationsdivision.nic.in

सूचना भवन की पुस्तक दीर्घा में पधारें

@publicationsdivision @DPD_India @dpd_India

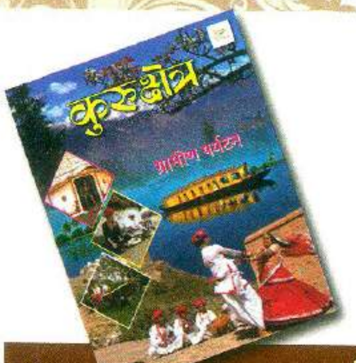

कुरुक्षेत्र

ग्रामीण विकास मंत्रालय की प्रमुख मासिक पत्रिका

इस अंक में

वर्ष : 68 ★ मासिक अंक : 8 ★ पृष्ठ : 56 ★ ज्येष्ठ–आषाढ़ 1944 ★ जून 2022

वरिष्ठ संपादक : ललिता खुराना

संयुक्त निदेशक : डी.के.सी. हृदयनाथ

आवरण : राजिन्द्र कुमार

संपादकीय कार्यालय
कमरा नं. 655, प्रकाशन विभाग, सूचना भवन,
सी.जी.ओ. काम्पलेक्स, लोधी रोड,
नई दिल्ली-110 0 03
ई-मेल : kuru.hindi@gmail.com

वेबसाइट : publicationsdivision.nic.in
@publicationsdivision
@DPD_India
@dpd_India

ग्रामीण पर्यटन से रोजगार सृजन 05
–अविनाश मिश्रा एवं मधुबंती दत्ता

भारत के नयनाभिराम पर्यटन स्थल 11
–डा. जी कमला वर्धन राव

ग्रामीण पर्यटन: संस्कृति और विरासत का झरोखा 15
–हेमंत मेनन

कृषि पर्यटन में असीम संभावनाएं 20
–सौरभ शर्मा

ग्रामीण पर्यटन : प्रगति और संभावनाएं 26
–गजेन्द्र सिंह 'मधुसूदन'

अलौकिक सौंदर्य से परिपूर्ण पूर्वोत्तर भारत 34
–दुर्गानाथ स्वर्णकार

पारिस्थितिकी पर्यटन से स्थानीय सुसंगत विकास 41
–अमरेंद्र किशोर

कोविड-19 के बाद पर्यटन उद्योग 48
–भव्या त्यागी एवं करिश्मा शर्मा

योग से सम्पूर्ण स्वास्थ्य की ओर 52
–डा. कृष्ण चंद्र चौधरी

कुरुक्षेत्र सदस्यता शुल्क

पत्रिका ऑनलाइन खरीदने के लिए bharatkash.gov.in/product पर तथा ई–पुस्तकों के लिए Google play, Kobo या Amazon पर लॉग–इन करें।

वार्षिक : ₹ 230 , द्विवार्षिक : ₹ 430 , त्रिवार्षिक : ₹ 610

कुरुक्षेत्र की सदस्यता की जानकारी लेने, एजेंसी संबंधी सूचना तथा विज्ञापन छपवाने के लिए संपर्क करें–

अभिषेक चतुर्वेदी, संपादक, पत्रिका एकांश
प्रकाशन विभाग, कमरा सं. 779, सातवां तल,
सूचना भवन, सीजीओ परिसर,
लोधी रोड, नयी दिल्ली–110003

सदस्यता शुल्क जमा करने के बाद पत्रिका प्राप्त होने में कम से कम 8 सप्ताह का समय लगता है।

पत्रिका न मिलने की शिकायत हेतु इस पर मेल करें ई–मेल : pdjucir@gmail.com या दूरभाष: 011–24367453 पर संपर्क करें।

कुरुक्षेत्र में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं कि सरकारी दृष्टिकोण भी वही हो। पाठकों से आग्रह है कि कैरियर मार्गदर्शक किताबों/संस्थानों के बारे में विज्ञापनों में किए गए दावों की जांच कर लें। पत्रिका में प्रकाशित विज्ञापनों की विषय–वस्तु के लिए 'कुरुक्षेत्र' उत्तरदायी नहीं है।

प्रकाशन विभाग के विक्रय केंद्र

नई दिल्ली	पुस्तक दीर्घा, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड	110003	011–24367260
दिल्ली	हाल सं. 196, पुराना सचिवालय	110054	011–23890205
नवी मुंबई	701, सी–विंग, सातवीं मंज़िल, केंद्रीय सदन, बेलापुर	400614	022–27570686
कोलकाता	8, एसप्लानेड ईस्ट	700069	033–22488030
चेन्नई	'ए' विंग, राजाजी भवन, बसंत नगर	600090	044–24917673
तिरुअनंतपुरम	प्रेस रोड, नई गवर्नमेंट प्रेस के निकट	695001	0471–2330650
हैदराबाद	कमरा सं. 204, दूसरा तल, सीजीओ टावर, कवादिगुड़ा सिकंदराबाद	500080	040–27535383
बैंगलुरु	फर्स्ट फ्लोर, 'एफ' विंग, केंद्रीय सदन, कोरामंगला	560034	080–25537244
पटना	बिहार राज्य कोऑपरेटिव बैंक भवन, अशोक राजपथ	800004	0612–2683407
लखनऊ	हॉल सं–1, दूसरा तल, केंद्रीय भवन, क्षेत्र–ए, अलीगंज	226024	0522–2325455
अहमदाबाद	4–सी, नैप्चुन टॉवर, चौथी मंज़िल, एचपी पेट्रोल पंप के निकट, नेहरू ब्रिज कार्नर, आश्रम रोड, अहमदाबाद	380009	079–26588669

संपादकीय

भारत में पर्यटन की दृष्टि से आकर्षण के केंद्र दूर–दूर तक फैले हैं। बर्फ से ढकी हिमालय की चोटियां, घने जंगल, सुनहरे तट और रेतीले मरुस्थल भारत को पर्यटकों के लिए सही मायने में 'अतुल्य' गंतव्य बनाते हैं। भारत में पर्यटन एक ऐसा क्षेत्र है जो लोगों को सबसे अधिक रोज़गार के अवसर प्रदान करता है। अपने देश की सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों को बदलने में पर्यटन क्षेत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यही नहीं बल्कि देश की सांस्कृतिक विविधता और समृद्ध विरासत को प्रदर्शित करने का भी पर्यटन सबसे प्रभावी माध्यम है।

ग्रामीण पर्यटन में निवेश केवल रोज़गार एवं आमदनी बढ़ाने के तौर पर ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक विकास का भी एक प्रभावी माध्यम हो सकता है। हमारे देश में हर राज्य, ज़िला और गांव की अपनी भाषा, संस्कृति परंपराएं, रीति–रिवाज़, वेशभूषा और खानपान के तौर–तरीके हैं। गांवों का प्राकृतिक परिवेश और सहज–सरल जीवन पर्यटकों को आत्मिक आनंद देता है और उसे अपनी जड़ों से जुड़ने का एहसास होता है। यही अनुभव ग्रामीण पर्यटन को असीम संभावनाओं का क्षेत्र बनाता है।

पर्यटन मंत्रालय द्वारा 2020 में 'देखो अपना देश' पहल शुरू की गई। इस पहल का उद्देश्य देश के नागरिकों को अपने देश के भीतर यात्रा करने और उन्हें भारत की विशिष्ट संस्कृति को जानने के लिए प्रोत्साहित करना है, जिससे देश में घरेलू पर्यटन और पर्यटन अवसंरचना का विकास संभव हो सके। हमारे देश का ऐसा कोई राज्य या ज़िला नहीं है,जिसकी पर्यटन की दृष्टि से अपनी कोई विशेषता नहीं हो। इस विशिष्टता के कारण ही अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिए भारत आकर्षण का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया है। भारत सरकार पूरे देश को पर्यटन और संस्कृति के माध्यम से जोड़ने पर काम कर रही है। 'भारत पर्व' कार्यक्रम के माध्यम से पर्यटन मंत्रालय का उद्देश्य आम नागरिकों में देशभक्ति की भावना उत्पन्न करना और देश की समृद्ध एवं सांस्कृतिक विविधता को प्रदर्शित करना है।

कोरोना–19 महामारी ने पर्यटन क्षेत्र के लिए सबसे बड़ी चुनौती खड़ी की है। हालांकि हमने सभी बाधाओं के बावजूद इस चुनौती को अवसर में बदलने का प्रयास किया है। लेकिन इसके बावजूद पर्यटन उद्योग अत्यधिक प्रभावित हुआ है। इसी के मद्देनजर सरकार द्वारा पर्यटन क्षेत्र को सहारा देने हेतु घरेलू स्थानीय पर्यटन को बढ़ावा देने के योजनाबद्ध प्रयास शुरू किए गए हैं। ग्रामीण भारत के पास लोगों को देने के लिए बहुत कुछ है। इन क्षेत्रों की पहचान करने और उनमें पर्यटन की संभावनाओं को खोजने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों को एकजुट प्रयास करना होगा। इस क्षेत्र में सार्वजनिक–निजी भागीदारी के मॉडल पर आधारित कुछ सफल परियोजनाओं का भी अनुसरण किया जा सकता है। ग्रामीण पर्यटन को विकसित करने के लिए ग्रामीण युवक–युवतियों को टूरिस्ट गाइड अथवा आतिथ्य के क्षेत्र में प्रशिक्षित करना होगा जिससे वे पर्यटकों से प्रभावी संवाद कर सकें और उन्हें गाइड कर सकें।

पर्यटकों के गांव में बिताए उनके पलों को यादगार बनाने के हरसंभव उपाय करने होंगे ताकि वह ना केवल खुद बार–बार आएं बल्कि औरों को भी साथ लाएं। ग्रामीण पर्यटन स्थानीय उत्पादों के विपणन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। गांव में ही रोजगार के नए अवसरों के सृजन से शहरों की ओर पलायन में कमी आती है और सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक धरोहरों का आर्थिक महत्व समझ आने पर उनका संरक्षण करने के प्रति जागरूकता भी बढ़ती है। ग्रामीण पर्यटन के विकास से ग्रामीण जन समुदाय अपने जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने में सक्षम हो सकता है। ग्रामीण पर्यटन आजीविका के अधिक विकल्प उपलब्ध करा कर ग्रामीण समुदाय की आमदनी बढ़ाने और लुप्त होती जा रही ग्रामीण कला विधाओं के संरक्षण में भी मददगार है।

ग्रामीण पर्यटन से गांव के लोग दूसरी संस्कृति के लोगों के संपर्क में आते हैं जिससे उनकी जानकारियों का दायरा बढ़ता है। इस तरह संस्कृति और परंपराओं के आदान–प्रदान में भी ग्रामीण पर्यटन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक गांव को एक सुरक्षित और आनंदमयी पर्यटन स्थल में परिवर्तित करने के लिए वहां के स्थानीय समुदाय की भागीदारी अति आवश्यक है। इसके लिए सरकार, एनजीओ, पंचायत, सामुदायिक संगठन सभी को साथ मिलकर काम करना होगा। गांव में स्वयं सहायता समूहों के ज़रिए भी स्थानीय कला और शिल्प का विकास किया जा सकता है।

पर्यटन को पूर्ण रूप से विकसित करने के लिए केवल भौतिक संरचना काफी नहीं है बल्कि इसके लिए सक्षम मानव संसाधन भी उतने ही ज़रूरी है। इसके लिए ग्रामीण युवाओं को आचार–व्यवहार के बारे में प्रशिक्षित करना होगा ताकि वे पर्यटकों से प्रभावी संवाद कर सकें। साथ ही, अपने आतिथ्य के लिए प्रसिद्ध भारत में ग्रामीणों को यह प्रशिक्षण देना होगा कि वह कैसे एक पर्यटक द्वारा अपने गांव में बिताए पलों को यादगार बना सकते हैं ताकि पर्यटक खुद तो ही लौट कर आए, बल्कि वह औरों को भी साथ लेकर आए।

संक्षेप में, साढ़े छह लाख से अधिक गांवों के देश भारत में ग्रामीण पर्यटन संपन्नता के द्वार खोल सकता है। यह जहां एक तरफ ग्रामीण युवा पीढ़ी के लिए रोज़गार का एक उत्तम माध्यम बनेगा वहीं दूसरी ओर, विभिन्न संस्कृतियों, भाषा और जीवनशैली के लोगों को एक–दूसरे के करीब लाकर हमारी राष्ट्रीय एकता को मज़बूत करेगा। शहर की आपाधापी भरी ज़िदगी से दूर हम सभी को कुछ दिन तो जरूर प्रकृति के करीब प्राकृतिक माहौल में गांव में बिताने चाहिए।

Elite Academy for Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

ग्रामीण पर्यटन से रोज़गार सृजन

– अविनाश मिश्रा एवं मधुबंती दत्ता

भारत वैभवशाली विरासत और प्रकृति के असीम वरदान के लिए विख्यात है। साथ ही, यहां कई अद्भुत स्थान हैं जो विश्व में 'भारत के गौरव' का प्रतीक माने जाते हैं। पर्यटन के माध्यम से स्वदेशी उत्पादों का विकास और प्रचार–प्रसार ग्रामीण क्षेत्रों में आमदनी और रोज़गार बढ़ा सकता है और स्थानीय समुदायों, युवाओं और महिलाओं को सशक्त बना सकता है। पात्र व्यक्तियों को आवश्यक व्यावसायिक कौशल द्वारा विधिवत योग्यता प्रदान करने और सक्षम बनाने के उद्देश्य से व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए जिससे वे पर्यटन उद्योग में 'विरासत टूर गाइड' के रूप में नौकरी कर सकें। प्रमाणित गाइड लाइसेंस पर्यटकों की नज़र में पर्यटक गाइड की विश्वसनीयता को और अधिक बढ़ाएगा, देश में आने वाले पर्यटकों के समग्र अनुभव को बढ़ाएगा और पर्यटन उद्योग में रोज़गार के अवसर पैदा करेगा जिससे आत्मनिर्भर भारत का लक्ष्य साकार होगा।

भारत दुनिया की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक है जो विविधरूपी सांस्कृतिक आयामों के अनुभव प्रदान करती है। देश में एक समृद्ध विरासत और अनेक आकर्षण मौजूद हैं। यह हिमाच्छादित हिमालय की चोटियों से लेकर दक्षिण के उष्ण कटिबंधीय वर्षा वनों तक 32,872,263 वर्ग किलोमीटर में फैला है[1]। यह दुनिया का सातवां सबसे बड़ा देश है जो पहाड़ों और समुद्र द्वारा एशिया के शेष भागों से अलग है और देश को एक विशिष्ट भौगोलिक पहचान प्रदान करता है। यह एक अभूतपूर्व पर्यटन स्थल है जो आगंतुकों को विविध अनुभव प्रदान करता है। भारत में सैकड़ों वर्ष पूर्व स्थापित विभिन्न विरासत सम्पदाएं हैं जिनमें विशाल धरोहर स्थलों से लेकर अंडमान तथा निकोबार और लक्षद्वीप में नैसर्गिक समुद्र तट शामिल हैं।

पर्यटन आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक और राजनीतिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। पर्यटन उद्योग, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष, दोनों तरह से रोज़गार पैदा करता है। इसके तीव्र विकास के साथ आलीशान पर्यटन होटलों में, उच्च कौशल प्राप्त और प्रशिक्षित प्रबंधकों से लेकर अर्ध–कुशल श्रमिकों तक के, रोज़गार अवसरों में वृद्धि हुई है। पर्यटन भारत जैसे देश में सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक क्षेत्रों में गिना जाने लगा है जो महत्वपूर्ण राष्ट्रीय आय अर्जित करता है और रोज़गार के प्रचुर अवसर पैदा करता है।

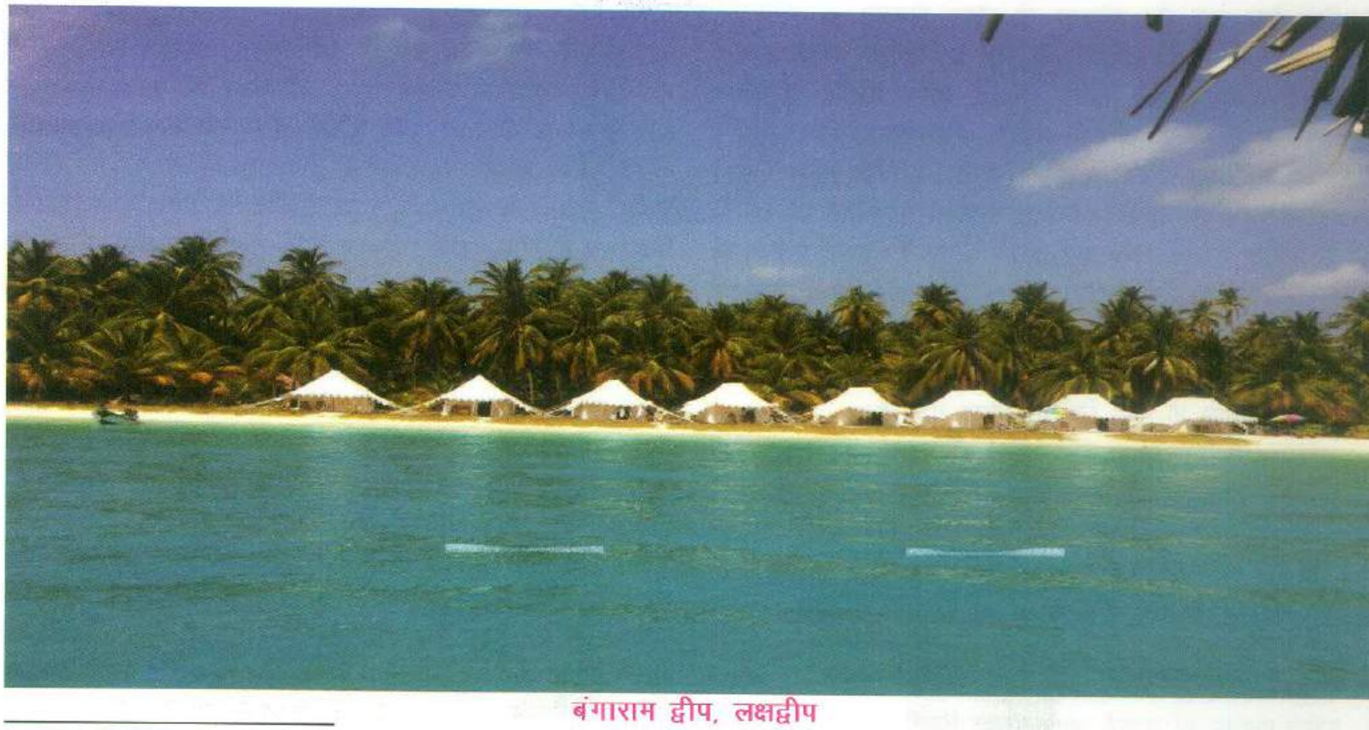

बंगाराम द्वीप, लक्षद्वीप

1 भारत पर्यटन सांख्यिकी, 2019

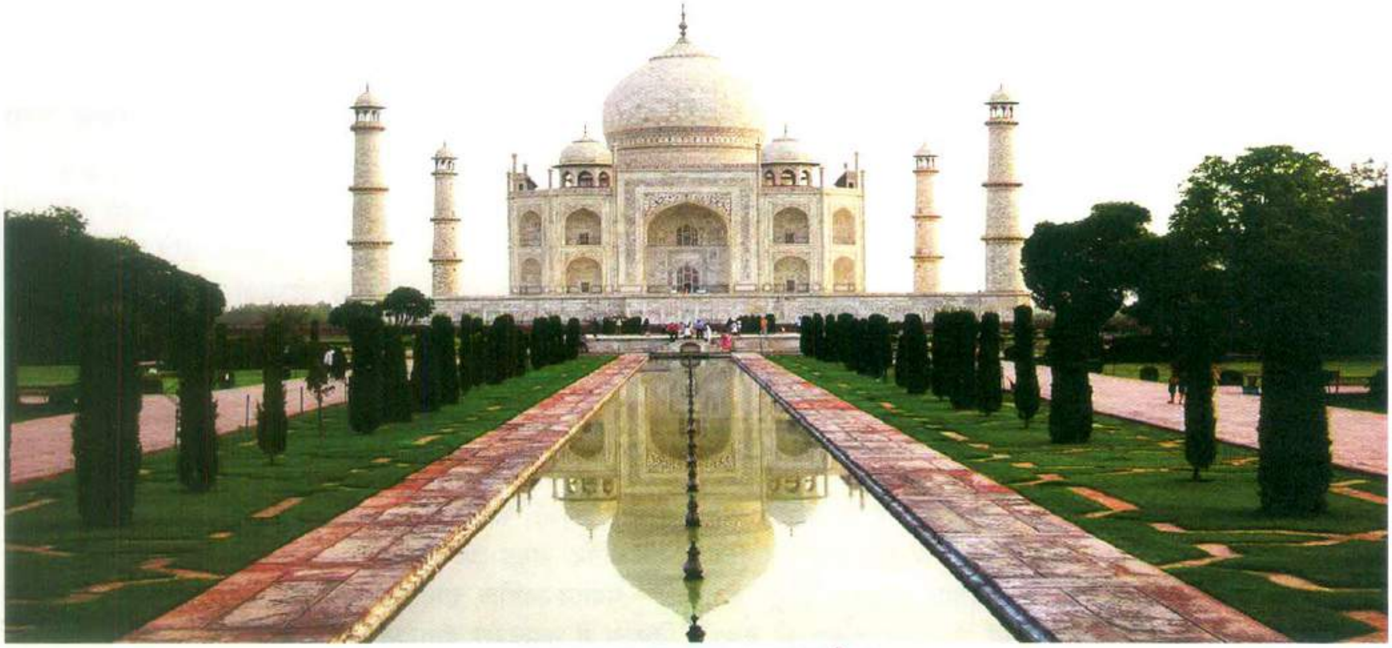

ताजमहल, आगरा, उत्तर प्रदेश

यह देश का सबसे तेजी से बढ़ने वाला सेवा उद्योग बन गया है जिसमें विस्तार और विविधीकरण की उत्कृष्ट सम्भावनाएं हैं।

पर्यटन–आर्थिक विकास का उत्प्रेरक

'स्वदेश दर्शन' योजना के तहत पर्यटन मंत्रालय योजनाबद्ध और प्राथमिकता के आधार पर देश में विषयगत पर्यटन सर्किट विकसित कर रहा है। योजना के तहत विकास के लिए 15 विषयगत सर्किटों की पहचान की गई है, पूर्वोत्तर सर्किट, बौद्ध सर्किट, हिमालय सर्किट, तटीय सर्किट, कृष्ण सर्किट, रेगिस्तान सर्किट, जनजातीय सर्किट, इको सर्किट, वन्य जीवन सर्किट, ग्रामीण सर्किट, आध्यात्मिक सर्किट, रामायण सर्किट, हेरिटेज सर्किट, सूफी सर्किट और तीर्थंकर सर्किट। पर्यटन मंत्रालय ने पर्यटन को स्थायी रूप से बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए हैं। इसने पर्यटन के बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए स्वदेश दर्शन और प्रसाद योजनाएं शुरू की गई हैं। विभिन्न केंद्रीय मंत्रालयों/विभागों, राज्य सरकारों और शहरी स्थानीय निकायों के सहयोग से देश में 17 प्रतिष्ठित स्थलों को विकास के लिए चिन्हित किया गया है।

मंत्रालय ने विरासत स्थलों, स्मारकों और अन्य पर्यटक आकर्षणों पर आगंतुक सुविधाओं के सुधार और उनके रखरखाव के उद्देश्य से "एक विरासत अपनाएं–अपनी धरोहर अपनी पहचान" परियोजना भी शुरू की है। एक अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धि 171 देशों के नागरिकों के लिए पांच उपश्रेणियों में ई–वीज़ा का प्रावधान है, जैसे–पर्यटक वीज़ा, ई–बिज़नेस वीज़ा, ई–मेडिकल वीज़ा, ई–मेडिकल अटेंडेंट वीज़ा और ई–कॉन्फ्रेंस वीज़ा[2]।

नीति आयोग ने देश में कुछ चिन्हित द्वीपों के समग्र विकास का कार्य हाथ में लिया है। अंडमान और निकोबार में चार द्वीपों के लिए अंतिम स्थल संभाव्यता विकास रिपोर्ट तैयार की गई है, अर्थात स्मिथ, रॉस, लॉन्ग और एव्स द्वीप समूह, और लक्षद्वीप में पांच द्वीप, अर्थात् मिनिकॉय, बांगरम, टिन्नाकारा, चेरियम और, सुहेली द्वीप समूह। पर्यटन आधारित परियोजनाओं की पहचान अंडमान और निकोबार के लांग, एव्स, स्मिथ और नील द्वीप और लक्षद्वीप के मिनिकॉय, कदमत और सुहेली द्वीप समूह में की गई है। स्वदेश दर्शन योजना के तटीय विषयक सर्किट के तहत अंडमान और निकोबार में तटीय सर्किट (लॉन्ग द्वीप–रॉस स्मिथ द्वीप–नील द्वीप – हैवलॉक द्वीप–बाराटांग द्वीप–पोर्ट ब्लेयर) का विकास देश में द्वीप पर्यटन के विकास के लिए लागू किया गया है[3]।

लक्षद्वीप में विशाल पारिस्थितिकी पर्यटन और मत्स्य पालन क्षमता को देखते हुए भारत इस क्षेत्र की नाजुक और संवेदनशील जैव विविधता को जोखिम में डाले बिना पारिस्थितिकी पर्यटन और सतत मत्स्य पालन के लिए एक आदर्श मॉडल बन सकता है। विभिन्न पहलें जैसे समुद्र के भीतर ऑप्टिकल फाइबर कनेक्टिविटी, हवाई अड्डे का विस्तार, बुनियादी ढांचे का उन्नयन और कई द्वीपों पर जल महल (वॉटर विला) बनाने की योजना सराहनीय प्रयासों के उदाहरण हैं। बड़े पैमाने पर समुद्री शैवाल की खेती मत्स्य पालन क्षेत्र को आधुनिक बनाने का प्रयास है। इसके अलावा, जैविक नारियल तेल और जूट के उत्पादन को बढ़ाने के लिए भी कदम उठाए जा रहे हैं[4]।

2 पर्यटन मंत्रालय, 03 फरवरी, 2020, पसूका, दिल्ली
3 पर्यटन मंत्रालय, 07 जनवरी, 2019, पसूका, दिल्ली
4 उपराष्ट्रपति सचिवालय, 01 जनवरी, 2022, पसूका, दिल्ली

> भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में विदेशी पर्यटकों को लुभाने के लिए बहुत कुछ है। कला, शिल्प और संस्कृति में समृद्ध ग्रामीण भारत में एक पर्यटक आकर्षण का केंद्र बनने की पूरी सम्भावना है। यदि ग्रामीण पर्यटन की अवधारणा का बेहतर ढंग से प्रचार–प्रसार किया जाता है तो विकसित देशों के वासी, विशेष रूप से युवा पीढ़ी जिन्हें पारंपरिक जीवनशैली, कला और शिल्प लुभाते हैं, ग्रामीण भारत की ओर खिंचे चले आएंगे।

राष्ट्रीय उद्यान जैव विविधता की आधारशिला हैं और पारिस्थितिकी तंत्र और उनके भीतर पनपने वाली वनस्पतियों के पोषण के लिए महत्वपूर्ण हैं। राष्ट्रीय उद्यान, वन्य जीवन और प्रकृति आधारित पर्यटन के साथ, भारतीय अर्थव्यवस्था को बहुत मज़बूती प्रदान करते हैं।

आर्थिक लाभों के अलावा, पर्यटन ने भारतीय नागरिकों और अन्य देशवासियों के बीच सांस्कृतिक संपर्क को बढ़ावा दिया है और क्षेत्रीय सहयोग को मज़बूती प्रदान की है। इस क्षेत्र ने भारत की सॉफ्ट पॉवर (बौद्धिक एवं सांस्कृतिक शक्ति) को बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विश्व–स्तर पर यात्रा और पर्यटन उद्योग सबसे तेजी से बढ़ते उद्योगों में से एक है। 2019 में 2.5 प्रतिशत की वैश्विक आर्थिक विकास दर की तुलना में इस उद्योग की विकास दर 3.5 प्रतिशत रही। इस क्षेत्र ने वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 10.4 प्रतिशत का योगदान दिया। दुनिया भर में इस क्षेत्र में 330 मिलियन कर्मी रोज़गार में लगे और यह वैश्विक सेवाओं के निर्यात का 27.4 प्रतिशत भाग बना। हालाँकि कोविड–19 का विश्व भर के यात्रा उद्योग पर दुष्प्रभाव पड़ा है। वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में इस क्षेत्र के योगदान और रोज़गार में क्रमशः 49 प्रतिशत और 19 प्रतिशत की गिरावट आई है[5]।

पर्यटन क्षेत्र देश के विदेशी मुद्रा भंडार में अत्यधिक योगदान देता है और औपचारिक और अनौपचारिक दोनों क्षेत्रों में रोज़गार के अवसर प्रदान करता है। 2019 में यह क्षेत्र कुल रोज़गार का 8.8 प्रतिशत, कुल निर्यात का 5.8 प्रतिशत और सकल घरेलू उत्पाद का 6.9 प्रतिशत भाग था[6]। लेकिन अब यह क्षेत्र सकल घरेलू उत्पाद में केवल 4.7 प्रतिशत, कुल रोज़गार में 7.3 प्रतिशत और कुल निर्यात में 2.5 प्रतिशत का योगदान देता है[7]। सेवा क्षेत्र का भारतीय अर्थव्यवस्था में 55 प्रतिशत योगदान पर्यटन उद्योग को देश के समग्र आर्थिक विकास के लिए और भी महत्वपूर्ण बना देता है।

विविध संस्कृति और समृद्ध स्थापत्य विरासत के बावजूद भारत के पास स्पेन (5.7%), यूएसए (5.4%), चीन (4.5%), यूके (2.7%) और थाईलैंड (2.7%) की तुलना में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन बाज़ार का केवल 1.2 प्रतिशत भाग है (2019)[8]। यूके और यूएसए जैसे देशों में क्रमशः केवल 34 और 24 विश्व धरोहर स्थल हैं लेकिन पर्यटन से उनकी विदेशी मुद्रा आय भारत की तुलना में बहुत अधिक है जहां 40 विश्व धरोहर स्थल हैं।

इस परिप्रेक्ष्य में भारत को विशिष्ट पर्यटन, आरोग्य पर्यटन, साहसिक पर्यटन और आध्यात्मिक पर्यटन जैसे विभिन्न पर्यटन क्षेत्रों को बढ़ावा देने और प्रचार–प्रसार के लिए नवीन दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। यह देखते हुए कि भारत घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के बीच सदियों से आध्यात्मिक पर्यटन के गंतव्य स्थल के रूप में जाना है, हमें आध्यात्मिक पर्यटन की क्षमता को उजागर करना चाहिए।

पर्यटन का महत्व

विश्व के अधिकांश स्थानों में पर्यटन आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण स्रोत है। कई देशों ने पर्यटन की क्षमता का पूरी तरह से उपयोग करके अपनी अर्थव्यवस्थाओं को संपन्न बना दिया है। पर्यटन में बड़े पैमाने पर उत्पादक रोज़गार पैदा करने की क्षमता है जो विभिन्न प्रकार के हैं जैसे अत्यधिक कुशल से लेकर अर्ध–कुशल तक। पर्यटन के क्षेत्र में कई दशकों से विकास और विविधता आई है जिसके कारण यह सबसे तेजी से बढ़ते आर्थिक क्षेत्रों में से एक बन गया है।

समकालीन पर्यटन का आर्थिक विकास और सामाजिक–आर्थिक विकास से गहरा संबंध है। वर्तमान में, पर्यटन का एक वाणिज्यिक परिमाण भी है जो तेल निर्यात, खाद्य पदार्थों और वाहनों के समकक्ष है या उससे अधिक है। पर्यटन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में आवश्यक प्रतिभागियों में गिना जाने लगा है और कई विकासशील देशों के लिए आय के प्राथमिक स्रोतों में से एक बन गया है। इस विस्तार के साथ पर्यटन गंतव्य स्थलों का विविधीकरण हुआ है और प्रतिस्पर्धात्मकता में भी वृद्धि हुई है। आर्थिक संचालक के रूप में पर्यटन उद्योग का बढ़ता महत्व और विकास तथा साधन के रूप में इसकी क्षमता निर्विवाद है। यह न केवल विकास को गति देता है बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर रोज़गार पैदा करके लोगों के जीवन में सुधार भी लाता है। यह समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पर्यावरणीय स्थिरता और अंतर्राष्ट्रीय शांति को बढ़ावा देता है।

भारत में पर्यटन अधिकतर चंद पारंपरिक शहरों और कस्बों तक सीमित रहा है जो ऐतिहासिक, स्थापत्य और सांस्कृतिक अभिरूचि के केंद्र हैं। बुनियादी ढांचे और संचार साधनों की कमी और प्रतिबंधात्मक नीतियों के कारण कई शानदार स्थल अज्ञात हैं या कम खोजे गए हैं। भारत में लगभग हर क्षेत्र के अपने नयनाभिराम स्थल हैं जिन्हें पर्यटन के लिए विकसित करने और बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इसके लिए एक समग्र कार्यनीति और देश भर में एक समान नीति निष्पादन की आवश्यकता है। इसके अलावा, हमें इन सभी क्षेत्रों को व्यवस्थित तरीके से विकसित करने के लिए, राज्य और केंद्र दोनों से, योजना और वित्तीय सहायता की आवश्यकता है। अब 'ग्रामीण पर्यटन' पर ध्यान देने की ज़रूरत है जो पर्यटन क्षेत्र की प्रगति का भविष्य है।

Elite Academy For Education & Training Pvt Ltd ★ Delhi ★

6 विश्व यात्रा एवं पर्यटन परिषद भारत रिपोर्ट 2021

7 विश्व यात्रा एवं पर्यटन परिषद भारत रिपोर्ट 2021

8 भारत पर्यटन सांख्यिकी एक नज़र में 2021

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, भरतपुर, राजस्थान

ग्रामीण पर्यटन पर विशेष फोकस

दुनिया भर में पर्यटन उद्योग की अभूतपूर्व प्रगति को देखते हुए भारत सरकार ने पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कई नीतिगत पहलों को लागू किया है। "अतुल्य भारत" को विश्व स्तर पर एक आकर्षक पर्यटन गंतव्य बनाने के लिए नए पर्यटन साज़ो–सामान और पैकेज जैसे व्यापार पर्यटन, स्वास्थ्य पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन, पारिस्थितिकी पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, तीर्थ पर्यटन, साहसिक पर्यटन और सतत पर्यटन विकसित किए जा रहे हैं।

भारत का ग्रामीण क्षेत्र कला एवं शिल्प, संस्कृति और प्राकृतिक धरोहर पर केंद्रित विभिन्न जीवनशैलियों का एक अछूता खज़ाना है। पिछले कुछ दशकों में देश के पर्यटन उद्योग में तेजी से वृद्धि हुई है लेकिन ग्रामीण पर्यटन पर कभी भी पूरा ध्यान नहीं दिया गया है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में विदेशी पर्यटकों को लुभाने के लिए बहुत कुछ है। कला, शिल्प और संस्कृति में समृद्ध ग्रामीण भारत में एक पर्यटक आकर्षण का केंद्र बनने की पूरी सम्भावना है। यदि ग्रामीण पर्यटन की अवधारणा का बेहतर ढंग से प्रचार–प्रसार किया जाता है तो विकसित देशों के वासी, विशेष रूप से युवा पीढ़ी जिन्हें पारंपरिक जीवनशैली, कला और शिल्प लुभाते हैं, ग्रामीण भारत की ओर खिंचे चले आएंगे।

पर्यटन मंत्रालय ने देश में विकास के लिए ग्रामीण पर्यटन को आला पर्यटन क्षेत्रों में से एक के रूप में घोषित किया है। मंत्रालय ने ग्रामीण पर्यटन के लिए एक राष्ट्रीय कार्यनीति मसौदा और रोडमैप विकसित किया है जो पर्यटन के माध्यम से स्थानीय उत्पादों को विकसित करने और प्रोत्साहन देने पर केंद्रित है। परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में आय और रोज़गार का सृजन होता है जो स्थानीय समुदायों, युवाओं और महिलाओं को आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने में सक्षम बनाता है।

देश में ग्रामीण पर्यटन की क्षमता को देखते हुए पर्यटन मंत्रालय ने ग्रामीण सर्किट को स्वदेश दर्शन योजना के तहत विकास के लिए पंद्रह विषयगत सर्किटों में से एक के रूप में चुना है। इसके पीछे मंत्रालय की मंशा पर्यटन को ग्रामीण अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने के साधन के रूप में प्रयोग करना और घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को देश के ग्रामीण पहलुओं से रूबरू कराना है।

देश में स्वदेश दर्शन के ग्रामीण सर्किट विषय के तहत पर्यटन मंत्रालय द्वारा स्वीकृत परियोजनाओं में शामिल हैं–गांधी सर्किट का विकासः भितिहरवा चंद्रहिया–तुरकौलिया (बिहार) और मालानाड मालाबार क्रूज़ पर्यटन परियोजना (केरल) का विकास[9]।

पर्यटन मंत्रालय द्वारा भारत में ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए तैयार की गई राष्ट्रीय कार्यनीति और रोडमैप आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक प्रमुख पहल है। कार्यनीति दस्तावेज़ निम्नलिखित प्रमुख स्तंभों पर केंद्रित हैः

---

9 लोकसभा अतारांकित प्रश्न संख्या 4005 जिसमे श्री बी.बी. पाटिल ने ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए आवंटित धनराशि के बारे में पूछा था, का 28.03.2022 को श्री जी. किशन रेड्डी, पर्यटन मंत्री, भारत सरकार द्वारा उत्तर

- ग्रामीण पर्यटन के लिए आदर्श नीतियां और सर्वोत्तम कार्य प्रणालियां;
- ग्रामीण पर्यटन के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकियां और प्लेटफार्म;
- ग्रामीण पर्यटन के लिए कलस्टर विकसित करना;
- ग्रामीण पर्यटन के लिए विपणन सहायता;
- हितधारकों का क्षमता निर्माण;
- शासन और संस्थागत ढांचा।

पर्यटन मंत्रालय ने अब पर्यटन और गंतव्य केंद्रित दृष्टिकोण के साथ स्थायी व उत्तरदायी स्थलों को विकसित करने के लिए अपनी 'स्वदेश दर्शन' योजना में सुधार किया है।

पर्यटन विकास के लिए सरकार को ग्रामीण भारत में कुछ महत्वपूर्ण मापदंडों के आधार पर राज्यों की सहायता और मार्गदर्शन पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है:

- हवाई / रेल / सड़क कनेक्टिविटी–अंतिम छोर तक कनेक्टिविटी के लिए।
- **बुनियादी ढांचे का विकास**–भरोसेमंद फ्रिक्वेंसी पर आधुनिक बसें और स्टेशन, टैक्सी / साझा गतिशीलता–गाइड, पार्किंग, चार्जिंग / ईंधन भरने, साइन बोर्ड और सूचना कियोस्क का ऐप आधारित एकीकरण।
- किसी गंतव्य स्थान में धरोहर स्थलों की पहचान करना और उन्हें जोड़ना।
- अंग्रेज़ी और अन्य विदेशी भाषाओं में संकेतक जैसी सुविधाएं।
- **कर सम्बन्धी मुद्दे**–पर्यटक वाहनों के लिए एक भारत, एक कर प्रणाली पर्यटकों को कराधानों से बचाती है।
- ठहरने और कार्यस्थलों की सुविधाओं के अनुरूप रिसॉर्ट्स में होमस्टे और उच्च श्रेणी के ब्रांडेड होटल के कमरों को बढ़ावा देना।
- भारतीय और विदेशी पर्यटकों के लिए स्थानीय पर्यटन उत्पादों, कलाओं और शिल्पों को बढ़ावा देने के लिए कनेक्टिविटी प्रदान करना।
- प्रचार गतिविधियों के लिए डिजिटल मीडिया (सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, सोशल मैसेजिंग) पर ध्यान केंद्रित करना।

भारत में 'ग्रामीण पर्यटन' पर विशेष ध्यान देते हुए कुछ प्रमुख बिन्दुओं को रेखांकित करने की आवश्यकता है:

- नौकरियों का सृजन, नौकरियों की बरकरारी, और व्यापार के नए अवसर
- धरोहरों और स्मारकों पर ध्यान केंद्रित करना
- संस्कृति और त्यौहार
- प्रकृति और पारिस्थितिकी पर्यटन
- कृषि पर्यटन को बढ़ावा
- अवकाश पर्यटन को बढ़ावा
- समुद्री पर्यटन को बढ़ावा
- साहसिक पर्यटन को बढ़ावा
- स्वास्थ्य और आयुर्वेद

हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियां

व्हाइट सर्फ झरना, अंडमान

- जनजातीय भोजन और व्यंजन
- पक्षी अवलोकन और वन्य जीवन
- धर्म और पुराण कथाएं
- अछूती ग्रामीण संस्कृति और विरासत साधनों का सतत दोहन
- ग्रामीण पर्यटन स्थायी और ज़िम्मेवार पर्यटन का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

ग्रामीण पर्यटन विकास के लिए राष्ट्रीय योजना और रोडमैप में ग्रामीण पर्यटन को प्राथमिकता देने का प्रयास राष्ट्रीय स्तर पर किया जाता है। यह गरीबी, महिला सशक्तीकरण और ग्रामीण लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार जैसे मुद्दों से निपटने के लिए विविध कार्यक्रमों को एक साथ लाने का भी इरादा रखता है। यह योजना स्थायी और ज़िम्मेवार पर्यटन के महत्वपूर्ण विषय को केंद्र में रख कर बनाई गई है जो राज्य की नीतियों और सर्वोत्तम तौर–तरीकों, डिजिटल प्रौद्योगिकियों, और ग्रामीण पर्यटन के लिए ग्रामीण पर्यटन विकास समूहों, ग्रामीण पर्यटन के लिए विपणन सुगमता, हितधारकों का क्षमता निर्माण, शासन और संस्थागत ढांचे के लिए मानदंड निर्धारण की युक्तिपूर्ण नीतियों पर आधारित है।

उपभोक्ताओं के पास डिजिटल प्रौद्योगिकियों और प्लेटफार्मों तक वैश्विक पहुंच है जिससे सेवा प्रदाताओं को पर्यटन क्षेत्र के विकास और प्रतिस्पर्धी मानकों में सुधार करने में सुगमता होती है।

डिजिटल प्रौद्योगिकियां और प्लेटफॉर्म ग्रामीण उद्यमियों को अपनी बाज़ार पहुंच और वित्तीय समावेशन में सुधार के नए अवसर प्रदान करते हैं। ग्रामीण पर्यटन को विकसित करने के लिए डिजिटल उपकरणों का लाभ उठाने की समझ को बेहतर बनाने के प्रयास किए जाने चाहिए। इंटरनेट, क्लाउड कंप्यूटिंग, सोशल मीडिया और अन्य डिजिटल प्रौद्योगिकियों की क्षमता का उपयोग करके ग्रामीण व्यवसाय भौगोलिक अड़चनों और वैकल्पिक विपणन चैनलों की कमी को दूर कर सकते हैं।

देश की संस्कृति, रीति–रिवाज़, शिल्प, विरासत और कृषि परम्पराएं गांवों में रची–बसी हैं। पर्यटन के माध्यम से स्वदेशी उत्पादों का विकास और प्रचार–प्रसार ग्रामीण क्षेत्रों में आमदनी और रोज़गार पैदा कर सकता है और स्थानीय समुदायों, युवाओं और महिलाओं को सशक्त बना सकता है जिससे 'आत्मनिर्भर भारत' का लक्ष्य साकार होगा। यह ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन को कम करने, गरीबी की रोकथाम और सतत विकास को बढ़ावा देने में मदद करेगा।

भावी कार्ययोजना

ग्रामीण पर्यटन में अन्य आर्थिक गतिविधियों के साथ संगतता, सकल घरेलू उत्पाद और रोज़गार सृजन में योगदान के साथ–साथ स्थानीय आर्थिक विकास और सामाजिक परिवर्तन लाने की असीम क्षमता है। सरकार को भारत में ग्रामीण पर्यटन के महत्व को स्वीकार करते हुए हितधारकों को एक सतत अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराना चाहिए। पात्र व्यक्तियों को आवश्यक व्यावसायिक कौशल द्वारा विधिवत योग्यता प्रदान करने और सक्षम बनाने के उद्देश्य से व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए जिससे वे पर्यटन उद्योग में 'विरासत टूर गाइड' के रूप में नौकरी कर सकें। प्रमाणित गाइड लाइसेंस पर्यटकों की नज़र में पर्यटक गाइड की विश्वसनीयता को और अधिक बढ़ाएगा; देश में आने वाले पर्यटकों के समग्र अनुभव को बढ़ाएगा और पर्यटन उद्योग में रोज़गार के अवसर पैदा करेगा।

इसके अलावा, सरकार को ग्रामीण पर्यटन के विकास को प्रोत्साहित करने के लिए उचित वित्तपोषण करना चाहिए और किफायती बुनियादी ढांचा मुहैया कराना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन को तभी कायम रखा जा सकता है जब एक बहु–कार्य, बहु–हितधारक भागीदारी दृष्टिकोण पर आधारित व्यापक, समावेशी योजना रणनीति को अपनाया और कार्यान्वित किया जाए।

(अविनाश मिश्रा नीति आयोग में पर्यटन एवं संस्कृति और जलवायु परिवर्तन विभाग में एडवाइज़र हैं और मधुबंती दत्ता यंग प्रोफेशनल हैं।)

ई–मेलः **amishra-pc@gov.in**
dutta.madhubanti@gov.in

भारत के नयनाभिराम पर्यटन स्थल

–डा. जी कमला वर्धन राव

ग्रामीण पर्यटन सतत और ज़िम्मेदार पर्यटन को बढ़ावा देने का एक अवसर है। चूंकि देश की अधिकांश आबादी अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, ऐसे में स्थानीय समुदायों के साथ–साथ पर्यटकों को लाभान्वित करने वाले पारस्परिक रूप से समृद्ध अनुभव सृजित करने की प्रचुर संभावनाएं हैं।

भारत प्राचीन विरासत, संस्कृति, विविध परिदृश्य और विशाल जैव विविधता का एक बहुरूपदर्शक है। भारत उत्तर में शक्तिशाली हिमालय, दक्षिण में हिंद महासागर एवं अरब सागर की तटरेखा और पश्चिमी तथा पूर्वी तटों पर बंगाल की खाड़ी से घिरा हुआ है। असाधारण जलवायु परिस्थितियों और सहस्राब्दियों से जीवित और विकसित होने वाली संस्कृतियों के साथ विशेषाधिकार प्राप्त भारत की भूमि में विविधता में एकता का उत्सव मनाने वाले समुदायों का एक विस्तृत स्पेक्ट्रम है। भारत विविध पर्यटक आकर्षणों से संपन्न है। भारत के प्रत्येक राज्य/केंद्रशासित प्रदेश की अपनी विशिष्ट विशेषताएं हैं।

भारत का अनूठा भूगोल, इसकी कनेक्टिविटी और पर्याप्त बुनियादी ढांचे के साथ, जीवन के सभी क्षेत्रों के पर्यटकों के लिए गंतव्यों, अनुभवों और गतिविधियों का एक विशाल अवसर प्रदान करता है। पर्यटन स्थलों के अनुभव यहाँ के भीड़भाड़ भरे बाज़ारों में खरीदारी से लेकर संरक्षित क्षेत्रों के आसपास के शांत प्राकृतिक वातावरण में वापसी तक, रोमांचक साहसिक खेलों से लेकर समवर्ती योग कल्याण केंद्रों तक, आधुनिक महानगरों से लेकर ग्रामीण और आदिवासी कहानियों तक विस्तृत हैं। यह आनंद और खोज की यात्रा है।

भारतीय उपमहाद्वीप की प्राकृतिक सुंदरता सुंदर बर्फीली चोटियों, घने जंगलों, प्राचीन समुद्र तटों, शीशे की तरह साफ झीलों, सुनहरे रेगिस्तान और विशाल हरी घाटियों के साथ अद्वितीय है। एक तरफ लेह के ठंडे रेगिस्तान और दूसरी तरफ सूरज की किरणों से नहाते राजस्थान के रेगिस्तानी टीले इस परिदृश्य को और सम्मोहक बनाते हैं। उत्तर में बर्फ से ढके हिमालय से शुरू होकर राजस्थान के रेगिस्तानों को पार करते हुए, मध्य प्रदेश के हरे–भरे जंगलों से होते हुए और फिर केरल के विशाल बैकवॉटर में नौकायन, और आखिर में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के प्राचीन जल में गोता लगाते हुए यात्रा परिदृश्य साहसिक हाइलैंड्स, शांत मैदानों और तराई क्षेत्रों से भरा हुआ है। विभिन्न प्रकार की

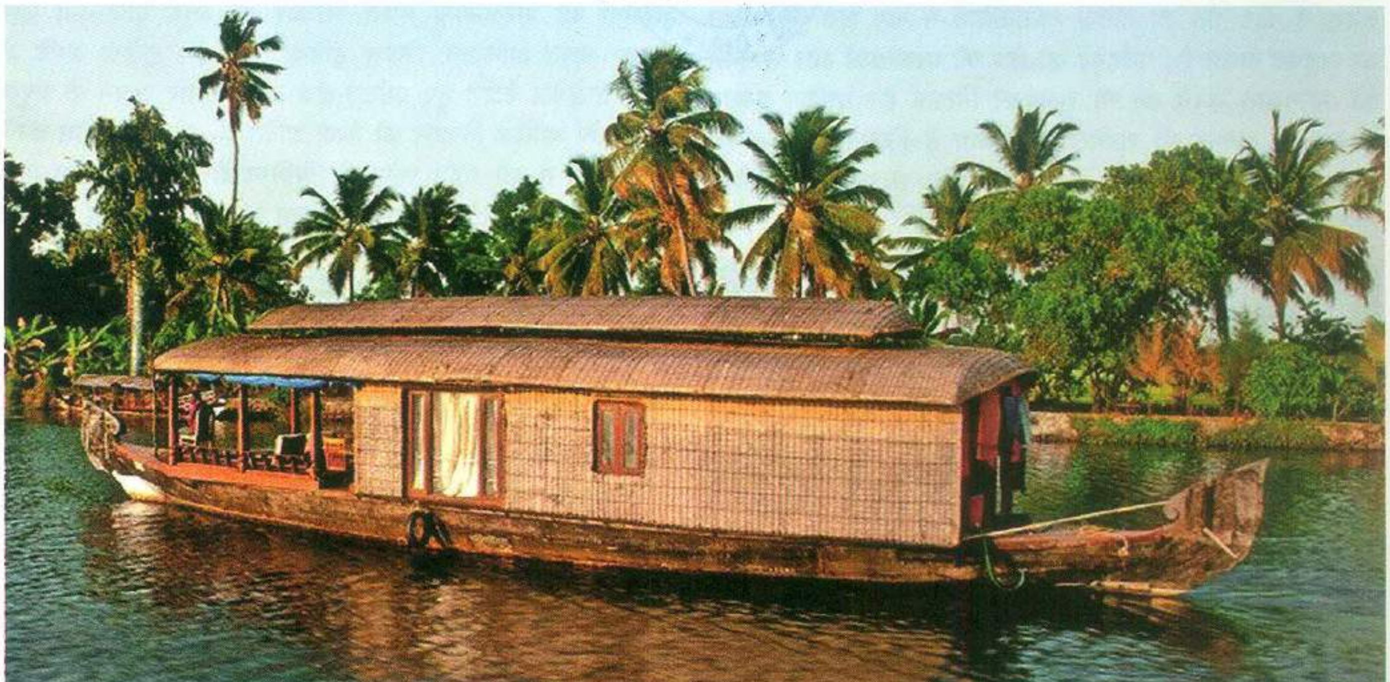

केरल बेकवॉटर्स

वनस्पतियों और जीवों से भरी–पूरी भारत भूमि कई राष्ट्रीय उद्यानों, वन्यजीव अभयारण्यों, बाघ अभयारण्यों और बायोस्फीयर रिज़र्व का भी घर है, जो पर्यटकों को आकर्षक वन्यजीवों को देखने का अवसर प्रदान करते हैं।

भारत को एक समग्र 360° गंतव्य के रूप में पेश करते हुए पर्यटन मंत्रालय विभिन्न अनुभवात्मक विषयों जैसे ग्रामीण, स्वास्थ्य, और अन्य सहित पाककला को भी प्रोत्साहन देता है। ग्रामीण पर्यटन पर्यटन मंत्रालय द्वारा प्रचारित आला पर्यटन उत्पादों में से एक है। घरेलू और विदेशी दोनों बाज़ारों में प्रचार मंत्रालय की आधिकारिक वेबसाइट www.incredibleindia.org और विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से यात्रियों के साथ बातचीत कर, गंतव्य के शुद्ध विपणन से परे, एक 'बंधन' बनाने के लिए किए जाते हैं। आधिकारिक वेबसाइट के माध्यम से ग्रामीण पर्यटन स्थलों सहित भारत के विभिन्न पर्यटन आकर्षणों की जानकारी साझा की जाती है। ग्रामीण पर्यटन सहित विभिन्न विषयों पर मंत्रालय के दो सोशल मीडिया हैंडल के माध्यम से भी प्रचार किया जाता है।

पर्यटन का वह रूप जो ग्रामीण स्थलों पर ग्रामीण जीवन, कला, संस्कृति और विरासत को प्रदर्शित करता है जिससे स्थानीय समुदाय को आर्थिक और सामाजिक रूप से लाभ होता है और साथ ही, पर्यटकों और स्थानीय लोगों के बीच अधिक समृद्ध पर्यटन अनुभव के लिए बातचीत को सक्षम बनाता है, इसे 'ग्रामीण पर्यटन' कहा जा सकता है। .

ग्रामीण पर्यटन ग्रामीण जीवनशैली में सक्रिय रूप से भाग लेने के इच्छुक आगंतुकों पर केंद्रित है। पर्यटक ग्रामीण स्थान की यात्रा करता है और गाँव की दैनिक गतिविधियों में भाग लेते हुए जीवन का अनुभव करता है। पर्यटकों को क्षेत्र की परम्पराओं और संस्कृति को आत्मसात करने का भी सुअवसर मिलता है। ग्रामीण पर्यटन में रात भर रुकना भी शामिल हो सकता है जिसमें आगंतुक को गाँव की अनूठी जीवनशैली को बहुत करीब से जानने का मौका मिलता है।

भारत में ग्रामीण पर्यटन की अपार संभावनाओं को स्वीकार करते हुए और राष्ट्रीय स्तर पर ग्रामीण पर्यटन को प्राथमिकता देते हुए, पर्यटन मंत्रालय ने देश में ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए एक राष्ट्रीय रणनीति और रोडमैप तैयार किया है। ग्रामीण पर्यटन की राष्ट्रीय रणनीति का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में आय और रोजगार के अवसर पैदा करना और स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाकर माननीय प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर भारत के विज़न को पूरा करना है। साथ ही, विभिन्न योजनाओं का अभिसरण कर गरीबी उन्मूलन और महिला सशक्तीकरण जैसे मुद्दों से निपट कर ग्रामीण लोगों की आर्थिक स्थिति को मज़बूत करना है।

ग्रामीण पर्यटन बहुआयामी है और इसमें कृषि पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, प्रकृति पर्यटन, साहसिक और पारिस्थितिकी पर्यटन शामिल हैं, जो सभी निकटता से जुड़े हुए हैं। साढ़े छह लाख से अधिक गांवों में से प्रत्येक के पास अपनी अनूठी कहानी, विरासत और संस्कृति है जिसे पर्यटकों के साथ साझा किया जा सकता है।

पर्यटन मंत्रालय अपनी विभिन्न योजनाओं और पहलों के माध्यम से पर्यटन हेतु बुनियादी ढांचे के विकास हेतु प्रयासरत है जिसमें वर्तमान में 'स्वदेश दर्शन' योजना और 'प्रसाद' योजना शामिल हैं।

भारत की समृद्ध सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक और प्राकृतिक विरासत देश में पर्यटन के विकास और रोज़गार सृजन के लिए एक बड़ी क्षमता प्रदान करती है। पर्यटकों को आकर्षित करने और स्थानीय समुदायों के लिए रोज़गार और आजीविका के अवसर पैदा करने के लिए विशिष्ट विषयों पर पर्यटन सर्किट विकसित करने की बहुत गुंजाइश और आवश्यकता है। इस लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। जो विषय और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के मामले में क्षेत्र के लिए 'अद्वितीय' हो, ऐसे विषयगत सर्किट और गंतव्यों के विकास के माध्यम से विषयगत पर्यटन सर्किट और गंतव्यों को इस तरह से विकसित करने की आवश्यकता है जो समुदायों का समर्थन करता हो, रोजगार प्रदान करता हो, और सामाजिक एकता को ज़िम्मेदारी से और स्थायी रूप से बढ़ावा देता हो।

देश में थीम–आधारित पर्यटक सर्किट के एकीकृत विकास के लिए भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय (एमओटी) ने 2014–15 में स्वदेश दर्शन योजना (केंद्रीय क्षेत्र योजना) शुरू की थी। इस योजना की परिकल्पना भारत सरकार की अन्य योजनाओं जैसे स्वच्छ भारत अभियान, स्किल इंडिया, मेक इन इंडिया आदि के साथ तालमेल बैठाते हुए पर्यटन क्षेत्र को रोज़गार सृजन के प्रमुख स्रोत और आर्थिक विकास की प्रेरक शक्ति के रूप में स्थापित करने के उद्देश्य से की गई। साथ ही, विभिन्न क्षेत्रों के साथ तालमेल बैठाते हुए पर्यटन क्षेत्र को अपनी क्षमता का एहसास करने में सक्षम बनाना है।

देश में ग्रामीण पर्यटन की क्षमता को पहचानते हुए, ग्रामीण सर्किट को 15 विषयगत सर्किटों में से एक के रूप में मान्यता दी गई है, जो पर्यटकों को एक विशेष अनुभव प्रदान करता है और देश के दूरदराज के हिस्सों में स्थित कम–ज्ञात गंतव्यों को विकसित करता है।

स्वदेश दर्शन योजना के तहत पहचाने गए 15 विषयों में, भारत के विभिन्न राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों में 76 परियोजनाएं पूरी कर ली गई हैं या प्रगति पर हैं, जिनमें 02 ग्रामीण सर्किट, 10 उत्तर–पूर्व सर्किट, 07 हिमालयी सर्किट, 10 तटीय सर्किट, 01 डेज़र्ट सर्किट शामिल हैं। 04 आदिवासी सर्किट, 06 इको सर्किट, 02 वन्यजीव सर्किट, और 10 हेरिटेज सर्किट भी शामिल हैं। इसके लिए कुल 3994.92 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं।

Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

पैंगोंग त्सो झील, लद्दाख

बिहार में भितिहारवा, चंद्रहिया और तुरकौलिया का विकास और केरल में मलनाड मालाबार क्रूज़ पर्यटन परियोजना ग्रामीण सर्किट थीम के तहत शुरू की गई है। इस परियोजना से स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी एवं समुदाय-आधारित विकास और गरीब-समर्थक पर्यटन दृष्टिकोण के माध्यम से रोज़गार पैदा करने में मदद मिलेगी।

भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय ने वर्ष 2014-15 में 'प्रसाद' योजना शुरू की थी। 'प्रसाद' योजना यानी 'तीर्थयात्रा कायाकल्प और आध्यात्मिक संवर्धन अभियान' धार्मिक पर्यटन अनुभव को समृद्ध करने के लिए पूरे भारत में तीर्थस्थलों की पहचान कर उन्हें विकसित करने पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य पूर्ण धार्मिक पर्यटन अनुभव प्रदान करने के लिए तीर्थस्थलों को प्राथमिकता, नियोजित और टिकाऊ तरीके से एकीकृत करना है। घरेलू पर्यटन का विकास बहुत हद तक तीर्थ पर्यटन पर निर्भर करता है।

ग्रामीण क्षेत्रों के निकट प्रमुख तीर्थ केंद्रों की उपस्थिति के कारण तीर्थयात्रा और ग्रामीण पर्यटन परस्पर जुड़े हुए हैं, जिससे आजीविका सृजन, रोज़गार सृजन और परिधीय बुनियादी ढांचे का विकास होता है, जिसका लाभ पर्यटकों और स्थानीय लोगों दोनों को समान रूप से मिलता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन सहित पर्यटन का विकास और ग्रामीण पर्यटन पार्कों की स्थापना प्राथमिक रूप से राज्य सरकारों/संघ राज्य क्षेत्र प्रशासन की ज़िम्मेदारी है। हालांकि, पर्यटन मंत्रालय ने ग्रामीण पर्यटन के लिए एक रणनीति और रोडमैप तैयार किया है, जो अन्य बातों के साथ-साथ पर्यटन के माध्यम से स्थानीय उत्पादों को विकसित करने और बढ़ावा देने पर केंद्रित है, परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में आय और रोज़गार सृजन के साथ-साथ स्थानीय समुदाय के युवा एवं महिलाएं सशक्त होंगी जिससे 'आत्मनिर्भर भारत' का स्वप्न साकार होगा।

भारत में ग्रामीण पर्यटन की अपार संभावनाओं को स्वीकार करते हुए और राष्ट्रीय स्तर पर ग्रामीण पर्यटन को प्राथमिकता देते हुए, पर्यटन मंत्रालय ने देश में ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए एक राष्ट्रीय रणनीति और रोडमैप तैयार किया है। ग्रामीण पर्यटन की राष्ट्रीय रणनीति का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में आय और रोजगार के अवसर पैदा करना और स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाकर माननीय प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर भारत के विज़न को पूरा करना है। साथ ही, विभिन्न योजनाओं का अभिसरण कर गरीबी उन्मूलन और महिला सशक्तीकरण जैसे मुद्दों से निपट कर ग्रामीण लोगों की आर्थिक स्थिति को मज़बूत करना है।

रणनीति में देश के विभिन्न हिस्सों में पर्यटन विकास की उच्च संभावना वाले गांवों के समूहों की पहचान करने का सुझाव दिया गया है। ग्रामीण पर्यटन के विषयों में स्थानीय शिल्प और व्यंजन, लोकसंगीत, शो, नाटक, कृषि पर्यटन, जैविक खेती, योग और ध्यान केंद्र, झीलें, आर्द्रभूमि और पर्यावरण क्षेत्र, ग्रामीण खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम, राष्ट्रीय उद्यान, वन्यजीव अभयारण्य, अद्वितीय जनजातीय संस्कृति, मौजूदा पर्यटन सर्किट से निकटता शामिल हो सकते हैं।

Education Academy Delhi Pvt. Ltd.

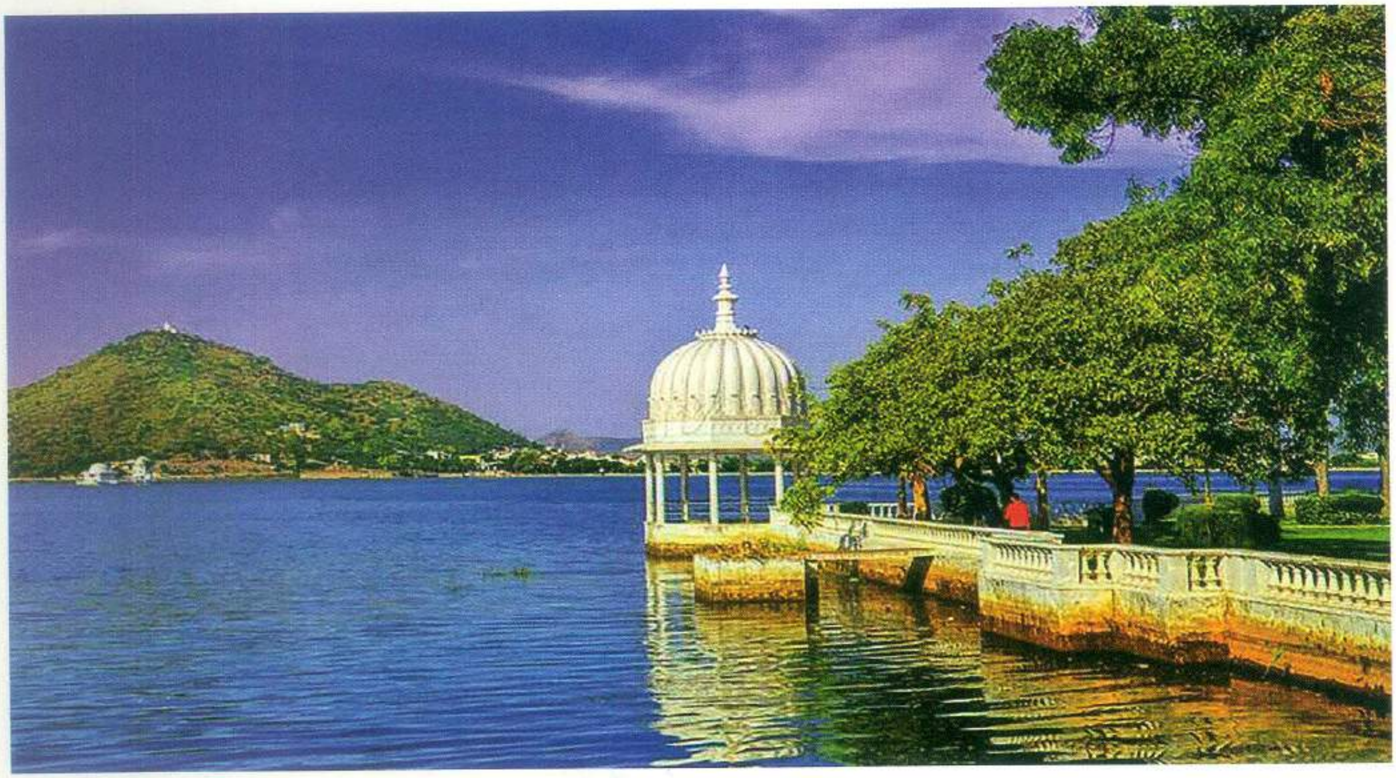

झीलों का शहर उदयपुर

ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए राष्ट्रीय रणनीति और रोडमैप 'सतत और ज़िम्मेदार पर्यटन' के एक व्यापक विषय पर आधारित है जिसे राज्य रैंकिंग और मूल्यांकन, ग्रामीण पर्यटन के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकियां, ग्रामीण पर्यटन समूहों का विकास, ग्रामीण पर्यटन के लिए विपणन सहायता, क्षमता निर्माण, शासन और संस्थागत सहायता जैसे छह रणनीतिक स्तंभों द्वारा समर्थित किया जाएगा।

ग्रामीण विकास मंत्रालय ने 21 फरवरी, 2016 को श्यामा प्रसाद मुखर्जी रुर्बन मिशन की शुरुआत की। रुर्बन मिशन आर्थिक, सामाजिक और बुनियादी सुविधाएं प्रदान करके चयनित ग्रामीण क्षेत्रों को समूह (क्लस्टर) के रूप में सामाजिक, आर्थिक और भौतिक रूप से टिकाऊ बनाने के प्रयास में लॉन्च किया गया ताकि देश सतत और संतुलित क्षेत्रीय विकास की ओर अग्रसर हो सके। इस नवोन्मेषी मिशन के तहत देश भर में विषयगत आर्थिक विकास बिंदुओं के साथ 300 रुर्बन क्लस्टर विकसित करने का प्रस्ताव किया गया। विकास का इष्टतम स्तर सुनिश्चित करने के लिए, इक्कीस घटकों को क्लस्टर विकास के लिए वांछनीय बताया गया है। पर्यटन को बढ़ावा इन इक्कीस घटकों में से एक है।

इस वर्ष राष्ट्रीय पर्यटन दिवस 25 जनवरी, 2022 को मनाया गया। इस बार का थीम "ग्रामीण और समुदाय केंद्रित पर्यटन" था। संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (यूएनडब्ल्यूटीओ) द्वारा हाल ही में तेलंगाना के पोचमपल्ली गांव को सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांव के रूप में मान्यता को देखते हुए यह थीम निर्धारित किया गया। यूएनडब्ल्यूटीओ द्वारा 'सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांव' चुनने की पहल ग्रामीण गांवों को सुरक्षा की दृष्टि से अधिक सक्षम बनाने में पर्यटन की भूमिका को आगे बढ़ाने के लिए की गई। साथ ही, उनके परिदृश्य, प्राकृतिक और सांस्कृतिक विविधता, उनके स्थानीय मूल्यों एवं गतिविधियों सहित स्थानीय व्यंजनो को भी संरक्षित रखा जा सके। सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांव 2021 हेतु यूएनडब्ल्यूटीओ प्रविष्टियों के लिए भारत ने कुछ अन्य गांवों को भी नामित किया था जिसमें मेघालय में कोंगथोंग, छत्तीसगढ़ में चित्रकूट और गुजरात में केवडी, नगालैंड में खोनोमा और केरल में कुमारकोम शामिल हैं। एक अद्वितीय पर्यटन उत्पाद के रूप में 'ग्रामीण पर्यटन' के महत्व को देखते हुए, मंत्रालय ने प्रोमोशनल क्रिएटिव तैयार किए थे जिनमें यूएनडब्ल्यूटीओ में भारत की सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांव हेतु प्रविष्टियों को प्रमुखता से दिखाया गया था।

ग्रामीण पर्यटन सतत और ज़िम्मेदार पर्यटन को बढ़ावा देने का एक अवसर है। चूंकि देश की अधिकांश आबादी अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, ऐसे में स्थानीय समुदायों के साथ–साथ पर्यटकों को लाभान्वित करने वाले पारस्परिक रूप से समृद्ध अनुभव सृजित करने की प्रचुर संभावनाएं हैं।

(लेखक भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय में महानिदेशक (पर्यटन) हैं। लेख में व्यक्त विचार निजी हैं।)

ई–मेलः **dg-tourism@nic.in**

*PRASAD: Pilgrimage Rejuvenation & Spiritual Augmentation Drive

ग्रामीण पर्यटन: संस्कृति और विरासत का झरोखा

–हेमंत मेनन

ग्रामीण भारत के पास बाहरी दुनिया के लिए बहुत कुछ है। कला, शिल्प, धर्म, परंपरा और संस्कृति के लिहाज से समृद्ध भारतीय गांवों में लोकप्रिय पर्यटन केंद्र बनने की ज़बर्दस्त संभावनाएं हैं। ग्रामीण पर्यटन से गांवों की अर्थव्यवस्था मज़बूत होने के साथ ही उनमें रोज़गार के अवसर पैदा होते हैं और अवसंरचना विकास को बल मिलता है। यह स्थानीय कलाओं और शिल्पों का पुनरूद्धार करने और व्यावहारिक पारंपरिक व्यवसायों को खत्म होने से रोकने में भी सक्षम है। भारत की राष्ट्रीय पर्यटन नीति में सांस्कृतिक और प्राकृतिक संपदा से भरपूर गांवों में पर्यटन पर विशेष ध्यान देने की बात कही गई है। ग्रामीण पर्यटन अपनी प्रकृति में लोकप्रिय और वैकल्पिक दोनों ही हो सकता है। भारत में ग्रामीण पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं।

जनसांख्यिकीय विरासत की विविधता तथा जीवनशैली और मानवीय मूल्यों की भिन्नता भारतीय संस्कृति की विशेषताएं हैं। वर्तमान भारत की संस्कृति बरसों के सांस्कृतिक समागम और संस्कृतियों के सम्मिलन का परिणाम है। भारत की ज़्यादातर हिस्सा गांवों का होने के नाते ग्रामीण पर्यटन से काफी आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक लाभ मिल सकते हैं। मौजूदा समय में ग्रामीण पर्यटन के दायरे में जिन चीजों को रखा जाता है वे विभिन्न रूपों में पहले से ही मौजूद रही हैं। ग्रामीण पर्यटन का सतत विकास भारत को समृद्ध और विविधतापूर्ण सांस्कृतिक विरासत वाले देशों की सूची में प्रमुख स्थान दिलाने के लिए महत्वपूर्ण है। ग्रामीण पर्यटन उद्योग का तेजी से विकास हो तो इससे भारत की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलने के साथ ही देश के गांवों की भव्यता के जादू का अनुभव करने की सैलानियों की ललक भी बढ़ेगी।

भारतीय सभ्यता के विकास में विविधतापूर्ण और मिश्रित संस्कृति का योगदान

भारत को हमेशा से अपनी समृद्ध और विविधतापूर्ण संस्कृति पर गर्व रहा है। देश ने हमेशा ही अपनी संस्कृति का उपयोग मानवता की बेहतरी के लिए किया है। जनसांख्यिकीय विरासत की विविधता तथा जीवनशैली और मानवीय मूल्यों की भिन्नता भारतीय संस्कृति की विशेषताएं हैं। हमारे देश की 68.84 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। वर्ष 2011 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार लगभग 45 करोड़ भारतीय देश के अंदर ही एक स्थान से

हरिद्वार में गंगा आरती का दृश्य

दलखाई लोक नृत्य, उड़ीसा

जाकर दूसरी जगह पर बसे हैं। स्वदेश में ही प्रवास करने वालों का 15.6 प्रतिशत हिस्सा यानी 7.8 करोड़ भारतीय गांवों से जाकर शहरी क्षेत्रों में बस गए हैं। यह तथ्य पहली नज़र में बहुत गंभीर नहीं लग सकता है। लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि भारत विश्व की दूसरी सबसे बड़ी आबादी वाला देश है। भारत में देश के अंदर ही प्रवास करने वालों की संख्या विश्व की तीसरी सबसे बड़ी जनसंख्या वाले देश अमेरिका की आबादी से अधिक है।

भारत में संस्कृतियों के संगम और देश की सांस्कृतिक विविधता पर हम सब को गर्व है। यह सांस्कृतिक संगम प्रवासन के फलस्वरूप समायोजन, सम्मिलन और संक्रमण का परिणाम है। इससे नई सांस्कृतिक पहचानों के निर्माण के साथ ही प्रवासी जनसमूह का उदय होता है। संस्कृति के उदय का सीधा संबंध मानवता की प्रगति से है। वर्तमान भारत की संस्कृति वर्षों के सांस्कृतिक रूपांतरण और संस्कृतियों के सम्मिलन का परिणाम है। हम विभिन्न इतिहासों के प्रलेखन के क्रम में अपनी उस विरासत के बारे में निर्णायक स्पष्टता तक पहुंचते हैं जिसका किसी भी कीमत पर संरक्षण किया जाना चाहिए। इसके कई तौर–तरीके हो सकते हैं। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण तरीका यह है कि हम अपनी संस्कृति के उद्‌गम की ओर लौटें। भारत का ज़्यादातर हिस्सा गांवों का होने के नाते ग्रामीण पर्यटन से काफी आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक लाभ मिल सकते हैं। इसलिए ग्रामीण पर्यटन की अवधारणा का संस्कृति और विरासत के नज़रिए से विश्लेषण करने की गंभीर आवश्यकता है।

भारत को विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक माना जाता है। मानवता अपनी शुरुआत से अब तक विकास के कई चरणों से गुज़री है। मानवता को दिशा देने में धर्म की प्रमुख भूमिका रही है। महत्वपूर्ण सामाजिक रचना के रूप में धर्म का लगातार विकास हुआ है। हज़ारों साल पहले शुरू हुई तीर्थयात्राएं पर्यटन के शुरुआती स्वरूप हैं। मौजूदा समय में भी भारत में बड़ी संख्या में पर्यटन से संबंधित घटनाएं तीर्थयात्राओं के इर्दगिर्द ही रहती हैं। धार्मिक तत्वों से आर्थिक और सांस्कृतिक पहलुओं के मेल की बदौलत तीर्थयात्राएं मौजूदा समय के पर्यटन में तब्दील हो गईं। मंदिर कला और संस्कृति के उदय के केंद्र बन गए। वर्तमान के संगीत और नृत्य के अनेक रूपों का उदय मंदिर परंपराओं से हुआ है। शहरों के निवासी अपनी भागदौड़ भरी ज़िंदगी के बीच पुरानी यादों को ताज़ा करने के मकसद से ग्रामीण क्षेत्रों में सांस्कृतिक उत्सवों में भाग लेने के लिए जाते हैं। लेकिन ऐसे सैलानियों की संख्या बहुत ज़्यादा या उल्लेखनीय नहीं है। अध्ययन बताते हैं कि पीढ़ियां बदलने के साथ ही दिलचस्पी के अभाव में ऐसे सैलानियों की संख्या में गिरावट आ रही है। ग्रामीण उत्सवों को लेकर उत्साह में कमी आने के कारणों में सांस्कृतिक पहचानों में तब्दीली और ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन से संबंधित विकास का अभाव शामिल है। संस्कृति हमें अपनी जड़ों की ओर लौटने में सहायता करती है। इसके अलावा, वह बाहरी दुनिया को भी संस्कृति को उसके उद्‌गम पर आकर देखने के लिए आकर्षित करती है।

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. * Delhi *

मौजूदा समय में भारतीय ग्रामीण पर्यटन

ग्रामीण भारत के पास बाहरी दुनिया के लिए बहुत कुछ है। कला, शिल्प, धर्म, परंपरा और संस्कृति के लिहाज से समृद्ध भारतीय गांवों में लोकप्रिय पर्यटन केंद्र बनने की ज़बर्दस्त संभावनाएं हैं। ग्रामीण पर्यटन से गांवों की अर्थव्यवस्था मज़बूत होने के साथ ही उनमें रोज़गार के अवसर पैदा होते हैं और अवसंरचना विकास को बल मिलता है। यह स्थानीय कलाओं और शिल्पों का पुनरोद्धार करने और व्यावहारिक पारंपरिक पेशों को खत्म होने से रोकने में भी सक्षम है। भारत की संस्कृति और विरासत के संदर्भ में यह बहुत महत्वपूर्ण है।

भारत की राष्ट्रीय पर्यटन नीति में सांस्कृतिक और प्राकृतिक संपदा से भरपूर गांवों में पर्यटन पर विशेष ध्यान देने की बात कही गई है। सैलानियों में अनुभवात्मक पर्यटन की संस्कृति के विकास के परिणामस्वरूप भी ग्रामीण पर्यटन की लोकप्रियता बढ़ रही है। ग्रामीण पर्यटन अपनी प्रकृति में लोकप्रिय और वैकल्पिक दोनों ही

> वर्तमान भारत की संस्कृति वर्षों के सांस्कृतिक रूपांतरण और संस्कृतियों के सम्मिलन का परिणाम है। हम विभिन्न इतिहासों के प्रलेखन के क्रम में अपनी उस विरासत के बारे में निर्णायक स्पष्टता तक पहुंचते हैं जिसका किसी भी कीमत पर संरक्षण किया जाना चाहिए। इसके कई तौर–तरीके हो सकते हैं। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण तरीका यह है कि हम अपनी संस्कृति के उद्‌गम की ओर लौटें। भारत का ज़्यादातर हिस्सा गांवों का होने के नाते ग्रामीण पर्यटन से काफी आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक लाभ मिल सकते हैं। इसलिए ग्रामीण पर्यटन की अवधारणा का संस्कृति और विरासत के नज़रिए से विश्लेषण करने की गंभीर आवश्यकता है।

हो सकता है। भारत में ग्रामीण पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं। लेकिन समझ में कमी, निवेश के अभाव, पुरानी प्रबंधन प्रक्रियाओं तथा परिवहन और संचार की खराब अवसंरचना जैसे कारणों से इसका विकास अवरुद्ध रहा है। इसके अलावा, ग्रामीण पर्यटन को लेकर अनेक पूर्वाग्रह भी रहे हैं। एक भय सांस्कृतिक क्षय से ग्रामीण जीवन की रक्षा करने वाले सामाजिक अवरोधों में घुसपैठ का भय है। मेज़बान और मेहमान संस्कृतियों के बीच टकराव की आशंका इस भय को बढ़ाती है। ग्रामीणों को लगता है कि शहरी लोगों के आने से उनकी संस्कृति का शहरीकरण हो जाएगा। इसलिए वे बाहरी दुनिया के लिए अपने स्थलों और समुदायों को खोलने में सहयोग करने से हिचकिचाते हैं।

हकीकत यह है कि ग्रामीण पर्यटन के विकास से समाज को अनेक लाभ हैं। इससे सार्वजनिक परिवहन का रखरखाव और विकास होता है। परिणामस्वरूप सामाजिक संपर्क में वृद्धि होने से सांस्कृतिक आदान–प्रदान के अवसर पैदा होते हैं। इसके साथ ही जागरूकता बढ़ती है तथा स्थानीय रिवाज़, शिल्प और सांस्कृतिक पहचान मज़बूत होती हैं। ग्रामीण पर्यटन से स्थानीय स्तर पर आमदनी के अनेक स्रोत पैदा होते हैं। इससे ग्रामीण युवाओं को बड़े शहरों की ओर पलायन नहीं करने के लिए मनाने में मदद मिलती है। साथ ही, अवसंरचना, स्वास्थ्य और स्वच्छता में सुधार का लाभ भी ग्रामीणों को मिलता है। नतीजतन, ग्रामीण समुदायों के जीवन–स्तर में सुधार आने के साथ ही एक आदर्श 'ग्रामीण–शहरी' समुदाय का जन्म भी होता है।

ग्रामीण पर्यटन की अवधारणा कोई नयी नहीं है। मौजूदा समय में ग्रामीण पर्यटन के दायरे में जिन चीज़ों को रखा जाता है, वे विभिन्न रूपों में पहले से ही मौजूद रही हैं। हुआ सिर्फ इतना है कि अब हमने इसको एक नाम दे दिया। दरअसल, ग्रामीण पर्यटन की अवधारणा 2002 में शुरू हुई थी। दसवीं पंचवर्षीय योजना (2002–07) में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) ने योजना आयोग के जरिए भारत में ग्रामीण पर्यटन को विकसित करने के लिए एक प्रायोगिक परियोजना शुरू की। ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान ग्रामीण पर्यटन मुख्य प्राथमिकताओं में से एक रहा। इस काल में 69 ग्रामीण पर्यटन परियोजनाओं को मंज़ूरी दी गई। पर्यटन पर कार्यसमूह (2011) की रिपोर्ट के अनुसार 12वीं पंचवर्षीय योजना में 770 करोड़ रुपये के सालाना व्यय से देश भर में 70 ग्रामीण पर्यटन स्थल समूहों के विकास का कार्यक्रम बनाया गया। लेकिन जैसाकि ऊपर कहा जा चुका है, अवधारणा के तौर पर औपचारिक रूप दिए जाने से काफी समय पहले से ही ग्रामीण पर्यटन अनेक स्वरूपों में मौजूद था। आगे हम भारत में ग्रामीण पर्यटन की विकास गाथा का विश्लेषण करेंगे।

राष्ट्रीय पर्यटन नीति की सांस्कृतिक व्याख्या

भारत सरकार ने अपनी पहली पर्यटन नीति की घोषणा नवंबर, 1982 में की। इसका उद्देश्य आर्थिक विकास और सामाजिक एकता के साधन के रूप में संवहनीय पर्यटन को बढ़ावा देना था। इस नीति के माध्यम से विदेशों में भारत की छवि को समृद्ध विरासत, गतिशील वर्तमान और संभावनापूर्ण भविष्य वाले देश के रूप में स्थापित किया जाना था। यह 1980 में शुरू की गई छठी पंचवर्षीय योजना का समय था। इस योजना में आतिथ्य क्षेत्र में निवेश सुनिश्चित करने पर ज़ोर दिया गया। देश में पर्यटन को मज़बूत करने के कदम उठाने के अलावा यह सुनिश्चित करना भी महत्वपूर्ण था कि विकास संवहनीय होगा और इन कदमों से पर्यावरण और पारम्परिक परिवेश पर विपरीत प्रभाव नहीं पड़ेगा।

पर्यटन के प्रति जागरूकता बढ़ाने के पहले कदम के तौर पर शिक्षा क्षेत्र में पारम्परिक कला और संस्कृति से संबंधित विषयों पर ज़ोर दिया गया। इस तरह देश में 'शिक्षा पर्यटन' की बुनियाद पड़ी। इससे पहले 1963 में पर्यटन पर तदर्थ समिति ने अपनी विस्तृत रिपोर्ट में तंजौर, पेरियार नदी के तटवर्ती इलाके, बनारस, मांडू, दिल्ली, बंबई, हैदराबाद, मैसूर और मद्रास जैसे प्रमुख स्थलों की पृष्ठभूमि और इनसे संबंधित लोक आख्यानों को समझने की आवश्यकता को स्वीकार किया। वर्ष 1992 में पर्यटन पर एक

अमरकंटक, मध्य प्रदेश

संस्कृति मंत्रालय ने 2017 में सांस्कृतिक मानचित्रण पर राष्ट्रीय मिशन शुरू किया। इसके तहत राष्ट्रव्यापी सांस्कृतिक जागरूकता कार्यक्रम 'हमारी संस्कृति, हमारी पहचान' अभियान के जरिए भारत का 'सांस्कृतिक मानचित्रण' किया जा रहा है। यह अभियान सभी कला स्वरूपों और कलाकारों के विकास के लिए चलाया गया है। यह नीति निर्माताओं को भविष्य में तेज़ मगर तथ्य आधारित निर्णय लेने में मदद करेगा।

राष्ट्रीय कार्ययोजना की शुरुआत की गई। इसमें पर्यटन को इस तरह विकसित करने पर ज़ोर दिया गया कि भारत की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और विरासत के सभी स्वरूप संरक्षित रहें। इसमें कला और संस्कृति को सहायता देने की बात कही गई। पर्यावरण का संरक्षण और संवर्धन इस कार्ययोजना के तहत पर्यटन विकास का अभिन्न अंग था। बड़ी संख्या में वैसी हवेलियों को होटल में तब्दील करने का प्रस्ताव रखा गया जो जर्जर हालत में थीं। ऐसा उनकी मूल पहचान को शत–प्रतिशत सुरक्षित रखते हुए किया गया ताकि राष्ट्रीय विरासत के संरक्षण में मदद मिले। सूरजकुंड के शिल्प मेले और उदयपुर के शिल्पग्राम को बेहतरीन सफलता मिली। इसे देखते हुए ऐसे अन्य स्थलों की पहचान करने की सिफरिश की गई जहां क्षेत्रीय पारम्परिक कला और शिल्प को संरक्षित और संवर्धित किया जा सकता हो। पुष्कर मेला, सोनपुर पशु मेला और अलप्पी नौका दौड़ जैसे पारम्परिक आयोजनों के विकास के लिए सरकार वित्तीय सहायता दी गई। यह इस तरह के कार्यक्रमों के ग्रामीण पर्यटन का हिस्सा बनने की मिसाल है।

जैसा कि पहले भी कहा गया है, भारत में अवधारणा के रूप में ग्रामीण पर्यटन की शुरुआत 2002 में राष्ट्रीय पर्यटन नीति के साथ हुई। यह नीति दसवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान लागू की गई। इस नीति के अंतर्गत जिन सात प्रमुख क्षेत्रों की पहचान की गई, वे हैं – स्वागत, सूचना, सुविधा, सुरक्षा, सहयोग, संरचना और सफाई। इसमें सांस्कृतिक पर्यटन के विस्तार और ग्रामीण पर्यटन के सक्रिय संवर्धन पर ज़ोर दिया गया। नीति में स्वदेशी पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए उत्तराखंड (तत्कालीन उत्तरांचल), राजस्थान, लद्दाख, कच्छ, छत्तीसगढ़, पूर्वोत्तरी राज्यों तथा बागान क्षेत्रों को चुना गया। इसके तहत प्रमुख सांस्कृतिक स्थलों का एक राष्ट्रीय रजिस्टर तैयार किया जाना था। नीति में 'अतुल्य भारत' (इंक्रेडिबल इंडिया) के नारे को अपनाया गया ताकि 'मलेशियाः ट्रूली एशिया' और 'अमेज़िंग थाईलैंड' की तर्ज पर भारत के लिए एक अंतरराष्ट्रीय ब्रांड को खड़ा किया जा सके।

पर्यटन मंत्रालय ने स्थानीय निवासियों को विदेशी आगंतुकों के साथ किए जाने वाले उचित बर्ताव और शिष्टाचार के बारे में बताने के लिए 2008 में 'अतिथि देवो भव' अभियान चलाया। तैत्तिरीय उपनिषद की शिक्षावली से लिए गए इस वाक्यांश का अर्थ है – मेहमान देवता होता है। इस अभियान के दो उद्देश्य थे। पहला, यह सुनिश्चित करना कि ग्रामीणों को भारत की बेशकीमती विरासत और संस्कृति के संरक्षण की आवश्यकता के बारे में पता हो। वे यात्रियों और पर्यटकों का आतिथ्य और गर्मजोशी से स्वागत करते हुए घर में स्वच्छता बनाए रखें। अभियान का दूसरा और ज्यादा महत्वपूर्ण उद्देश्य यह था कि पर्यटकों के प्रति असंतोष और खासतौर से विदेशी यात्रियों से धन ऐंठने जैसे नकारात्मक और गैर–दोस्ताना व्यवहारों को खत्म किया जाए। इस तरह का बर्ताव पर्यटन के लिए नुकसानदेह साबित होता है। ग्रामीणों को पर्यटकों का स्वागत उत्साह के साथ करते हुए उनसे गर्मजोशी और मैत्रीपूर्ण ढंग से पेश आना चाहिए। वर्ष 2002 की राष्ट्रीय पर्यटन नीति ने इस क्षेत्र से जुड़े लगभग हर पहलू को छुआ लेकिन इसके क्रियान्वयन की कोई कार्ययोजना नहीं थी। इसके विपरीत 1982 की राष्ट्रीय पर्यटन नीति को लागू करने के लिए 1992 में एक कार्ययोजना शुरू की गई थी।

राष्ट्रीय पर्यटन नीति 2015 के मसौदे के साथ ही उसी साल 'स्वदेश दर्शन' योजना शुरू की गई। इस योजना के तहत 15 विषय आधारित सर्किटों की पहचान की गई जो इस प्रकार हैं: बौद्ध, तटीय, मरूभूमि, पर्यावरण, विरासत, हिमालय, कृष्ण, पूर्वोत्तर क्षेत्र, रामायण, ग्रामीण, आध्यात्मिक, सूफी, तीर्थंकर, जनजातीय और वन्यजीव सर्किट।

संस्कृति मंत्रालय ने 2017 में सांस्कृतिक मानचित्रण पर राष्ट्रीय मिशन शुरू किया। इसके तहत राष्ट्रव्यापी सांस्कृतिक जागरूकता कार्यक्रम 'हमारी संस्कृति, हमारी पहचान' अभियान के जरिए भारत का 'सांस्कृतिक मानचित्रण' किया जा रहा है। यह अभियान सभी कला स्वरूपों और कलाकारों के विकास के लिए चलाया गया है। यह नीति निर्माताओं को भविष्य में तेज़ मगर तथ्य आधारित निर्णय लेने में मदद करेगा।

Elite Academy For Education Training Pvt. Ltd. Delhi

सरकार ने 2020 में 'देखो अपना देश' योजना शुरू की। इसका उद्देश्य भारतीयों को अपने देश के हर कोने की यात्रा के लिए प्रोत्साहित करना है। इस योजना को बढ़ावा देने और 'सबके लिए पर्यटन' के संदेश के प्रसार के मकसद से 'पर्यटन पर्व' आयोजित किया गया। पर्यटन मंत्रालय ने पिछले साल जून में भारत में ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए राष्ट्रीय रणनीति और रोडमैप का मसौदा जारी किया। इसमें ग्रामीण पर्यटन की पहचान 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्प को पूरा करने के साधन के रूप में की गई है। यह रणनीति ग्रामीण पर्यटन को राष्ट्रीय स्तर पर तरजीह देती है। यह छह रणनीतिक स्तंभों पर आधारित है। इन स्तंभों में सरकारी नीतियों और सर्वश्रेष्ठ तौरतरीकों के मापदंड तैयार करना तथा एक शासकीय और सांस्थानिक ढांचे का निर्माण शामिल है। इस मसौदे में स्थानीय समुदायों को प्रमुख हितधारक मानते हुए उन्हें गैर–सरकारी संगठनों समेत अन्य हितधारकों की मदद से जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है। ग्रामीण पर्यटन के लिए गांवों के समूह बनाने की आवश्यकता महसूस की गई है। ये रुर्बन (ग्रामीण–शहरी) समूह गांवों को अपनी गतिविधियां साझा तौर पर संचालित करने में मदद करेंगे।

असम में बिहू त्यौहार साल में तीन बार मनाया जाता है। बोहाग बिहू, कटी बिहू और रोंगाली बिहू के नाम से जाने जाना वाला ये त्योहार फसलों के काटने और बोने से जुड़ा है।

ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने में शिक्षा की उत्प्रेरक भूमिका

राष्ट्रीय पर्यटन नीति 2021 के मसौदे को नवंबर 2021 में सार्वजनिक किया गया। इसमें सहयोग और तालमेल के क्षेत्रों की पहचान के लिए लगभग 20 मंत्रालयों और विभागों को शामिल किया गया है। पर्यटन मंत्रालय संस्कृति और विरासत को ग्रामीण पर्यटन के ज़रिए बढ़ावा देने के मकसद से गौर करने के क्षेत्रों की पहचान के लिए ग्रामीण विकास और संस्कृति मंत्रालयों तथा स्कूली और उच्चतर शिक्षा विभागों के साथ प्रभावी तालमेल की योजना बना रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अनुभवात्मक शिक्षण और व्यावसायिक प्रशिक्षण की ओर एक मज़बूत कदम है। छात्र हमारे देश का भविष्य हैं। नयी शिक्षा नीति उन्हें हमारी सांस्कृतिक विरासत के प्रोत्साहन और संरक्षण की गंभीर आवश्यकता के प्रति खुद को और अपने आसपास के व्यक्तियों को जागरूक बनाने के लिए प्रोत्साहित करेगी। इससे शिक्षा पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा जो ग्रामीण पर्यटन में एक उपधारा के रूप में शामिल होगा।

पर्यटन नीति 2021 के मसौदे में 'विशिष्ट ग्राम जीवन अनुभव' पैकेज का ज़िक्र किया गया है जिससे ग्रामीण भारत में पारंपरिक गतिविधियों को पुनर्जीवित करने में मदद मिलेगी। मसौदे में देश के विरासत स्थलों और स्मारकों के इर्द–गिर्द अनुभवों का दायरा बनाने की बात कही गई है। इन विरासत स्थलों और स्मारकों में अनुवाद, स्मृति विक्रय केंद्रों, रेस्तरां और अन्य सुविधाओं को स्थापित करने से पर्यटकों का संपूर्ण अनुभव बेहतर बनेगा। देश की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत की बहाली और पर्यटन उत्पादों में उनके रूपांतरण के लिए सरकार, निजी क्षेत्र और जनता के बीच मज़बूत सहयोग से, हमारी मूर्त परम्पराओं के साथ–साथ ही अमूर्त विरासतों के संरक्षण में सहायता मिलेगी। इस संबंध में युवाओं के बीच भारतीय शास्त्रीय संगीत और संस्कृति के प्रोत्साहन के लिए काम करने वाली संस्था स्पिक मैके जैसे गैर–सरकारी संगठनों का योगदान महत्वपूर्ण है। वे देश की मूर्त और अमूर्त संस्कृति और विरासत के साथ ही लोक कलाओं, नृत्य स्वरूपों, थिएटर, शिल्पों और पर्यटन स्थलों के संवर्धन और संरक्षण में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं।

ग्रामीण पर्यटन का सतत विकास भारत को समृद्ध और विविधतापूर्ण सांस्कृतिक विरासत वाले देशों की सूची में प्रमुख स्थान दिलाने के लिए महत्वपूर्ण है। ग्रामीण पर्यटन उद्योग का तेजी से विकास हो तो इससे भारत की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलने के साथ ही देश की ग्रामीण भव्यता के जादू का अनुभव करने की सैलानियों की ललक भी बढ़ेगी। अपनी जीवंत संस्कृति के संरक्षक के तौर पर हम सभी को ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के सभी प्रयासों में सहयोग करने और सक्रिय भागीदारी का संकल्प करने की ज़रूरत है। समूचे विश्व के साथ ही हमें भी अपनी विरासत की सराहना और प्रशंसा करनी चाहिए।

(लेखक स्पिक मैके के राष्ट्रीय समन्वयक हैं। लेख में व्यक्त विचार निजी हैं।)

ई–मेल : **hemanth@spicmacay.com**

Elite Academy For Education & Training Pvt Ltd Delhi

कृषि पर्यटन में असीम संभावनाएं

–सौरभ शर्मा

कृषि पर्यटन संकल्पना को "आओ एक फल खाओ, एक फूल सूंघो, खेतो में भागो, पौधों से बातें करो और ग्रामीण भारत में खो जाओ" के रूप में स्वीकार करना होगा।' भारत में प्राकृतिक परिस्थितियों और विभिन्न प्रकार के कृषि उत्पादों के साथ–साथ ग्रामीण परंपराओं, त्योहारों की विविधता के कारण कृषि पर्यटन के विकास की काफी संभावनाएं हैं। देश की आबादी का एक बड़ा हिस्सा शहरी क्षेत्रों में रहता है जो ग्रामीण जीवन का आनंद लेना चाहता है और ग्रामीण जीवन के बारे में जानना चाहता है। देश में कृषि पर्यटन व्यवसाय विकसित करने का यह एक अच्छा अवसर है।

यूं तो 'कृषि पर्यटन' पर्यटन उद्योग की नवीनतम अवधारणा है जोकि कृषकों के खेतों से शुरू होती है तथा यह पर्यटकों को ग्रामीण जीवन के वास्तविक और प्रमाणिक अनुभव प्राप्त करने हेतु स्थानीय ग्रामीण व घरेलू भोजन का स्वाद लेने और यात्रा के दौरान विभिन्न प्रकार के कृषि कार्यों से परिचित होने का अवसर प्रदान करती है। पर्यटक विशुद्ध रूप से ग्रामीण एवं प्राकृतिक वातावरण में विश्राम करते हैं। चूंकि शहरी जीवन दिन–पर–दिन अधिक व्यस्त एवं जटिल होता जा रहा है। गैर–सरकारी संस्थान रोज़गार के अच्छे अवसर तो उत्पन्न करने में सहायक हुए हैं परन्तु उसके साथ ही तनाव का स्तर और अनवरत रुप से कार्य करने की जटिलता को भी बढ़ाया है।

कृषि पर्यटन की व्यवस्था में व्यक्ति अपने परिवार के साथ कहीं दूर के पहाड़ी इलाकों अथवा दूसरे महानगरों में न जाकर अपने ही शहर के निकट के गॉवों में जाकर अपने तनाव को न केवल कम कर सकता है बल्कि स्वयं व अपने बच्चों के लिए कृषि से संबंधित ज्ञान का भी अर्जन कर सकता है। अक्सर देखा गया है कि शहरों में लगातार रहने के कारण बच्चों के साथ–साथ व्यस्कों को भी ग्रामीण जीवन एवं कृषि के बारे में सम्पूर्ण जानकारी नहीं होती है। यहां तक कि बहुत से व्यक्तियों को प्रतिदिन खाद्यान्नों, फलों एवं सब्जियों के रूप में प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं के उत्पादन की तकनीकी के बारे में भी जानकारी नहीं होती है। एक सर्वे के दौरान पाया गया है बहुत से बच्चों ने दूध देने वाली गाय एवं भैंसों को भी कभी पास से नहीं देखा हैं।

कृषि पर्यटन के अंतर्गत शहरी क्षेत्रों और विदेशी पर्यटकों के लिए खेतो को खोलना और ग्रामीण जीवन का अनुभव लेना शामिल है। उन्हें विभिन्न फसलों के बारे में बताना, फसलों को कैसे बोया और काटा जाता है, फसलों को स्वयं काटने का अनुभव, महिलाओं को गेहूँ अथवा अन्य फसलों को साफ करने का अनुभव, बच्चों को भेड़, बकरी, मुर्गी के साथ खेलना एवं स्वयं स्पर्श करना, साथ ही बैलगाड़ी पर सवारी, बकरियों के छोटे बच्चों को गोद में खिलाना,

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

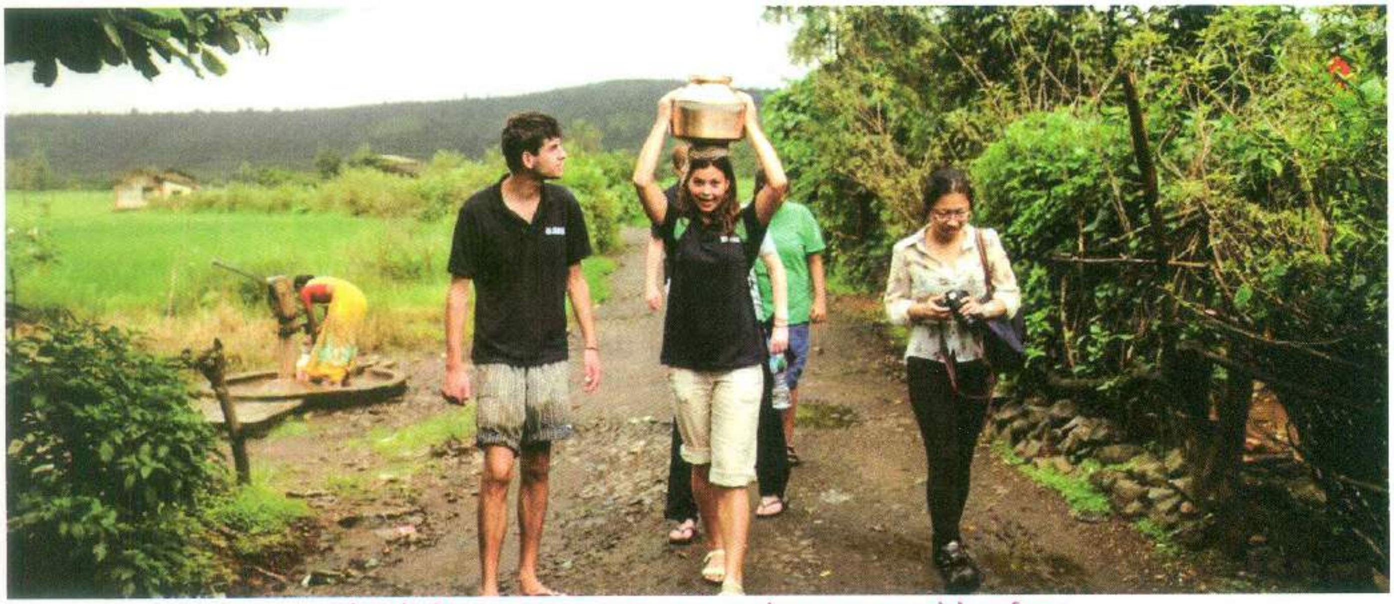

खेत में सिर पर मटका उठा कर चलने का अनुभव लेते पर्यटक

बत्तखों के पीछे दौड़ना, मुर्गियां को भाग कर पकड़ना शहरों में मॉल में घूमने, कार्टून तथा मोबाइल पर वीडियों गेम खेलने से ज़्यादा रोमाचिंत करता है और इन अनुभवों को वे जीवनपर्यंत याद रखते है। साथ ही, गॉवों का पारम्परिक भोजन और उसको पारम्परिक बर्तनों मे तैयार करने की कला के साथ–साथ हस्तकला, संस्कृति, संगीत और भाषा से दो–चार होने का अवसर मिलता है।

कृषि पर्यटन क्यों

- कृषि पर्यटन विश्व के साथ–साथ हमारे देश में उभरते क्षेत्रों मे से एक है। कृषि पर्यटन जैसी अवधारणाएं उत्तम दर्जे की उत्पाद एवं जानकारियां उपलब्ध कराती हैं।
- यात्रा और पर्यटन के कुल योगदान में भारत 184 देशों में 11 वे स्थान पर है।
- यात्रा और पर्यटन क्षेत्र में कुल रोज़गार का 9 प्रतिशत योगदान देने में सक्षम है।

आज की खेती पारम्परिक खेती नहीं रह गई है बल्कि खेती से समुचित लाभ लेने के लिए नई–नई तकनीकों का प्रयोग करना पड़ रहा है जिसके कारण खेती दिन–पर–दिन महंगी होती जा रही है। जनसंख्या के दबाव में खेती पर बढ़ते दबाव के कारण भूमि की उर्वरता दिन–पर–दिन कम होती जा रही है। ऐसी स्थिति में यदि कृषि पर्यटन के माध्यम से खेती में होने वाले परिश्रम और लगने वाली लागत को शहर के व्यक्ति एवं बच्चे स्वयं अनुभव करेंगे तो उनके मन में किसानों के प्रति एक आदर का भाव उत्पन्न होगा और वे अनाज की महत्ता को समझेंगे और उसे बेकार करने से बचेंगे।

विश्व भर में कृषि पर्यटन का विकास बहुत ज़ोर–शोर से हो रहा है। कृषि पर्यटन को विभिन्न रूपों में देखा जा रहा है। कृषि पर्यटन लोगो को ताज़ी हवा में सांस लेने, ग्रामीण परिवेश को जानने, घुड़सवारी, बैलगाड़ी सवारी, ताज़े फलों का सेवन, जानवरों के साथ खेलना, दूध निकालने का अनुभव, खेतों में कटाई का अनुभव, खेतों से ताज़े फल, सब्जी काटने व खरीदने का अनुभव, फलों को पेडों से तोड़कर खाने का अनुभव कृषि पर्यटन को अन्य पर्यटनों के मुकाबले में एकदम अलग–सा अनुभव देता है। यह मनोरंजन के साथ–साथ शैक्षिक एवं अधिगम प्रक्रिया भी है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है हालांकि शहरी आबादी दिन–प्रति–दिन बढ़ती जा रही है। आजकल शहरी बच्चों की दुनिया एक बंद दरवाजे वाले स्कूलों, कक्षाओं, टेलिविज़न पर कार्टून कार्यक्रमों, वीडियो गेम, इंटरनेट तक ही सीमित होकर रह गई है और उन्होने मदर नेचर को केवल टीवी स्क्रीन अथवा नेशनल ज्योग्राफिक चैनलों में ही देखा है। यह भी देखा गया है कि शहरो में रहने वाले 25 प्रतिशत लोगों का गाँवों से कोई सम्पर्क ही नहीं और न ही उनके रिश्तेदार गॉवों के हैं। लगभग 34 प्रतिशत लोग कभी गॉव ही नहीं गए हैं।

कृषि पर्यटन–एक संभावना

- **एक सस्ता प्रवेशद्वार**–कृषि पर्यटन में भोजन, आवास, मनोरंजन और यात्रा की लागत कम से कम है। यह पर्यटक आधार को बढ़ाता है। यात्रा और पर्यटन की वर्तमान अवधारणा शहरी और समृद्ध वर्ग तक सीमित है जो आबादी का केवल एक छोटा हिस्सा है। कृषि की अवधारणा यात्रा और पर्यटन को बड़ी आबादी तक ले जाती है और लागत प्रभावशीलता के कारण यह पर्यटन के दायरे को चौड़ा करती है।
- **खेती उद्योग और जीवनशैली के बारे में जिज्ञासा**–गांवों में जड़ें रखने वाली शहरी आबादी को हमेशा भोजन, पौधों, जानवरों, कच्चे माल जैसे लकड़ी, हस्तशिल्प, भाषा, संस्कृति, परम्परा, कपड़े और ग्रामीण के बारे में जानने की जिज्ञासा रहती है। कृषि पर्यटन जो किसानों, गांवों और कृषि के चारों ओर घूमता है, आबादी के इस क्षेत्र की जिज्ञासा को संतुष्ट करने की क्षमता रखता है।
- **परिवार उन्मुख मनोरंजन गतिविधियों के लिए मज़बूत मांग**–गांव सभी आयु वर्गों यानी बच्चों, युवा, मध्यम और बूढे, पुरुष, महिला पूरे परिवार को सस्ती कीमत पर मनोरंजक अवसर प्रदान करते हैं। ग्रामीण खेल, त्यौहार, भोजन, पोशाक और प्रकृति पूरे परिवार को विभिन्न प्रकार के मनोरंजन प्रदान करते हैं।
- **शहरी आबादी की स्वास्थ्य, चेतना और प्रकृति के अनुकूल साधनों की खोज**–आधुनिक जीवनशैली ने जीवन को तनावपूर्ण बना दिया है और औसत जीवनकाल कम हो गया है। इसलिए लोग प्रकृति की निरंतर खोज में हैं ताकि जीवन को अधिक शांतिपूर्ण बनाया जा सके। आयुर्वेद जो प्रकृति समर्थक चिकित्सा पद्धति है, उसकी जड़ें गांवों में हैं। ग्रामीणों के स्वदेशी चिकित्सा ज्ञान का सम्मान किया जाता है। शहरी क्षेत्रों और विदेशों में जैविक खाद्य पदार्थों की अधिक मांग है। कुल मिलाकर स्वास्थ्य के प्रति जागरूक शहरी आबादी समाधान के लिए गांवों की ओर देख रही है।
- **शांति और शांति के लिए इच्छा**–आधुनिक जीवन विविध सोच और विविध गतिविधियों का एक संकलन है। हर व्यक्ति आधुनिक सुख–सुविधाओं का आनंद लेने के लिए और अधिक पैसा कमाने के लिए अलग–अलग दिशाओं में काम करने का प्रयास करता है। इसलिए शांति हमेशा अपने तंत्र से बाहर है। पर्यटन शांतिपूर्ण स्थान खोजने का एक साधन है। कृषि पर्यटन में शांति और शांति का समावेश है क्योंकि यह शहरी क्षेत्रों से दूर है और प्रकृति के करीब है।
- **प्राकृतिक वातावरण में रूचि**–व्यस्त शहरी आबादी प्रकृति की ओर झुक रही है क्योंकि, प्राकृतिक वातावरण व्यस्त जीवन से हमेशा दूर रहता है। पक्षी, जानवर, फसल, पहाड़, जल निकाय, गांव शहरी आबादी को पूरी तरह से एक अलग वातावरण प्रदान करते हैं जिसमें वे अपने व्यस्त शहरी जीवन से कुछ समय के लिए मानसिक शांति और संतोष का अनुभव कर सकते हैं।

Education ... Delhi ... Pvt. Ltd.

- **भीड़–भाड़ वाले रिसॉर्ट और होटलों से मोहभंग**–भीड़भाड़ वाले होटल एवं रिसॉर्ट शांति चाहने वाले लोगों के लिए परेशानी का सबब बनते जा रहे हैं। इसीलिए फार्म हाउसों के माध्यम से उप–शहरी क्षेत्रों में गांव जैसा माहौल बनाने का प्रयास करते हैं। आजकल फार्म हाउसों में की जाने वाली शादीयां व पार्टियां इसका ज्वलंत उदाहरण है।
- **ग्रामीण मनोरंजन**–गांव त्यौहारों और हस्तशिल्प के माध्यम से शहरी लोगों को विभिन्न प्रकार के मनोरंजन प्रदान करते हैं। ग्रामीणों की जीवनशैली, पोशाक, भाषाएं, संस्कृति एवं परम्पराएं उन्हें आकर्षित करती हैं। किसानों के आसपास का कृषि वातावरण और पूरी उत्पादन प्रक्रिया शहरी शिक्षा के बीच जिज्ञासा पैदा कर सकती हैं। कृषि महत्व के स्थान जैसे उच्चतम फसल उपजाने वाले खेत, उच्चतम पशु उपज देने वाले खेत, प्रसंस्करण इकाईयों, खेत जहां नवाचारों ने पर्यटकों को आर्कषित करने की कोशिश की, कृषि उत्पादों जैसे फार्म गेट, ताज़ा बाज़ार, प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ, जैविक खाद्य शहरी पर्यटकों को लुभा सकते है।
- **कृषि पर्यटन का शैक्षिक मूल्य**–कृषि पर्यटन शहरी स्कूली बच्चों के बीच ग्रामीण जीवन और कृषि विज्ञान के बारे में जिज्ञासा पैदा कर सकता है। यह स्कूल पिकनिक के लिए सबसे अच्छा विकल्प प्रदान करता है। यह कृषि में शहरी कॉलेज के छात्रों के लिए अनुभव करके सीखने का अवसर प्रदान करता है। यह भविष्य के किसानों को प्रशिक्षण प्रदान करने का एक साधन है। यह कृषि क्षेत्र के अधिकारियों को प्रशिक्षित करने के लिए शैक्षिक और प्रशिक्षण उपकरण के तौर पर प्रभावी रूप से उपयोग किया जाएगा। यह मनोरंजन के माध्यम से शिक्षा के लिए अद्वितीय अवसर प्रदान करता है जहां सीखना मज़ेदार और आसान है। देखकर विश्वास होता है, करके सीखते है। यह अनुभव आधारित अवधारणा कृषि पर्यटन है। बैलगाड़ी की सवारी, ऊंट की सवारी, नौका विहार, मछली पकड़ना, ग्रामीण खेल और स्वास्थ्य (आयुर्वेदिक) पर्यटन आदि कृषि पर्यटन के रूप हैं।

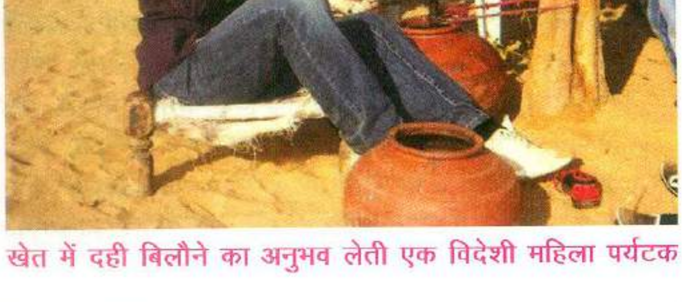

खेत में दही बिलौने का अनुभव लेती एक विदेशी महिला पर्यटक

कृषि पर्यटन को निम्नलिखित सिंद्धातों को सुनिश्चित करना चाहिए

- **आगंतुको के देखने के लिए कुछ है**–पशु, पक्षी, खेत और प्राकृतिक चीजें जो कृषि पर्यटन को पर्यटक दे सकें। इनके अलावा, संस्कृति, पोशाक, त्यौहार और ग्रामीण खेल कृषि पर्यटन में आगंतुकों के बीच पर्याप्त रूचि पैदा कर सकें।
- **आगंतुको के करने के लिए कुछ है**– कृषि कार्यों में भाग लेना, तैराकी, बैलगाड़ी की सवारी, ऊंट की सवारी, भैंस की सवारी, स्वयं खाना बनाना और ग्रामीण खेलों में भाग लेना कुछ ऐसी गतिविधियॉ है, जिनमें पर्यटक भाग ले सकते है और आनंद ले सकते है।

कृषि पर्यटन के उद्देश्य

- देश में कृषि पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए चल रही कृषि पर्यटन पहल और मौजूदा योजनाओं का अध्ययन करना।
- कृषि पर्यटन में मौजूदा व्यापार मॉडल का दस्तावेजीकरण–व्यवहार्य मॉडल सुझाव देना।
- कृषि पर्यटन के निर्वाह में विस्तार और सलाहकार सेवाओं की रणनीतिक भूमिका का पता लगाने हेतु।

कृषि पर्यटन के लाभ

यह प्रमुख प्राथमिक क्षेत्र की कृषि को प्रमुख सेवा क्षेत्र पर्यटन के करीब लाता है। इस अभिसरण में दोनो क्षेत्रों के लिए जीत की स्थिति बनने की उम्मीद है। पर्यटन क्षेत्र में विस्तार करने की क्षमता है। कृषि क्षेत्र में पर्यटन क्षेत्र में विस्तार को अवशोषित करने की क्षमता है।

कृषि पर्यटन कई विकसित राज्यों में एक व्यवहार्य आय पैदा करने वाली गतिविधि है, जो स्थितियों के अनुकूल बदलावों के साथ इसे बढ़ावा देने के लिए नेतृत्व प्रदान करेगी। पर्यटन के कुछ सफल मॉडल निम्न प्रकार हैं–

- कला और शिल्प प्रदर्शन
- फार्म स्टोरः कृषि उपकरणों की प्रदर्शनी
- सड़क के किनारे खड़े ताज़ा कृषि उत्पादों और शिल्प वस्तुओं की बिक्री
- कृषि उत्पादों और बिक्री का प्रसंस्करण
- कृषि गतिविधियों का प्रदर्शन
- भेड़ का बाल काटना
- ऊन प्रसंस्करण
- मछली पकड़ना
- खेत की छुट्टियां
- रात्रि निवास और सुबह का नाश्ता
- फार्म टूर

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★Delhi★

- घुड़सवारी
- रेगिस्तान और बर्फ के खेतों की तरह भारी वर्षा भी एग्री पर्यटक को आकर्षित करती है
- पिकनिक ग्राउंड
- आगंतुकों के आराम करने के लिए एक छायादार स्थान–एक बड़े बरगद के पेड़ की तरह
- स्कूली बच्चों, अधिकारियों और प्रगतिशील किसानों के लिए शैक्षिक भ्रमण
- एक विशेष कौशल सिखाने के लिए फार्म स्कूल
- आउटडोर स्कूल जो कृषि सिखाने वाले प्रकृति का साधन हैं
- जड़ी–बूटी बाग।

कृषि पर्यटन को बढ़ावा देने में विस्तार और सलाहकार सेवाओं (ई.ए.एस.) की भूमिका

कृषि पर्यटन को बढ़ावा देने में कई चुनौतियां हैं जिसमें प्रमुख रूप से किसानों के बीच ज्ञान की कमी, कृषि पर्यटन के बारे में जानने के लिए प्रशिक्षण के अवसरों की कमी और परियोजनाओं को लागू करना और नीतियों एवं बुनियादी ढाँचे का अभाव है। अतः ई.ए.एस. इन ज्ञान और प्रशिक्षण संबंधित बाधाओं पर काबू पाने में प्रमुख भूमिका निभा सकता है। किसानों और उद्यमियों द्वारा ज्ञान और कौशल प्राप्त करने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान करने के अलावा, ई.ए.एस. एग्री टूरिज़्म सेंटरों के उचित कामकाज के लिए नियमों और विनियमों को स्थापित करने और कृषि पर्यटन उत्पादों के प्रचार और विपणन में अधिकारियों की सहायता कर सकता है। आज ई.ए.एस. में न केवल उत्पादन प्रक्रिया में, बल्कि विपणन, प्रचार और कृषि समुदाय के विकास के अतिरिक्त तरीकों जैसें कृषि पर्यटन में भी योग्यता होनी चाहिए। ई.ए.एस. कर्मियों को संभावित खेतों और उद्यमियों की पहचान करने के बारे में पता होना चाहिए जो कृषि पर्यटन परियोजनाओं को लागू कर सकते हैं। कृषि पर्यटन के कई तथाकथित विशेषज्ञों में कृषि और पर्यटन दोनो पहलुओं का अपर्याप्त या आंशिक ज्ञान है। इस समस्या को हल करने के लिए, विकास को एक क्रम में किया जाना चाहिए। सबसे पहले, वरिष्ठ और मध्यम स्तर के विस्तार कर्मचारियों की एक टीम को कृषि पर्यटन में अच्छी तरह से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। टीम को 'एग्री टूरिज़्म' पर उनकी वास्तविक रूचि को देखते हुए बहुत सावधानी से चुना जाना चाहिए और स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशिक्षित किया जाना चाहिए ताकि उन्हे 'एग्री टूरिज़्म' में व्यापक अनुभव मिले।

जो आमतौर पर अपने परिवार के साथ यात्रा करते हैं, जो मुख्य रूप से शहरी मूल के हैं और शिक्षित होते हैं, वे स्थानीय संस्कृति का सम्मान करते हैं और अक्सर उस स्थान के बारे में पहले से जानकारी इकट्ठा करते है।

यात्रा की योजना बनाएं: कृषि पर्यटन सेवाओं के अंतर्गत लोग प्रकृति के साथ और अन्य लोगों के साथ मधुर संबंधों बनाने

खेतों में फलों को निहारने और खुद तोड़ कर खाने का आनंद लेते पर्यटक

में रूचि रखते हैं। वे पर्यावरण के प्रति जागरूक हैं और प्राकृतिक उत्पादों की मांग करते हैं, जिनमें स्वास्थ्यवर्धक भोजन भी शामिल है। इसके अलावा, वे वास्तविक स्थानीय संस्कृति के साथ–साथ कृषि पर आधारित अन्य गतिविधियों की तलाश करते हैं। कृषि पर्यटन को ऐसे क्षेत्रों में बढ़ावा दिया जा सकता है जहां ग्रामीण पर्यटन को विकसित करने से पूरा गाँव समुदाय लाभान्वित हो। ग्रामीण पर्यटन में स्थानीय परम्परा, डिज़ाइन और वास्तुकला, स्थानीय कला और संस्कृति प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

कृषि पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए रणनीति

उत्पाद: कृषि पर्यटन में उत्पाद देखना, विश्वास करना, और अंततः अनुभव करना। यह अनुभव अद्वितीय और बेजोड़ है। पेड़ पर चढ़ना, बैलगाड़ी में सैर और खेत में गन्ने के रस का आनंद लेने का अनुभव अपने आप में अनूठा है और कोई भी मिलियन डॉलर का पर्यटन केंद्र इस तरह के अनुभव नहीं दे सकता है।

मूल्य: कृषि पर्यटन इकाईयां पीक सीज़न मे यानी नवंबर से जनवरी तक अधिक चार्ज कर सकती हैं और बाकी अवधि के दौरान कम चार्ज रख सकती हैं। ग्रामीण त्यौहारों के दौरान या महत्वपूर्ण घटनाओं के समय 'एग्री–टूरिज़्म' इकाईयां अधिक चार्ज कर सकती हैं, भले ही यह ऑफ सीजन के दौरान हो।

स्थान: वह स्थान जहां पर्यटकों को ठहराया जाता है, मूल्य निर्धारण को भी प्रभावित करता है। यदि पर्यटकों को किसानों के साथ गांवों में ही समायोजित किया जाता है तो शुल्क कम हो सकता है जबकि खेतों में आवास की लागत अधिक होती है क्योंकि विशेष रूप से पर्यटक प्रयोजन के लिए बुनियादी ढांचा खेत में बनाया जाता है, जबकि गांव में किसानों के घर में मौजूदा सुविधाओं का उपयोग किया जाता है।

प्रचार: कृषि पर्यटन को बढ़ावा देना और रणनीति गठबंधन तीन स्तरों पर हो सकता है:

- **एयरलाइनों, टूर ऑपरेटरों और विदेशी दूतावासों के साथ गठबंधन**–यह गठबंधन विदेशी पर्यटकों और ऊपरी

मध्याम वर्ग के शहरी पर्यटकों को 'एग्री टूरिज़्म' से जोड़ता है। किसानों के लिए व्यक्तिगत रूप से यह कार्य करना संभव नहीं हो सकता है। सरकार केंद्रीय और राज्य पर्यटन विभागों के माध्यम से प्रमोशन और समन्वय गतिविधियों के माध्यम से कृषि पर्यटन इकाइयों की सहायता कर सकती है।

- **होटल उद्योग के साथ में गठबंधनः** होटल उद्योग के साथ गठबंधन के माध्यम से बड़ी संख्या में घरेलू पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है। होटल उद्योग का उपयोग कृषि पर्यटन अवधारणा को बढ़ावा देने के लिए किया जा सकता है।
- **कृषि पर्यटन यूनिट्स द्वारा किया गया प्रमोशनः** मूल रूप से प्रमोशन 'एग्री–टूरिज़्म' द्वारा दिए गए माउथ टू माउथ और स्थानीय प्रचार द्वारा होता है। कृषि पर्यटन यूनिट के जीवित रहने के लिए थोड़े आक्रामक मोड के साथ प्रत्यक्ष विपणन पर्याप्त है। वे कास्ट शेयरिंग के आधार पर संयुक्त प्रचार के लिए जा सकते हैं और देश के अन्य हिस्सों में कृषि पर्यटन की संभावनाओं को भी सार्वजनिक कर सकते हैं। लेकिन इस समूह के दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए प्रारम्भिक सरकारी हस्तक्षेप की आवश्यकता है।
- **पोजिशनिंग–** अंततः एग्री टूरिज़्म संकल्पना को पर्यटकों के मन में "आओ एक फल खिलाओं, एक फूल सूंघो, खेतों में भागो, घास पर चलो और ग्रामीण भारत में खो जाओ" के रूप में स्वीकार करना होगा।

कृषि पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सुझाव

संचारः एक दूरस्थ कृषि पर्यटन इकाई को प्रचार प्रदान करना मुश्किल है। इसलिए या तो सामूहिक रूप से एग्री–टूरिज़्म आपरेटर्स प्रचार कर सकते हैं या आईटीडीसी, राज्य पर्यटन विकास निगम, एनजीओ, प्रेस और टूर ऑपरेटर जैसे संगठन इस ज़िम्मेदारी को उठा सकते हैं। कृषि पर्यटन को बढ़ावा देने में सूचना प्रौद्योगिकी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। एग्री टूरिज़्म स्थानों और टोल फ्री 24 घंटे की हेल्पलाइन के बारे में सभी विवरणों से युक्त एक इंटरेक्टिव वेबसाइट एग्री पर्यटकों को आवश्यक जानकारी प्रदान कर सकती है।

परिवहनः ग्रामीण इलाकों में पहुँच मार्ग की कमी और खराब परिवहन सुविधाओं के कारण दूरस्थ कृषि पर्यटन इकाईयों तक पहुंचना सबसे बड़ी चुनौती रहा है। इंटरनेट कनेक्टिविटी और सड़क, हवाई और रेलमार्ग संयोजकता जैसी सुविधाएं कृषि पर्यटन के विकास के लिए ज़रूरी हैं। ग्रामीण क्षेत्रो में सड़के, परिवहन और दूरसंचार विशेष रूप से जहां कृषि पर्यटन इकाईयां प्राथमिकता के आधार पर स्थापित की जाती हैं, ये प्रयास साझेदारी मोड में निजी भागीदारी के साथ प्रभावी हो सकते हैं।

आवासः कृषि पर्यटन में सुरक्षित और स्वच्छ आवास होना चाहिए। शहरी और विदेशी पर्यटक इन न्यूनतम सुविधाओं की तलाश करते हैं। एक ओर एग्री टूर आपरेटरों को उन्मुख करना और दूसरी ओर ऐसे प्रयासों को प्रोत्साहन प्रदान करना आवश्यक है। नियमित रूप से साफ पानी की आपूर्ति और स्वच्छ शौचालय महत्वपूर्ण हैं। साथ ही, आधुनिक सुविधाओं को सीमित करना भी आवश्यक है जिसमें कृषि पर्यटक रूचि नहीं रखते हैं।

नेटवर्किंगः दूरस्थ स्थान पर कृषि पर्यटन ऑपरेटर की सहायता के लिए राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर सार्वजनिक और निजी हितधारकों की नेटवर्किंग आवश्यक है। इस नेटवर्क से एग्री टूरिज़्म इकाईयों को नीति समर्थन, बुनियादी ढांचा और प्रचार मिल सकता है।

किसानों की क्षमता का निर्माणः किसानों को सुविधाओं, आतिथ्य और सार्वजनिक संबंधों के रखरखाव की ओर उन्मुख होना चाहिए।

पर्यटकों की सुरक्षाः कृषि पर्यटन इकाईयां सुदूर क्षेत्रों में स्थित हैं जिनमें सड़क, चिकित्सा सुविधा, दूरसंचार का अभाव है और कभी–कभी चोरी और जंगली जानवरों से खतरा होता है। इसलिए आपातकालीन चिकित्सा देखभाल के लिए सुविधाओं के अलावा स्थानीय आबादी का समर्थन होना चाहिए।

सार्वजनिक–निजी भागीदारीः कृषि व्यवसायी, किसान संगठन, सहकारी समितियां, एन.जी.ओ. और एग्रीबिज़नेस कंपनियां किसानों और सरकारी एजेंसियों के टूर ऑपरेटरों की मदद से इन उपक्रमों को अपना सकती हैं। ट्रांसपोर्टर्स और हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री को भी इस प्रक्रिया में फायदा होगा।

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

निष्कर्ष

भारत में प्राकृतिक परिस्थितियों और विभिन्न प्रकार के कृषि उत्पादों के साथ–साथ ग्रामीण परम्पराओं, त्यौहारों की विविधता के कारण कृषि पर्यटन के विकास की काफी सम्भावनाएं हैं। देश की आबादी का एक बड़ा हिस्सा शहरी क्षेत्रों में रहता है और ग्रामीण जीवन का आनंद लेना चाहता हैं और ग्रामीण जीवन के बारे में जानना चाहता है। देश में कृषि पर्यटन व्यवसाय विकसित करने का यह एक अच्छा अवसर है। लेकिन किसानों में इस व्यवसाय के बारे में कम जागरूकता के साथ–साथ वित्त और उचित दृष्टिकोण की समस्या है। इसलिए ज़िलों के कृषि विज्ञान केंद्रों एवं कृषि विश्वविद्यालयों को 'कृषि पर्यटन' के विकास एवं विस्तार हेतु प्रयास करना चाहिए और कृषि पर्यटन के संबंध में कुछ नवीन विचारों का आदान–प्रदान करना चाहिए।

सरकार को अनुदान और संस्थागत वित्त द्वारा कृषि पर्यटन गतिविधियों के लिए इष्टतम वित्तीय सहायता प्रदान करने का प्रयास करना चाहिए। बैंकों को भी कृषि पर्यटन गतिविधियों के विकास एवं विस्तार हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करनी चाहिए। कृषि पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु सेवा प्रदाताओं का संघ भी इन किसानों की एक ज़रूरत है जो संपूर्ण भारत में कृषि पर्यटन नेटवर्क के विकास एवं विस्तार में मदद करे।

(लेखक महाराष्ट्र में बीड के कृषि विज्ञान केंद्र में वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख रह चुके हैं। लेख में व्यक्त विचार निजी हैं।)

ई–मेल: saurabhmrts@gmail.com

ग्रामीण पर्यटन : प्रगति और संभावनाएं

—गजेन्द्र सिंह 'मधुसूदन'

भारतीय गांवों में आगंतुकों को पेश करने के लिए अद्वितीय संस्कृति, शिल्प, संगीत, नृत्य और विरासत उपलब्ध है। बुनियादी ढांचे के विस्तार से सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में संपर्कता भी बढ़ रही है। ग्रामीण पर्यटन स्थानीय कला और शिल्प को पुनर्जीवित कर सकता है और व्यवहार्य पारंपरिक व्यवसायों को विलुप्त या विस्थापित होने से रोक सकता है। यह ग्रामीण क्षेत्रों के पुनर्विकास और ग्रामीण जीवन को फिर से जीवंत करने में मदद करेगा। आगंतुकों के साथ विचार—विमर्श से उनके ज्ञान क्षितिज का विस्तार होगा। भारत अनगिनत लोक कलाओं का घर है जो सदियों से पीढ़ी—दर—पीढ़ी चली आ रही हैं और देश की करीब 50 पारम्परिक लोक कलाएं अपनी वैश्विक पहचान की ओर अग्रसर हैं।

पर्यटन न केवल विश्व अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा क्षेत्र है, बल्कि भारत में भी सबसे बड़ा सेवा उद्योग है। वर्ष 2019 में यात्रा और पर्यटन ने भारत की अर्थव्यवस्था में 194.30 अरब यूएस डॉलर जोड़े, जो देश की जीडीपी का 6.8 प्रतिशत था, यह बढ़कर 2028 तक 512 अरब यूएस डॉलर हो जाएगा। इस हिसाब से 2019 और 2028 के बीच भारत की जीडीपी में पर्यटन उद्योग का प्रत्यक्ष योगदान 10.35 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ने की उम्मीद है। पर्यटन भारत के लिए विदेशी मौद्रिक आय का भी एक बड़ा स्रोत रहा है। वर्ष 2010 में देश को पर्यटन से 14.49 अरब यूएस डॉलर विदेशी मौद्रिक आय प्राप्त हुई थी, जो बढ़कर 2019 में 30.06 अरब यूएस डॉलर हो गई और 2028 तक इसके 50.9 अरब यूएस डॉलर पहुंचने की उम्मीद है। वर्ष 2019 में पर्यटन से प्राप्त विदेशी मौद्रिक आय के मामले में भारत 13वें स्थान पर था और वैश्विक स्तर पर पर्यटन से प्राप्त विदेशी मौद्रिक आय में भारत का हिस्सा 2.05 प्रतिशत रहा है। वर्ष 2001 से 2020 के दौरान भारत में विदेशी पर्यटकों के आगमन में चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर 8.45 प्रतिशत रही है। हालांकि कोविड—19 के कारण वर्ष 2020 और 2021 के दौरान दुनिया भर में विदेशी पर्यटकों के आगमन में भारी कमी परिलक्षित हुई है और भारत भी इसका अपवाद नहीं रहा है, जो महामारी से संबंधित प्रतिबंधों का परिणाम था।

देश के पर्यटन क्षेत्र में निवेश से रोज़गार सृजन अनुपात बहुत अच्छा है या कहें कि पर्यटन उद्योग में 10 लाख रुपये निवेश कर करीब 80 नौकरियां पैदा की जा सकती हैं जो किसी भी अन्य क्षेत्र की तुलना में अधिक हैं। फिलहाल पर्यटन क्षेत्र देश के कुल रोज़गार में 8.0 प्रतिशत का योगदान दे रहा है। वर्ष 2020 में इस क्षेत्र में 3.9 करोड़ लोग रोज़गार युक्त थे और 2029 तक इसके

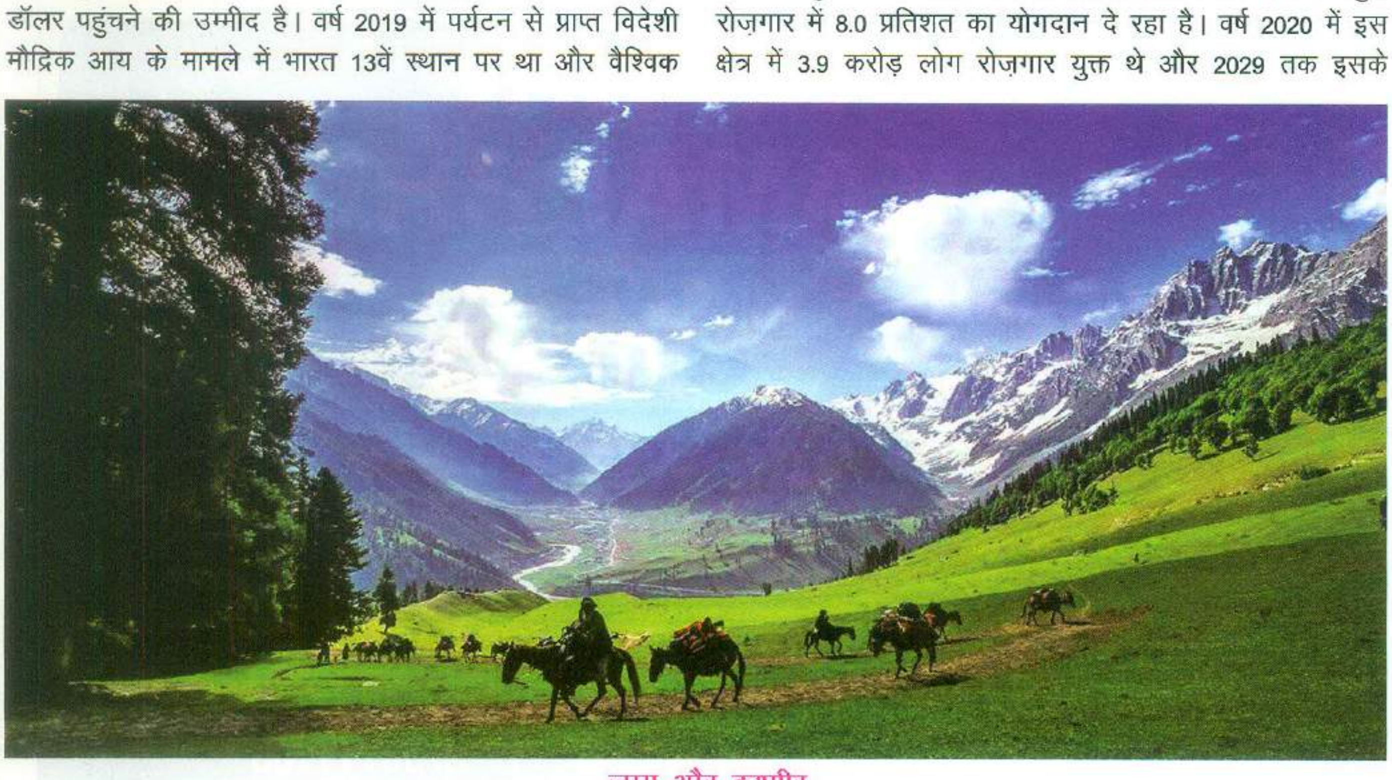

जम्मू और कश्मीर

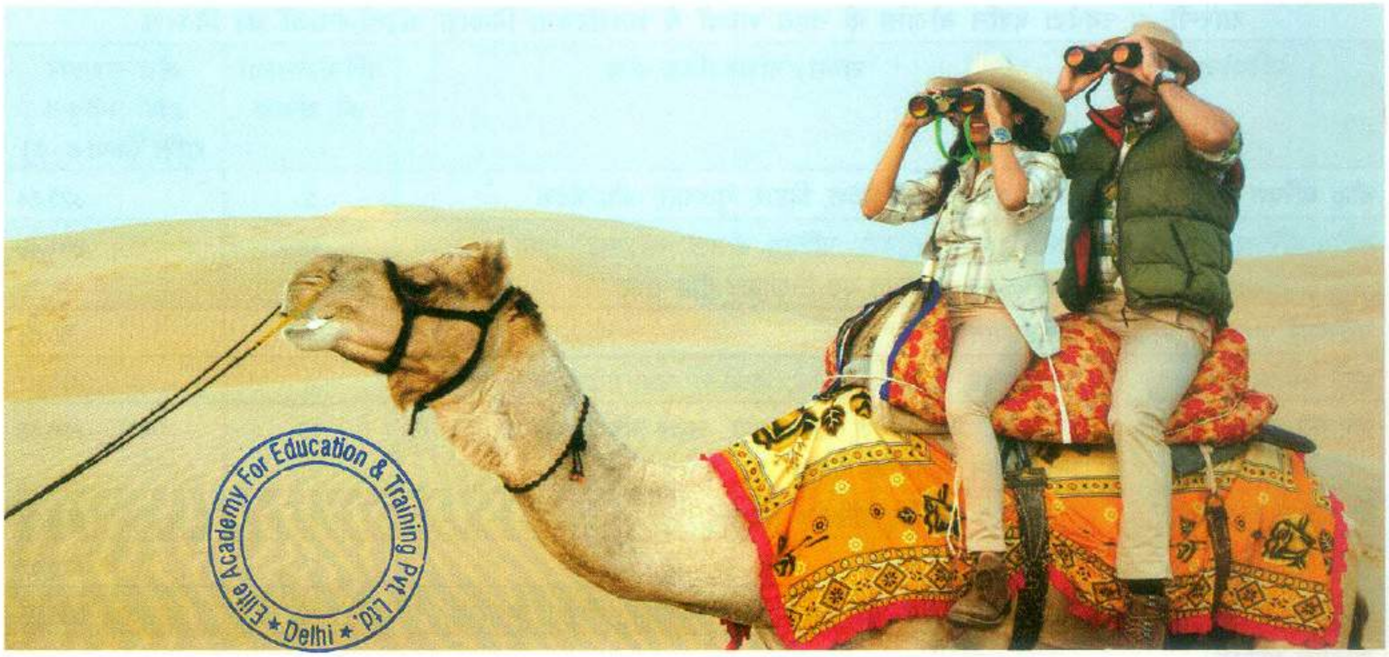

जैसलमेर में ऊंट सफारी

बढ़कर 5.3 करोड़ नौकरियों तक पहुंचने की उम्मीद है। यह विदेशी निवेश का भी एक अच्छा विकल्प है। अप्रैल 2000 और जून 2021 के दौरान देश के होटल और पर्यटन क्षेत्र को 15.89 अरब यूएस डॉलर का संचयी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्राप्त हुआ है।

पर्यटन वह गतिविधि है, जिसमें लोग कुछ समय के लिए मनोरंजन, विश्राम, व्यवसाय या किसी अन्य उद्देश्य के लिए अपने आवासीय क्षेत्र से बाहर के स्थानों पर यात्रा करते और समय व्यतीत करते हैं। पर्यटन के तीन मूल रूप घरेलू, आंतरिक और बाहरी पर्यटन हैं। पहले पर्यटन में मात्र विश्राम, व्यवसाय, खेल और साहसिक कार्य शामिल हुआ करते थे, लेकिन अब इसमें पोषणीय पर्यटन, खाद्य पर्यटन, अनुभवजन्य पर्यटन, कल्याण पर्यटन आध्यमिक पर्यटन, परिस्थितिकी पर्यटन सीघ्र कई नए क्षेत्र में शामिल हो गए हैं।

भारत पर्यटन की दृष्टि से आदर्श गंतव्य स्थल है। दुनिया में शायद ही कोई देश हो, जहां इतनी भौगोलिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विविधता देखने को मिले। यहां मौसम के अनुरूप बदलता प्राकृतिक परिवेश, हरे–भरे खेतों का परिदृश्य, बर्फ से ढकी हिमालय की चोटियां, सुरम्य घने जंगल, सुनहरे तट, सागर के लहरों की अठखेलियां, रेतीले मरुस्थल भारत को सही मायने में 'अतुल्य' गंतव्य बनाते हैं।

ग्रामीण पर्यटनः पर्यटन का वह रूप जो गांवों में ग्रामीण जीवन, कला, संस्कृति और ग्रामीण स्थलों की धरोहर को प्रदर्शित करता है, जिससे स्थानीय समुदाय को आर्थिक और सामाजिक लाभ होता है। साथ ही, पर्यटकों व स्थानीय लोगों के बीच समृद्ध पारस्परिक विचार–विमर्श को सक्षम बनाता है। उसे 'ग्रामीण पर्यटन' कहा जा सकता है। ग्रामीण पर्यटन बहुआयामी प्रकृति का है जिसमें कृषि पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, प्रकृति पर्यटन, व्यंजन पर्यटन, नृजातीय पर्यटन, साहसिक और पारिस्थितिकी पर्यटन शामिल हैं, जो आपस में निकट संबद्धता रखते हैं। यह अनिवार्यतः देहाती इलाकों में संचालित गतिविधियों और ग्रामीण जीवनशैली पर केंद्रित है और पर्यटक गाँव की दैनिक गतिविधियों में भाग लेते हुए आनंद का अनुभव करता है। त्योहारों व स्थानीय उत्सवों से सराबोर यह संस्कृति, धरोहर और परम्परा के संरक्षण पर आधारित होता है, जिसमें पर्यटकों को क्षेत्र की परम्पराओं व संस्कृति को आत्मसात करने का मौका मिलता है और आगंतुक को गाँव की अनूठी जीवनशैली का भी पता चलता है।

> देश की प्राकृतिक और सांस्कृतिक विविधता के बारे में कहा जाता है कि यहां "कोस कोस पर बदले पानी और चार कोस पर वानी" कहावत देश में पर्यटन की सम्पन्नता को अभिव्यक्त करती है। हमारी अति प्राचीन सामासिक संस्कृति और धार्मिक विविधता भी पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र रही है, जिसको संबोधित करते हुए मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने कहा था कि "दूसरे देशों में मैं एक पर्यटक के रूप में जा सकता हूं, लेकिन भारत में मैं एक तीर्थयात्री हूं।"

हमारे गांव हमेशा से अपनी लोककलाओं और हस्तशिल्पों के लिए विख्यात रहे हैं। यहां की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत ग्रामीण पर्यटन को विपुल संभावनाओं वाला क्षेत्र बना देती है। हमारे कई गांव अपनी पर्यटन अभिव्यक्तियों की वजह से विश्व स्तर पर

सारणी–1: स्वदेश दर्शन योजना के तहत राज्यों में अवसंरचना विकास परियोजनाओं का विवरण

परियोजना	राज्य/संघशासित क्षेत्र	परियोजनाओं की संख्या	केंद्र सरकार द्वारा स्वीकृत राशि (करोड़ रु)
बौद्ध परिपथ	मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, गुजरात, आंध्र प्रदेश	5	323.54
तटीय परिपथ	आंध्र प्रदेश, पुडुचेरी, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, गोवा, ओडिशा, तमिलनाडु, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह	10	631.40
मरुस्थल परिपथ	राजस्थान	1	50.01
इको पर्यटन परिपथ	उत्तराखंड, तेलंगाना, केरल, मिज़ोरम, मध्य प्रदेश, झारखंड	6	451.04
विरासत परिपथ	गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, असम, पुंडुचेरी, राजस्थान, तेलंगाना, पंजाब	10	756.48
हिमालयन परिपथ	जम्मू एवं कश्मीर, हिमाचल प्रदेश	7	603.04
कृष्ण परिपथ	हरियाणा, राजस्थान	2	173.15
पूर्वोत्तर परिपथ	अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, सिक्किम, मिज़ोरम, त्रिपुरा, मेघालय	10	836.30
रामायण परिपथ	उत्तर प्रदेश	2	196.66
आध्यात्मिक परिपथ	केरल, मणिपुर, बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पुंडुचेरी, महाराष्ट्र	13	750.13
जनजातीय परिपथ	नगालैंड, छत्तीसगढ़, तेलंगाना	4	371.47
वन्यजीव परिपथ	मध्य प्रदेश, असम	2	186.90
ग्रामीण परिपथ	बिहार, केरल	2	125.02
तीर्थंकर परिपथ	बिहार	1	37.19
मार्गस्थ उप योजना परिपथ	उत्तर प्रदेश और बिहार	1	15.07
15 परिपथ		76	5507.40

स्रोतः अतारांकित प्रश्न 3988 दिनांक 28 मार्च, 2022 लोकसभा पटल

प्रसिद्ध हो चुके हैं। जैसे गुजरात में कच्छ के गांव शिल्प और साल्ट डेज़र्ट का आकर्षण देते हैं, जो कच्छ एडवेंचर्स इंडिया के रूप में प्रसिद्ध हैं। ग्रामीण पंजाब में खेती की आकर्षक गतिविधियां 'इत्मिनान लाजेज पंजाबियत' के रूप में उभरी हैं। चाहे हिमाचल प्रदेश के उच्च तुंगता वाले गांव हों या सिक्किम का लाचेन जो बर्फ से ढकी चोटियों का आकर्षण पैदा करते हैं। संथाली संस्कृति और प्राकृतिक सौंदर्य के रूप में बल्लभपुर डांगा (पश्चिम बंगाल) गांव, रेशमी साड़ियों के लिए मशहूर पोचमपल्ली (तेलंगाना) गांव, मैंग्रोव वनस्पति से आच्छादित सुंदरबन क्षेत्र के गांव, ब्रह्मपुत्र नदी पर निर्मित माजुली द्वीप (असम), उत्तरदायी पर्यटन के रूप में केरल का कुमारकोम, शाम–ए–सरहद शिविर के रूप में होडका गांव (गुजरात) आदि अपनी वैश्विक पहचान कायम कर चुके हैं।

देश में ऐसे गांवों की भरमार है, जो कोई न कोई विशिष्टता अवश्य धारित करते हैं, जिन्हें उभार कर पर्यटक स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है। किसी गंतव्य को पर्यटक स्थल के रूप में विकसित करने के लिए आवश्यक है कि उसमें 6ए सुविधाएं– अट्रैक्शन (आकर्षण), एसेसिबिलिटी (पहुंच), एमेनिटीज (सुविधाऐं), एवेलेबल पैकेज (उपलब्ध पैकेज), एक्टिविटीज (गतिविधियां) और एनसिलरी सर्विसिस (सहायक सेवाएं) सुलभ हों।

ग्रामीण पर्यटन के प्रोत्साहन हेतु सरकारी प्रयासः भारत में सरकारी प्रयासों के तहत 'राष्ट्रीय पर्यटन विकास नीति' 2002 में पहली बार ग्रामीण पर्यटन उद्योग की चर्चा की गई और भारत में इसके प्रोत्साहन हेतु पहली योजना पर्यटन मंत्रालय द्वारा 2002–03 में शुरू की गई थी। इसमें ग्रामीण पर्यटन सहित विरासत पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, पारिस्थितिकी पर्यटन आदि को बढ़ावा दिया। इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण जीवन, कला, संस्कृति और विरासत को ग्रामीण स्थानों पर और उन गांवों में उजागर करना था। जो कला, शिल्प, हथकरघा, वस्त्रों में प्रसिद्धि और प्रवीणता रखते हैं। यूएनडीपी के सहयोग से पर्यटन मंत्रालय द्वारा 2004 में इंडोजेनस पर्यटन परियोजना–ग्रामीण पर्यटन योजना (ईटीपी–आरटीएस) सुआलकुची में शुरू की गई थी, जो असम के कामरूप ज़िले में ब्रह्मपुत्र बेसिन का सबसे बड़ा गांव है।

सुआलकुची रेशम की बुनाई के लिए प्रसिद्ध है और इसे "पूर्व के मैनचेस्टर" के रूप में मान्यता प्राप्त है। इसने पर्यटन को भारतीय परिस्थितियों में सतत ग्रामीण विकास के इंजन के रूप में प्रोत्साहित किया। इसका उद्देश्य स्थायी ग्रामीण आजीविका, आय सृजन, रोज़गार, लैंगिक समानता, महिलाओं का सशक्तीकरण, ग्रामीण युवाओं, सीमांत समूहों और उनकी क्षमता निर्माण पर ध्यान केंद्रित करना था।

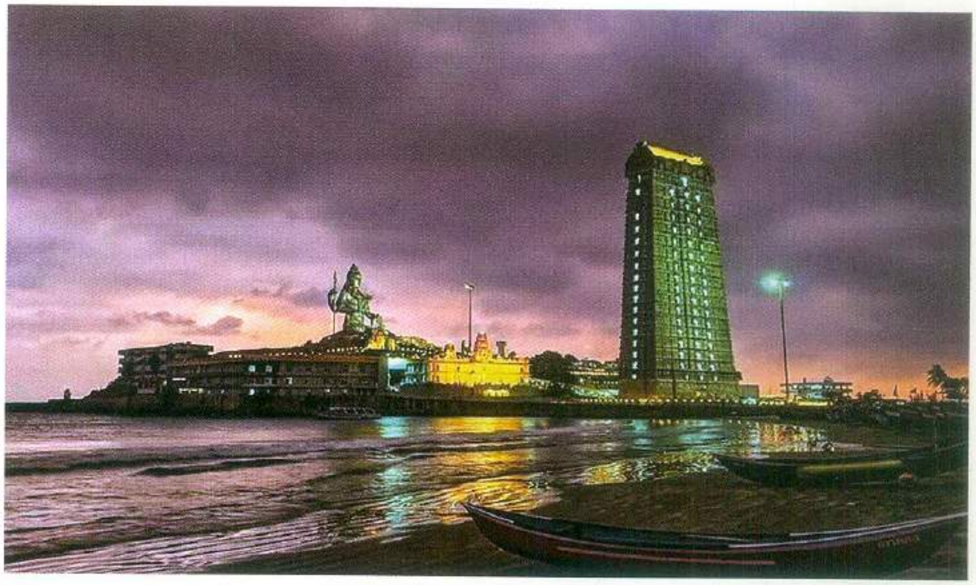

मुरुदेश्वर समुद्र तट, कर्नाटक

अतुल्य भारत अभियानः भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा सितंबर 2002 में 'अतुल्य भारत' नाम से शुरू किया गया अभियान देश–विदेश में भारत का प्रतिनिधित्व करता है और इससे देश के पर्यटन क्षेत्र में संभावनाओं के नए द्वार खुले हैं। इसका उद्देश्य भारतीय पर्यटन को वैश्विक मंच पर उभारना है। देश की पर्यटन क्षमता को विश्व के समक्ष प्रस्तुत करने वाला यह इस प्रकार का पहला प्रयास था। वर्ष 2003 में "अतिथि देवो भवः (मेहमान भगवान की तरह हैं)" लोगो को 'अतुल्य भारत' के तहत प्रयोग करना प्रारम्भ किया गया ताकि विदेशों से लोग भारत में पर्यटन के लिए आएं। इसको अधिक प्रभावी बनाने के लिए 27 सितंबर, 2017 को अतुल्य भारत 2.0 अभियान के 'एडॉप्ट ए हेरिटेज' प्रोजेक्ट को लॉन्च किया गया। एडॉप्ट ए हेरिटेज' प्रोजेक्ट पर्यटन मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय और भारतीय पुरातत्त्व विभाग की संयुक्त पहल है, जो विशिष्ट प्रचार योजनाओं पर ध्यान केंद्रित करता है।

भारत को जानें कार्यक्रमः यह विदेशों में रह रहे युवाओं के लिए विदेश मंत्रालय द्वारा 8 जनवरी, 2014 को लॉन्च किया गया अभिमुखीकरण कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य प्रतिभागियों के मध्य

भारतीय जीवन के विविध आयामों पर जागरूकता का सृजन करना और उन्हें देश द्वारा विभिन्न क्षेत्रों यथा आर्थिक, औद्योगिक, शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी, संस्कृति में हासिल की गई प्रगति के बारे में जानकारी प्रदान करना है। यह भारतीय मूल के छात्रों और युवाओं के लिए भारत का भ्रमण करने, अपने विचारों, आकांक्षाओं और अनुभवों का आदान–प्रदान करने तथा समकालीन भारत के साथ घनिष्ठ संबंध विकसित करने के लिए एक अनूठा मंच प्रदान करता है। विदेशों में स्थित भारतीय मिशनों के प्रमुखों से प्राप्त सिफारिशों के आधार पर 18 से 26 आयु वर्ग के विदेशी युवाओं को इस कार्यक्रम के लिए चुना जाता है।

स्वदेश दर्शन योजनाः विषयगत पर्यटन सर्किट के एकीकृत विकास हेतु भारत सरकार के पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय द्वारा वर्ष 2014–15 में शुरू की गई 'स्वदेश दर्शन' योजना का उद्देश्य भारत में पर्यटन की क्षमता को बढ़ावा देना, विकसित करना और उसका दोहन करना है। इसके तहत पर्यटन सर्किट के बुनियादी ढाँचे के विकास के लिए विभिन्न परियोजनाओं हेतु राज्य/संघ राज्य क्षेत्रों को केंद्रीय वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। इसके तहत भारत सरकार विभिन्न राज्यों में पर्यटन अवसंरचना के विकास हेतु 76 परियोजनाओं के तहत 5507.40 करोड़ रुपये स्वीकृत कर चुकी है, जैसाकि सारणी–1 के विवरण से स्पष्ट है।

प्रसाद (पिल्ग्रमेज रिज्यूवनेशन फॉर स्प्रिचुअल आगमेंटेशन ड्राईव) योजनाः यह भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा वर्ष 2014–15 में शुरू किया गया 'तीर्थयात्रा कायाकल्प और आध्यात्मिक संवर्धन अभियान' है। इसका उद्देश्य तीर्थ स्थलों को वरीयता के आधार पर नियोजित और संधारणीय तरीके से एकीकृत करना है। यह धार्मिक पर्यटन को समृद्ध बनाने हेतु देशभर में तीर्थस्थलों को विकसित करने पर केंद्रित है। इसके तहत पर्यटन केंद्रित बुनियादी

सारणी–2: राज्यों में ग्रामीण पर्यटन की संभावना बढ़ाने वाली कुछ प्रसिद्ध लोक कलाएं

राज्य	लोक नृत्य	लोक गीत	लोक कला
राजस्थान	घूमर, गणगौर, झूलन, कालबेलिया, छारी	कुकड़ी, झरोवा, मूमल, ढोला मारु, गोरबन्द, घूमर, कांगसियो	मांर्डणा और फड़
गुजरात	गरबा, डांडिया रास, टिप्पनी जुरुन, भावई	गरबा, दोहा	पिथोरा और अथिया
महाराष्ट्र	लावणी, डिंडी, काला, दहीकला	लावणी, पोवादा, कोली, भरुद, गोंधार, अभंग, तुम्बादी	वर्ली
पंजाब	भांगड़ा, गिद्दा, दफ्फ, धामल, दंकारा	महिया, टप्पा, जुगनी, छल्ला, हीर राँझा	फुलकारी और रंगोली
हरियाणा	झूमर, डाफ, धमाल, लूर, गुग्गा, खोर, जागोर		सांझी
हिमाचल प्रदेश	झोरा, झाली, छारही, धामन, छापेली, महासू, नटी, डांगी	बिहाइयां, सुहाग, घोड़ी, झुरी, छींजे	थांका और अरोफ
पश्चिम बंगाल	लाठी, गंभीरा, ढाली, जतरा, बाउल, छाऊ, संथाली	बाउल, भटियाली, रवीन्द्र संगीत	कालीघाट और अल्पना
तेलंगाना	पेरीनी थंडावम, शिवतांडवम	ओग्गु कथा या ओगुकथा	चैरियल
आंध्र प्रदेश	वीरानाट्यम, बुट्टा बोम्मलू, भामकल्पम, दप्पू, तपेता गुल्लू, लम्बाडी, धीमसा, कोलट्टम	मदिगा दप्पू, माला जमिदिका	कलमकारी
कर्नाटक	यक्षगान, हुट्टारी, सुग्गी, कुनीथा, करगा, लाम्बी	भावगीत	रंगवाली
केरल	मोहिनीअट्टम, कूरावारकली	विलपाट्ठ, माप्पिलापाट्ठ, वडक्कन पाट्ठ, भूटा	कलमा जड्डू
तमिलनाडु	कुमी, कोलट्टम, कवाडी अट्टम	अम्मानईवारी, नातूपुरा पादलगल, कुम्मी पातू	कोल्लम और तंजौर
मध्य प्रदेश	जवारा, मटकी, अडा, खाड़ा, फूलपति, ग्रिदा, सालेलार्की	आल्हा, [illegible], संजा, चौकड़िया, हरदौली, बैरायटा, [illegible]	गोंड और बाघ
उत्तर प्रदेश	नौटंकी, रासलीला, राई, कजरी, चरकुला, धोबिया	रासिया, कजरी, कवाली, बिरहा, चैता, कहारवा, ठुमरी, आल्हा	चौकपूर्णा और चिकनकारी
उत्तराखंड	भोटिया, चमफुली, छोलिया	बसंती, घसियारी, जोड़ा	ऐपन
छत्तीसगढ़	गौर मारिया, पैंथी, राउत, पंडवाणी, वेडामती, चंदनानी	पंडवानी, भोजली, सुआ, जवांरा	बिहई चैक और गोवर्धन
बिहार	पनवारिया, बिदेसिया, कजारी	जोगीड़ा, 'फगुआ, चैता, कजरी, हिंडोला, मलार	अरिपन और मधुबनी
झारखंड	मंडा, सोहराई, दासाईं, सरहुल, करमा	डइड़धरा, झांझइन, अधरतिया, प्रातकली, झूमर	सोहराय और कोहबर
उड़ीसा	गोतिपुआ, छाऊ, घुमूरा, रानाप्पा, संबलपुरी	ओड़िसी, सम्भलपुरी, दसकठिया	पट्टचित्र
त्रिपुरा	होजागिरी, गरिया, बीझु, संगराई, चेरव, बूमनी	जादुकोलिजा, चामरिटुनमनी, ममिता, गरिया रुइनानी, हचवग कमानी	अल्पना
असम	बिहू, बागुरुम्बा, भोर, ओजापली	बिहूगीत, टोकरीगीत, कामरूपी, गोलपरिया	
सिक्किम	सिंघी छाम, याक छाम, तमांग सेलो, मारूनी, ताषी सबदो	घाटू कीटो, मयुल लियांग	थांका
मिज़ोरम	छेरव, खुल्लम, चैलम, सोलाकिया, तलंगलम	दामिनी जाई, छेयी लाम, सैलो ज़ई, सैवते ज़ई, लुमतुई ज़ाई	
अरुणाचल प्रदेश	पोंग, दामिंडा, वांचो, तापु, खांपटी	दारी, बैरी, न्योगा	तांगखा
नगालैंड	रेंगमा, चंगी, आलूयड्डू	जेलियांग	योद्धा शॉल
मणिपुर	डोल चोलम, थांगटा, पुंग चोलोम, नूपा, रासलीला	खुनुंगईशेई, लाई हराओबा	खंबाना काओ फाबा

स्रोतः https://indianfolkart.org & https://hi.wikipedia.org

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. Delhi

ढाँचे की विभिन्न विकास परियोजनाओं को संचालित किया जा रहा है और अभी तक पर्यटन अवसंरचना के विकास हेतु भारत सरकार द्वारा 24 राज्यों में 39 परियोजनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी रुर्बन मिशनः यह मिशन ग्रामीण क्षेत्रों में एकीकृत परियोजना आधारित बुनियादी अवसंरचना को विकसित करने हेतु ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा वर्ष 2016 में शुरू किया गया है। इसका उद्देश्य स्थानीय आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करना, बुनियादी सेवाओं को बढ़ाना और सुनियोजित रुर्बन क्लस्टर बनाना है। इसके तहत ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु देशभर के 23 राज्य/संघशासित क्षेत्रों में 84 पर्यटन अवसंरचना परियोजनाएं चलाई जा रही हैं जिनमें टूरिस्ट लॉज, कृषि पर्यटन, पर्यटन स्थलों का सौंदर्यीकरण, पर्यटन पार्कों का निर्माण, पर्यटन हेतु रिवरफ्रंट विकास, पर्यटन स्थलों के किनारे वॉक वे और बाजार हाट, पर्यटक स्थलों के पास सार्वजनिक सुविधा सह कैफेटेरिया आदि का विकास किया जा रहा है।

आत्मनिर्भर भारत के सपने के रूप में ग्रामीण पर्यटनः भारत सरकार द्वारा देश को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में 13 मई, 2020 को 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान शुरू किया गया है। यह अर्थव्यवस्था, बुनियादी ढांचे, व्यवस्था, जनसांख्यिकी और मांग के पांच स्तंभों पर टिका हुआ है और स्थानीय उत्पादों के लिए मुखर होने का आह्वान करता है। यह देश को समृद्ध, मज़बूत और विकसित करने के लिए व्यक्तियों और उद्यमों को सशक्त बनाने पर केंद्रित है। चूंकि देश का एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण है और बहुसंख्यक आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। वास्तव में ग्रामीण जीवन ही देश की अद्वितीय सांस्कृतिक विविधता का केंद्र है, जहां आप 'असली भारत' से मुखातिब होते हैं। इसलिए ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विकास करना, ग्रामीण क्षेत्रों में रोज़गार और आजीविका के अवसर पैदा करना "आत्मनिर्भर भारत" के तहत आवश्यक घटक के रूप में स्थापित किए गए हैं। गांव देश की संस्कृति, परम्परा, शिल्प, विरासत और कृषि प्रथाओं के भंडार भी हैं। पर्यटन के माध्यम से स्थानीय उत्पादों का विकास, विस्तार व प्रचार ग्रामीण क्षेत्रों में आय व रोज़गार पैदा कर सकता है और स्थानीय समुदायों, युवाओं और महिलाओं को सशक्त बना सकता है, अर्थात् ग्रामीण क्षेत्र 'आत्मनिर्भर भारत' की दृष्टि को पूरा कर सकता है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन रोकने, गरीबी उन्मूलन और सतत विकास में मदद मिलेगी।

उपर्युक्त प्रयासों के साथ ही भारत सरकार ने ग्रामीण पर्यटन को संपूर्णता से प्रोत्साहित करने हेतु जून, 2021 में ग्रामीण पर्यटन के लिए रणनीति का मसौदा भी जारी किया है। इसके अलावा, सरकार पर्यटन अवसंरचना के लिए केंद्रीय एजेंसियों को सहायता प्रदान कर रही है। पर्यटन परियोजनाओं के लिए व्यवहार्यता अंतराल योजना और चैंपियन सेवा क्षेत्र योजना चला रही है। महिलाओं के लिए सुरक्षित पर्यटन गंतव्य और प्रतिष्ठित पर्यटक गंतव्यों का विकास कर रही है। सेवा प्रदाताओं के लिए क्षमता निर्माण के साथ आतिथ्य सहित घरेलू पर्यटन का संवर्धन व प्रचार भी कर रही है। फिलहाल देश में ग्रामीण पर्यटन को विकसित करने के लिए भारत सरकार की रणनीति निम्नलिखित स्तंभों पर केंद्रित हैः

मध्य प्रदेश के बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान में बंगाल टाइगर्स

- ग्रामीण पर्यटन हेतु आदर्श नीतियां और सर्वोत्तम प्रथाएं
- ग्रामीण पर्यटन हेतु डिजिटल प्रौद्योगिकियां और मंच
- ग्रामीण पर्यटन हेतु क्लस्टर विकसित करना
- हितधारकों की क्षमता का निर्माण
- ग्रामीण पर्यटन के लिए विपणन सहायता
- प्रशासन और संस्थागत ढांचे का विकास

ग्रामीण पर्यटन के विकास की संभावनाएं: भारत अपने आकार और क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व का सातवां और एशिया का तीसरा सबसे बड़ा देश है। यह धार्मिक विविधता के साथ लोगों को सहिष्णुता भी प्रदान करता है। यहां दुनिया के प्रमुख धर्म हिंदू, इस्लाम, ईसाई, सिख, जैन, बौद्ध, पारसी और यहूदी धर्म प्रचलित हैं। यह दुनिया में हिंदू, सिख, जैन और बौद्ध जैसे प्रमुख धर्मों का जन्मस्थान भी है। इसके अलावा, भारत बहुमुखी विविधताओं को धारित करता है, संस्कृति, नस्ल, जातीय समूहों, भाषाओं, धर्म, परम्पराओं, रीति–रिवाज़ों, खाद्य पदार्थों, संगीत, नृत्य, वास्तुकला, वनस्पतियों और जीवों की विविधता की मेज़बानी करता है, यह एशिया के सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक है।

नई चीज़ों को जानने, विशिष्ट ग्रामीण अभिव्यक्तियां, सहज जीवनशैलियाँ, व्यंजनों, लोककलाएं, लोकनृत्य, संस्कृतियों, परम्पराओं आदि का अनुभव करने के लिए 'अनुभवात्मक पर्यटन' की प्रवृत्ति बढ़ रही है। आज यात्री अद्वितीय अनुभव प्राप्त करने के लिए बड़ी दूर तक या अज्ञात स्थानों पर जाने के लिए तैयार हैं। आज भी गाँवों की हवा शहरों की दवा का पर्याय है, बड़े शहर की भागदौड़ से दूर गांव में जीवन की धीमी गति एक ऐसा अनुभव है जो खुद को फिर से जीवंत कर सकता है। ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं में अद्वितीय कला और शिल्प के व्यवसायी हैं जो शहरों में मुश्किल से आते हैं। ग्रामीण पर्यटन निकटता से संबंधित विशिष्ट क्षेत्रों जैसे इको पर्यटन, कृषि पर्यटन, साहसिक पर्यटन आदि के अनूठे अनुभवों को प्रदर्शित करता है, जो देश में स्थायी पर्यटन को बढ़ावा देने का एक बड़ा अवसर प्रदान करता है।

भारत में प्राकृतिक सौंदर्य की अनमोल विरासत है। सुंदर जलवायु परिस्थितियाँ और जैव विविधता, मुख्य ग्रामीण क्षेत्रों के अलावा, पर्यटकों के लिए तटीय, हिमालयी, मौसमी वन और रेगिस्तान आकर्षण केंद्र रहे हैं। साथ ही, इको टूरिज़्म, प्राकृतिक रिज़र्व, वाइल्ड लाइफ टूरिज़्म की अपार संभावनाएं हैं। भारतीय वन्यजीव संस्थान के अनुसार देश में 97 संरक्षण रिज़र्व, 214 सामुदायिक रिज़र्व, 566 वन्यजीव अभयारण्य, 52 टाइगर रिज़र्व, 18 बायोस्फीयर रिज़र्व, 32 हाथी रिज़र्व, 467 महत्वपूर्ण पक्षी क्षेत्र, 104 राष्ट्रीय उद्यान हैं। इन्हें पर्यटन के हिसाब से विकसित और संरक्षित किया जा सकता है।

देश के आदिवासी क्षेत्र भी आकर्षण के केंद्र रहे हैं। देश में जातीय समूहों के रूप में मान्यता प्राप्त 705 जनजातियां आवासित हैं और पूर्वोत्तर भारत इनकी समृद्ध विरासत को बड़े पैमाने पर संरक्षित किए हुए है। मध्य प्रदेश भारत में सर्वाधिक आदिवासी आबादी वाला राज्य है। इसके बाद जनजातीय आबादी वाले शीर्ष राज्यों में ओडिशा, महाराष्ट्र, राजस्थान, छत्तीसगढ़, गुजरात, झारखंड आदि शामिल हैं जहां आदिवासी संस्कृति पर आधारित पर्यटन विकास की अपार संभावनाएं विद्यमान हैं।

जल आधारित पर्यटन का भी अपना विशेष महत्व है। नदियों, झीलों, जलप्रपातों के किनारे दुनियाभर में कई पर्यटन स्थलों का विकास हुआ है और भारत भी इसका अपवाद नहीं है। देश में कई क्षेत्र जलीय पर्यटन के रूप में स्थापित हो चुके हैं, जैसे ओडिशा में चिल्का झील, बरकुल, धबलेश्वर, बड़ाघाघरा जलप्रपात, कटक के सुबरनापुर गांव के पास अंसुपा झील, हरियाणा की बड़खल झील, माउंट आबू की नखी झील, तमिलनाडु की ऊंटी झील जबकि कर्नाटक का शिवसमुद्र और जोग, गोवा का दूधसागर, केरल का अथिरापल्ली, ओडिशा का बरेहीपानी, तमिलनाडु का होगेनक्कल, आंध्र प्रदेश का तालकोना, हिमाचल प्रदेश का रुद्रनाग, छत्तीसगढ़ का चित्रकोट, मध्य प्रदेश का धुंआधार आदि जलप्रपात जलीय पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध हो चुके हैं।

भारत में 8 प्रमुख नदी प्रणालियाँ हैं, जिनमें 400 से अधिक नदियाँ हैं और इनके किनारे हज़ारों गांव आवासित हैं। इन नदियों का सांस्कृतिक महत्व उजागर करने के साथ इनमें रिवर राफ्टिंग फिलक्स, जलप्रपात और झरने आदि गांवों के नज़दीक विकसित कर ग्रामीण पर्यटन के साथ जोड़ा जा सकता है। इसके अलावा, देश में हजारों झीलें, झरने और जलप्रपात हैं, देश में सैकड़ों आर्द्रभूमियों के साथ 49 रामसर आर्द्रभूमि स्थल हैं। इनमें जल आधारित पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं। इसी तरह, भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा 106 तटीय और समुद्री स्थलों की पहचान की गई है, इनमें से 62 पश्चिमी तट और 44 पूर्वी तट में हैं, इन्हें पर्यटन के हिसाब से विकसित और संरक्षित किया जा सकता है।

भारत ऊंचे पहाड़ों से लेकर गहरी घाटियों, चौड़े नीले काले सागरों, खारे लैगून, शांतिपूर्ण प्राकृतिक बैकवॉटर, सुरम्य विशाल रेगिस्तान, हरे–भरे और घने जंगलों के साथ प्राकृतिक संसाधनों का खजाना है। मानव निर्मित स्मारक, किले, महल, सम्पदा, संग्रहालय, रिसॉर्ट और धार्मिक रूचि के स्थान आदि भारत को पर्यटन का बहुआयामी केंद्र बनाते हैं। समृद्ध आतिथ्य, अनूठी संस्कृति और विभिन्न प्रकार के व्यंजन जो प्रत्येक स्थान प्रदान करते हैं, पर्यटन के अनुभव को बढ़ाते हैं। यह वैश्विक पर्यटकों को सभी प्रकार के पर्यटन अवसर प्रदान करता है और स्वाभाविक रूप से दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित करता है। भारतीय पर्यटन उद्योग के पास यहां आने वाले सभी पर्यटकों के लिए कुछ न कुछ है।

संक्षेप में, ग्रामीण पर्यटन अवसरों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है, जैसे नौकरियों का सृजन, आजीविका परिमार्जन, व्यापार के नए अवसर और पोषणीय पर्यटन का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। अप्रयुक्त ग्रामीण संस्कृति और विरासत का सतत संवर्धन,

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. ★ Delhi ★

अदूषित प्राकृतिक और ग्रामीण शांति, स्वदेशी ज्ञान प्रणाली, कृषि पर्यटन, पारिस्थितिकी पर्यटन, साहसिक पर्यटन, अवकाश पर्यटन, समुद्री पर्यटन, स्वयंसेवी पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन सर्किट आदि में विकास और विस्तार की अपार संभावनाएं निहित हैं।

भारतीय गांवों में आगंतुकों को पेश करने के लिए अद्वितीय संस्कृति, शिल्प, संगीत, नृत्य और विरासत है, बुनियादी ढांचे के विस्तार से सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में भी संपर्कता बढ़ रही है, ग्रामीण पर्यटन स्थानीय कला और शिल्प को पुनर्जीवित कर सकता है और व्यवहार्य पारंपरिक व्यवसायों को विलुप्त या विस्थापित होने से रोक सकता है। यह ग्रामीण क्षेत्रों के पुनर्विकास और ग्रामीण जीवन को फिर से जीवंत करने में मदद करेगा। आगंतुकों के साथ विचार विमर्श से उनके ज्ञान क्षितिज का विस्तार होगा। भारत अनगिनत लोक कलाओं का घर है जो सदियों से पीढ़ी–दर–पीढ़ी चली आ रही हैं और देश की करीब 50 पारंपरिक लोक कलाएं अपनी वैश्विक पहिचान की ओर अग्रसर हैं।

पर्यटन विकास की उच्च संभावना वाले गांवों के समूहों की पहचान की जा सकती है, जिनके इर्द–गिर्द विभिन्न हिस्सों में ग्रामीण पर्यटन को विकसित किया जा सकता है। जैसे स्थानीय शिल्प और व्यंजन, लोक संगीत, नृत्य, कठपुतली शो, स्ट्रीट ड्रामा/थिएटर, कृषि पर्यटन, जैविक खेती, पारिवारिक आवास, हर्बल उत्पाद, चाय बागान, योग और ध्यान केंद्र, गांव के आसपास इको जोन, ग्रामीण खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रम, राष्ट्रीय उद्यान, वन्यजीव अभ्यारण्य, अनूठी आदिवासी संस्कृति आदि को विकसित कर मौजूदा पर्यटन सर्किट से निकटता कायम की जा सकती है।

ग्रामीण पर्यटन के साथ कृषि–पर्यटन, हरित पर्यटन, पोषणीय पर्यटन और पारिस्थितिक पर्यटन परस्पर संबंधित हैं। ग्रामीण पर्यटन की अवधारणा यात्रियों के बीच तेजी से लोकप्रियता हासिल कर रही है। भारत तेजी से शहरीकरण की ओर बढ़ रहा है, लेकिन शहरी परिवेश पांच सितारा होटलों, मॉल और बाजारी व्यवस्थाओं से आच्छादित हैं, जो शहरी पर्यटकों की रुचि के क्षेत्रों की पेशकश के बिल्कुल विपरीत हैं, क्योंकि जो लोग पहले से ही शहरी जीवनशैली से तनावग्रस्त हैं और 'प्रकृति की गोद' में वापस आने की इच्छा रखते हैं, उनके लिए ग्रामीण पर्यटन पहली पसंद के रूप में उभर रहा है। ग्रामीण पर्यटन 'शहरीकरण सिंड्रोम' का मुकाबला करने के लिए एक अमृत के रूप में कार्य करता है। जो लोग भारत की आत्मा की खोज करने में रुचि रखते हैं, उनके लिए 'ग्रामीण पर्यटन' ही एकमात्र विकल्प है।

चूंकि देश के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्रक का हिस्सा गिरावट पर है, इसलिए ग्रामीण भारत को अपनी स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं में विविधता लाने के लिए एक मजबूत, समावेशी, वैकल्पिक व व्यवहार्य क्षेत्र की आवश्यकता है और इस अर्थ में ग्रामीण पर्यटन व्यवहार्य विकल्प के रूप में उभर रहा है। ग्रामीण पर्यटन को दुनिया में कई अविकसित, उपेक्षित दूरस्थ क्षेत्र और पिछड़े क्षेत्र विकास के साधन के रूप में उपयोग कर रहे हैं। ग्रामीण–शहरी भारत के बढ़ते विभाजन में ग्रामीण पर्यटन आजीविका और विकास के विकल्प प्रदान कर विभाजन और गरीबी की गंभीरता को कम कर सकता है, क्योंकि यह सेवा निर्माता और सेवा प्रदाता दोनों के रूप में कार्य करता है। ग्रामीण पर्यटन से न केवल आय के अतिरिक्त या वैकल्पिक स्रोत उत्पन्न होते हैं बल्कि विभिन्न उद्यमशील गतिविधियों व स्वरोजगार के लिए दरवाजे भी खुलते हैं। इसकी मूल अवधारणा ग्रामीण उद्यमों, आय सृजन, रोजगार अवसरों, बुनियादी ढांचे के लिए निवेश, ग्रामीण कला और शिल्प विकास को प्रोत्साहित करने के साथ पर्यावरण और विरासत को संरक्षित करना है।

देश की करीब 70 प्रतिशत आबादी ग्रामीण है जो 6.64 लाख गांवों में रहती है और प्रत्येक गांव में कोई न कोई विशिष्टता छिपी हुई है। इनकी अज्ञात विशिष्टताओं को विकसित करके ग्रामीण पर्यटन को विस्तारित किया जा सकता है। जैसे 'सहायता पर्यटन' संगठन ने 1991 में पश्चिम सिक्किम में एक गांव के सभी 40 परिवारों को शामिल करके गांव आधारित पर्यटन पहल शुरू की थी। उन्होंने ग्रामीण आवास की पेशकश की जो ट्रैकर्स या पर्वतारोहियों जैसे विशेष रुचि वाले यात्रियों के लिए स्वच्छ, आरामदायक और लागत प्रभावी थे। इस पहल ने उस गाँव की आय में अभूतपूर्व वृद्धि की है और अब तक इस परियोजना को पूर्वी और पूर्वोत्तर भारत में 22 स्थानों पर दोहराया गया है, जो अद्वितीय स्थानीय स्वाद के साथ समृद्ध ग्रामीण पर्यटन का अनुभव प्रदान करता है।

Elite Academy For Education & Training Pvt. ★ Delhi ★

कुल मिलाकर ग्रामीण पर्यटन देश के गांवों में संपन्नता के द्वार खोल सकता है और हमारे प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर भारत का विजन साकार कर सकता है, बशर्ते गावों में मौजूद पर्यटन की संभावनाओं का यथोचित परिमार्जन किया जाए और इसके लिए गावों का बहुमुखी विकास करना आवश्यक है। गावों का बहुआयामी विकास ग्रामीण पर्यटन की आवश्यक शर्त तो है ही, यह महात्मा गांधी का सपना भी रहा है कि "हम एक ग्रामीण सभ्यता के उत्तराधिकारी हैं, हमारे देश की विशालता, आबादी का विस्तार, देश की अवस्थिति और जलवायु इसे एक ग्रामीण सभ्यता बनाते हैं।"....."अगर गांव नष्ट हो गए तो भारत नष्ट हो जाएगा"। इसलिए गांवों को सुरक्षित और आनंदमयी पर्यटन स्थल में परिवर्तित कर गांवों का संरक्षण किया जाए और आने वाली पीढ़ियों के लिए ग्रामीण जीवनशैली को संभालकर रखा जाए। यह सब ग्रामीण पर्यटन के विकास और विस्तार से ही संभव हो सकता है, जो एक तरफ ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार का माध्यम बनेगा, वहीं विभिन्न जीवनशैली के लोगों को करीब लाकर राष्ट्रीय एकता को मजबूत करेगा।

(लेखक उत्तर प्रदेश सरकार के गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्वी, चित्रकूट के अर्थशास्त्र विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं।)

ईमेलः gajendra10.1.88@gmail.com

अलौकिक सौंदर्य से परिपूर्ण पूर्वोत्तर भारत

–दुर्गानाथ स्वर्णकार

देश के दूसरे पर्वतीय पर्यटन स्थलों की तुलना में पूर्वोत्तर भारत का अलौकिक सौंदर्य अब भी बहुत से पर्यटन प्रेमियों के लिए अनदेखा, अनजाना और दिव्यता से परिपूर्ण है। पूर्वोत्तर भारत पहाड़ों के अनुपम सौंदर्य, शांत नरम बहने वाली ब्रह्मपुत्र नदी, कामाख्या मंदिर, काजीरंगा के एक सींग वाले गैंडों, डिबरूगढ़ के विशाल चाय बागानों, सबसे बड़े नदी द्वीप माजुली, नगालैंड की जनजातीय संस्कृति, मिज़ोरम के पहाड़ के किनारे, मणिपुर के शास्त्रीय नृत्य और पारंपरिक खेल, अरुणाचल का सूर्योदय, दर्रे, मेघालय अपने शाश्वत सौंदर्य एवं झरने और त्रिपुरा त्रिपुर सुंदरी मंदिर के लिए विशेष रूप से जाना जाता है।

तपती गर्मी के जिन दिनों में आप यह ताज़ा अंक पढ़ रहे होंगे तो आपके मन में लू के थपेड़ों से दूर कहीं सुदूर पहाड़ों की ठंडी वादियों में सैर का ख़याल ज़रूर होगा। साथ ही ट्रैफिक, प्रदूषण और भीड़भाड़ से कहीं दूर शांति की तलाश भी मन में होगी। ऐसे में पूर्वोत्तर भारत आपके लिए सबसे मुफीद मंज़िल हो सकती है। देश के दूसरे पर्वतीय पर्यटन स्थलों की तुलना में पूर्वोत्तर भारत का अलौकिक सौंदर्य अब भी बहुत से पर्यटन प्रेमियों के लिए अनदेखा, अनजाना और दिव्यता से परिपूर्ण है। देश के उत्तर–पूर्व के सात राज्यों असम, अरुणाचल प्रदेश, नगालैंड, मेघालय, मणिपुर, मिज़ोरम और त्रिपुरा को सेवन सिस्टर्स यानी सात बहनें भी कहा जाता है। सर्दियों का मौसम यहां पर्यटन के लिए सबसे बेहतर है। इन दिनों यहां तापमान अमूमन 15 से 24 डिग्री सेल्सियस के बीच रहता है।

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. Delhi

इन सात राज्यों की सीमाएं एक–दूसरे से सटी हुई हैं। सिक्किम पूर्वोत्तर में शामिल आठवां राज्य है जिसे इन सात बहनों के भाई के रूप में भी जाना जाता है। कई मनोरम झीलों की खूबसूरत दृश्यावली से भरे–पूरे इस छोटे से राज्य सिक्किम ने आधुनिकीकरण के साथ खूब कदमताल की है। राजधानी गंगटोक को भारत के खूबसूरत हिल स्टेशनों में से एक माना जाता है। यह शहर सांस्कृतिक और प्राकृतिक सुंदरता के साथ–साथ आधुनिकीकरण का एक आदर्श समावेश है। सिक्किम में माउंट कंचनजंगा की सम्मोहनकारी झलक, त्सोंगमो झील, जुलुक, कंचनजंघा नेशनल पार्क, लाचेन, लाचुंग और युमथांग घाटी, चीन की सीमा के करीब 17000 फीट की ऊंचाई पर स्थित गुरुडोंगमार झील और भारत चीन व्यापार का द्वार नाथुला पास खासतौर पर दर्शनीय हैं।

असम

असम आबादी की दृष्टि से पूर्वोत्तर का सबसे बड़ा राज्य है। इसे पूर्वोत्तर का प्रवेशद्वार भी कहा जाता है। अपनी प्राकृतिक

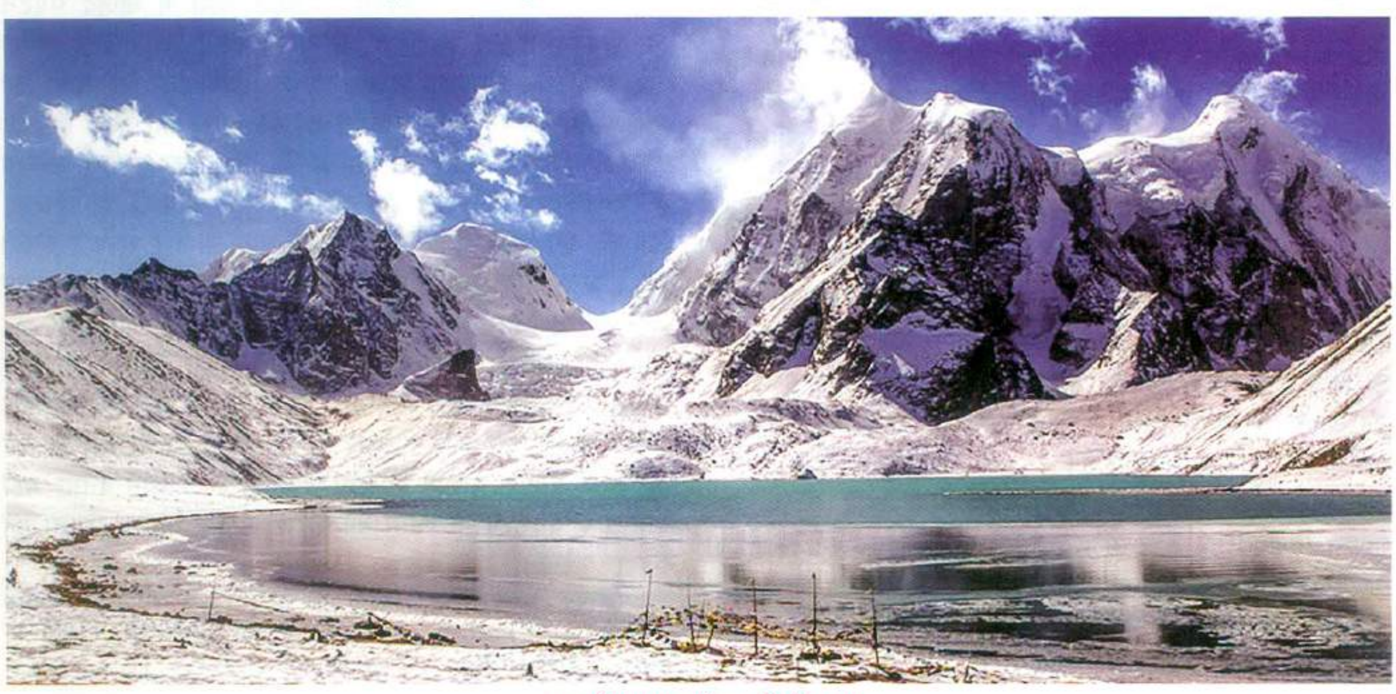

गुरुडोंगमार झील, सिक्किम

सुदंरता, गौरवशाली इतिहास, चाय बागानों, दुर्लभ प्रजाति के एक सींग वाले गैंडे के लिए विख्यात असम को मुख्यतः भौगोलिक क्षेत्रों ब्रह्मपुत्र घाटी और बराक घाटी में बांटा जा सकता है। असम सात राज्यों मेघालय, नगालैंड, मणिपुर, मिज़ोरम अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, और पश्चिम बंगाल तथा तीन देशों बांग्लादेश, भूटान, और म्यांमार के साथ से सीमा साझा करता है। निचले असम में प्रमुख शहर गुवाहाटी जबकि डिबरूगढ़ ऊपरी असम का सबसे बड़ा शहर है। गुवाहाटी घूमने की शुरुआत लोग अक्सर कामाख्या देवी मंदिर से करते हैं। राजधानी दिसपुर (गुवाहाटी शहर) के निकट नीलांचल की पहाड़ी पर स्थित कामाख्या मंदिर देश के 51 शक्तिपीठों में से प्रमुख है। अंबुबाची मेला इस मंदिर का मुख्य वार्षिक उत्सव है जिसके लिए दुनिया भर के हज़ारों पर्यटक आते हैं। सुबह या शाम को ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे सैर करना मन को शांति से भर देता है। गुवाहाटी और इसके आसपास के अन्य पर्यटन स्थलों में ब्रह्मपुत्र नदी के द्वीप पर स्थित उमानंद मंदिर, असम राज्य संग्रहालय, बच्चों की मौज–मस्ती के लिए आकॉलैंड वॉटर पार्क एवं गुवाहाटी चिड़ियाघर, पोबितोरा अभयारण्य, कला–संस्कृति और इतिहास में रुचि रखने वालों के लिए राजकीय विज्ञान केंद्र संग्रहालय, श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र और साथ ही दीपोर बील (मीठे पानी की झील) प्रमुख हैं।

सुआलकुची, असम में ब्रह्मपुत्र पर नावखेल

गुवाहाटी से 346 किलोमीटर दूर ज़ोरहाट के करीब माजुली द्वीप विश्व में किसी भी नदी पर स्थित सबसे बड़ा द्वीप है जहां आप नाव की सवारी का आनंद लेते हुए पहुंच सकते हैं। माजुली द्वीप वैष्णव और क्षत्रिया संस्कृति का केंद्र है। हॉफलोंग असम का सुरम्य हिल स्टेशन है जहां प्रकृति के इंद्रधनुष को देखा जा सकता है। यहां से 9 किलोमीटर दूर स्थित जतिंगा में बड़ी संख्या में प्रवासी पक्षी आते हैं और ऐसी जनश्रुति है कि वे वापस जाने की बजाए सामूहिक आत्महत्या कर लेते हैं, जो एक रहस्य है।

वन्य जीवन की विविधता भी जंगल में पर्यटन के शौकीनों को असम की ओर खींच लाती है। गुवाहाटी से 193 किलोमीटर दूर स्थित काजीरंगा नेशनल पार्क में हाथी, बाघ, तेंदुआ, हिरण, सांभर, सांप और अन्य वन्य प्राणियों के साथ बड़ी संख्या में विदेशी प्रवासी पक्षी और घरेलू पक्षी को अपने प्राकृतिक पर्यावास में देखा जा सकता है। पार्क पक्षी इनमें विशेष है लेकिन सबसे बड़ा आकर्षण दुर्लभ प्रजाति का एक सींग वाला गैंडा ही है जो पूरी दुनिया में सिर्फ असम में मिलता है। इसीलिए कांजीरंगा नेशनल पार्क एक विश्व धरोहर स्थल है। इसके अलावा, निचले असम में एक और विश्व धरोहर मानस राष्ट्रीय उद्यान है जिसे देखने के लिए देश भर के लोग आते हैं। यहां गैंडे, बाघ, हाथी, जंगली भैंसें, बारहसिंघा और दुर्लभ और लुप्तप्राय वन्यजीव जैसे खुरदुरी पीठ वाले कछुए, हेपीड खरगोश, गोल्डन लंगूर और पैगी हॉग देखे जा सकते हैं।

Rite Academy For Education & Training Pvt.Ltd. * Delhi *

असम देश की चाय की राजधानी है और इसका प्रमुख केंद्र डिबरूगढ़ है। यहां पर आपको विशाल बागानों की सैर से लेकर चाय की प्रोसेसिंग और इसकी खरीददारी का मौका मिलेगा। यहां का जगन्नाथ मंदिर अत्यंत सुंदर है और यह पुरी के जगन्नाथ मंदिर की प्रतिकृति है। राधा कृष्णा मंदिर भी डिबरूगढ़ के सबसे लोकप्रिय स्थानों में से एक है। यहां आकर, आपको आध्यात्मिक शांति का अनुभव होगा। इसके अलावा, नामफाके मोनेस्ट्री में आप इसके शांत वातावरण, प्राकृतिक सौंदर्य और आध्यात्मिक ऊर्जा को महसूस कर सकते हैं।

सिलचर असम के प्रमुख शहरों में से एक है जो बराक नदी के किनारे पर स्थित है। मिज़ोरम से आने पर यह असम का प्रवेश द्वार है। यहां की ज़्यादातर आबादी बंगाली है। सिलचर से 17 किलोमीटर दूर सुप्रसिद्ध कांचाकांति देवी मंदिर है जिसकी बड़ी मान्यता है। भुबन महादेव मंदिर, इस्कॉन मंदिर, शहीदों का मकबरा और डिमसा साम्राज्य के खंडहरों के प्रसिद्ध खासपुर, मनिहरन सुरंग अन्य दर्शनीय स्थल हैं। तेजपुर को असम की सांस्कृतिक राजधानी कहा जाता है। मैदानों, पहाड़ों और नदी से समृद्ध इस शहर में पहले असमिया फिल्म निर्माता ज्योति प्रसाद अगरवाला, क्रांतिकारी गायक कलागुरु बिष्णु प्रसाद राभा तथा प्रसिद्ध फिल्म निर्माता और कलाकार फानी शर्मा का जन्म हुआ था। यह एक छोटा और आपाधापी से दूर शहर है जो आपको अलग ही शांति देता है। यहां ऊंचाई पर स्थित अग्निगढ़ के शीर्ष से आप संपूर्ण शहर का मनोरम दृश्य देख सकते हैं।

एक सींग वाला गेंडा,काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान

असम में नए साल की शुरुआत का प्रतीक प्रसिद्ध त्यौहार बोहाग बिहू अप्रैल के मध्य में मनाया जाता है। इस दौरान यहां आकर इस त्यौहार का हिस्सा बनना और बिहू नृत्य को साक्षात देखना सम्मोहनकारी अनुभव है जिसके लिए बड़ी संख्या में सैलानी आते हैं। अक्टूबर में मनाया जाने वाला दुर्गा पूजा एक और खास त्योहार है। असम जाने पर यादगार के रूप में यहां का सुप्रसिद्ध गमछा, झापी(बांस से बनी टोपी), बिहू पीठा(मिठाई), लकड़ी के गैंडे और बांस तथा अन्य काष्ठ कला का सामान एवं चाय आदि अपने परिवार और दोस्तों के लिए लेकर अवश्य जाएं।

अरुणाचल प्रदेश

उगते सूर्य की धरती कहा जाने वाला अरुणाचल प्रदेश चीन, म्यांमार और भूटान के साथ अंतरराष्ट्रीय सीमाओं को साझा करता है। सबसे पहले सूर्योदय देखने वाले इस राज्य में आप सूर्य की अद्वितीय छटा देख सकते हैं। ऊंचे पहाड़ों और गहरी घाटियों के रोमांचक और अनुपम नज़ारे भी यहां भरपूर हैं। एक रोचक तथ्य यह है कि अरुणाचल प्रदेश में 26 प्रमुख जनजातियां और 100 से अधिक उप–जनजातियां हैं और सबकी अलग–अलग बोली और संस्कृति है। लेकिन इतनी विविधता होने के बाद भी अरुणाचल में हिन्दी संवाद की प्रमुख भाषा है।

यहां के समाज और संस्कृति पर बौद्ध धर्म का गहरा प्रभाव है और यहां बड़ी संख्या में बौद्ध मठ हैं। इनमें तवांग मठ, एनी गोम्पा मठ, बॉमडिला मठ प्रमुख हैं। लोहित ज़िले में स्थित तेजू खूबसूरत वादियों से घिरा और नदी किनारे का छोटा शहर है। यहां प्रसिद्ध परशुराम कुंड है जिसमें पवित्र डुबकी लगाने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु आते हैं। पूर्वी सियांग ज़िले में स्थित सियांग नदी एक और खास पर्यटन स्थल है जहां कलकल बहता निर्मल जल, चौड़ा पाट और साथ ही बादलों को चूमते पहाड़ मंत्रमुग्ध कर देते हैं। बहुत कम भीड़ होने के कारण यह स्थान आपको परम शांति का अनुभव देगा। कैलाश मानसरोवर से निकलने वाली सियांग नदी ही असम पहुंचकर ब्रह्मपुत्र बन जाती है।

अरुणाचल प्रदेश रोंगटे खड़े करने वाले रोमांचक पर्यटन का सबसे मुफीद हैं क्योंकि यहां आपको कई जगह ट्रेकिंग, एनलिंग, राफ्टिंग और पैरा ग्लाइडिंग के अवसर मिलेंगे। तवांग ज़िले में चीन की सीमा पर स्थित बुम ला पास का अनुभव भी बेहद रोमांचकारी है। यहां से आप चीनी सेना की चौकियों को भी देख पाएंगे। वन्य जीव प्रेमियों के लिए वेस्ट कामेंग ज़िले की दिरांग वैली में स्थित देश के एकमात्र राष्ट्रीय याक अनुसंधान केंद्र का भ्रमण एक यादगार अनुभव बन सकता है। इतिहास प्रेमियों को भारतीय सेना के तवांग युद्ध स्मारक की यात्रा अवश्य करनी चाहिए जो 1962 के भारत–चीन युद्ध के शहीदों को समर्पित है। इसके अलावा, मौलिंग राष्ट्रीय उद्यान, नूरानंग फॉल्स, नामदाफा राष्ट्रीय उद्यान अरुणाचल प्रदेश के अन्य प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में से हैं।

मिज़ोरम

साक्षरता दर में देश के अग्रणी राज्य मिज़ोरम का प्राकृतिक सौंदर्य, नृत्य, त्यौहार, हस्तशिल्प वस्तुएं व आरामदायक जलवायु इसकी खासियत है। मिज़ोरम का अर्थ है पहाड़ों की धरती। यहां की सुंदर पहाड़ियों के कारण इसे 'हाइलैंडर्स का घर' भी कहा जाता है। मिज़ोरम की अंतरराष्ट्रीय सीमा बांग्लादेश और म्यांमार से लगती है और यहां की संस्कृति, वेशभूषा और खानपान म्यांमार से बहुत मिलती–जुलती है। इसीलिए राजधानी आइज़ोल में आपको म्यांमार के उत्पाद आसानी से मिल जाएंगे।

मिज़ोरम कृषि प्रधान राज्य है और यहां के त्यौहार भी कृषि से जुड़े हैं। इनमें बसंत ऋतु का त्यौहार चपचार कुट सबसे प्रमुख है जो मार्च महीने में मनाया जाता है। इसमें पारंपरिक परिधानों, खानपान, नृत्य–संगीत, युद्धकला की अनूठी छटा दिखाई देती है। इसमें भी चेरो या बांस नृत्य सबसे खास आकर्षण है जहां पुरुष ज़मीन पर बैठकर एक–दूसरे के खिलाफ बांस को चलाते हैं और महिलाएं बेहतरीन कदमताल के साथ नंगे पैर नृत्य करती हैं।

कभी असम का हिस्सा रहे और ईसाई– बहुल जनसंख्या वाले इस राज्य के लोगों की सरलता आपका दिल जीत लेगी।

शहर के बाहरी इलाकों में कई जगहों पर ऐसी दुकानें देखने को मिलती हैं जहां कोई दुकानदार नहीं होता। मूलतः किसानों द्वारा संचालित इन दुकानों में फल–सब्जी आदि का मूल्य अंकित होता है और आप वहां रखे डिब्बे में पैसा डालकर अपनी ज़रूरत का सामान ले सकते हैं। यहां का समाज महिलाओं को अत्यधिक आदर देता है और ज़्यादातर दुकानों का संचालन और स्वामित्व महिलाओं के पास है। राजधानी आइज़ोल रात को ऐसी दिखाई देती है जैसे धरती पर हज़ारों सितारे टिमटिमा रहे हों। हालांकि यहां रात को दुकानें जल्द बंद हो जाती हैं। यहां का मौसम इतना खुशनुमा है कि एसी यहां बहुत कम घरों में देखने को मिलेगा। आइज़ोल के संग्रहालय में मिज़ोरम की पारम्परिक सभ्यता और संस्कृति से संबंधित दुर्लभ वस्तुओं के बारे में देख और जान सकते हैं।

मिज़ो कलाकार

'एंथूरियम' मिज़ोरम का राज्य पुष्प है और हर साल सितंबर–अक्टूबर में आइज़ोल से 20 किलोमीटर दूर स्थित हैरिटेज गांव रिएक में होने वाले एंथूरियम फेस्टिवल में आप इस फूल के विविध रंग और प्रजातियां एक ही स्थान पर देख सकते हैं। साथ ही, पारंपरिक नृत्य, हस्तशिल्प, युद्ध कला और मिज़ोरम की विभिन्न जनजातीय संस्कृतियों की सुंदर झलक भी पा सकते हैं। आइज़ोल से 50 किलोमीटर दूर स्थित और जंगलों से घिरी मुईफांग पहाड़ी से प्रकृति और बादलों की आवाजाही को निहारना भी बेहद आनंदपूर्ण अनुभव है। आइज़ोल से 87 किलोमीटर दूर स्थित राज्य की सबसे बडी झील तामदिल भी काफी प्रसिद्ध है। ट्रेकिंग के लिए फांगशुई और झरनों के लिए वानतांग भी अच्छे आकर्षण हैं। यहां से यादगार के तौरपर आप मिज़ो शॉल ले जाना न भूलें। यह विविध रंगों और डिज़ाइन में उपलब्ध है और यहां की महिलाओं के पारंपरिक परिधान का अहम हिस्सा है।

मणिपुर

मणिपुर का अर्थ है मणियों की भूमि या रत्नों की धरती। अपने नाम के अनुरूप यहां की धरती कला, संस्कृति, साहित्य, इतिहास, नृत्य, आध्यात्म, नदी, पहाड़, पठार, जंगल और खेल प्रतिभाओं के मणि–माणिक्यों से समृद्ध है। म्यांमार से अंतरराष्ट्रीय सीमा साझा करने वाला मणिपुर एक अण्डाकार घाटी में स्थित है। पूर्वोत्तर के इस सुंदर राज्य का अधिकांश क्षेत्रफल जंगल और पहाड़ों वाला है। राजधानी इम्फाल मैदानी इलाके में स्थित है जिसकी सुंदर घाटियां और लैंडस्केप आपको खूबसूरत और यादगार अनुभव देते हैं। यहां की कम रफ्तार ज़िंदगी में आपको अलग शांति महसूस होगी। राजधानी इम्फाल में कंगला किला, शहीद मीनार, गोविन्दजी मंदिर (वैष्णव मंदिर), मणिपुर ज़ुलोजिकल पार्क, वार सेमेट्री घूमने लायक हैं।

मणिपुर के विष्णुपुर ज़िले में आप दुनिया का एकमात्र फ्लोटिंग राष्ट्रीय उद्यान केबुललैमजाओ नेशनल पार्क देख सकते है। उत्तर–पूर्वी भारत की सबसे बड़ी ताजे पानी की लोकटक झील और इसके बीच में एक उभरे हुए पहाड़ जैसा दिखता सेन्दरा द्वीप भी अनूठा है। मोइरांग में स्थित यह झील इम्फाल से करीब 45 किलोमीटर दूर है। हिरणों की दुर्लभ प्रजाति संगाई, क्लाउडेड तेंदुआ और दुर्लभ 'सिरोयलिलि' भी मणिपुर की शान हैं।

मणिपुरी नृत्य देश के शास्त्रीय नृत्यों में से एक है जो मुख्यतः वैष्णव हिंदू संप्रदाय के प्रसंगों पर आधारित है। इसके अलावा, यहां की रासलीला भी अद्वितीय है जो भगवान कृष्ण और राधा के प्रेम को प्रदर्शित करती है। पुंगचोलोम, नृत्यमाइ नृत्य, खंबा थाबी, नूपा नृत्य भी यहां के पारंपरिक नृत्य हैं। मणिपुर का भाला नृत्य दुनिया भर में प्रसिद्ध है जिसे देखने के लिए दूर–दूर से पर्यटक यहां आते हैं। इसके अलावा, मणिपुरी कुश्ती और तलवारबाजी भी पर्यटकों को दांतों तले उंगली दबाने पर मजबूर कर देती है। मणिपुर की विविधतापूर्ण संस्कृति में 30 से अधिक जनजातीय समुदायों के खान–पान, रहन–सहन और वेषभूषा की अनूठी झलक मिलती है। इसमें पहाड़ी क्षेत्र में रहने वाली नागा और कूकी जनजातियां मुख्य हैं। कहते हैं कि दुनिया को पोलो खेल सिखाने वाला राज्य भी मणिपुर है। मान्यता के अनुसार 18वीं शताब्दी के अंत में यहां अंग्रेजों का आधिपत्य स्थापित होने के बाद पोलो पश्चिमी देशों में प्रसिद्ध हुआ।

नगालैंड

प्राकृतिक सौंदर्य, एक अलग प्रकार की वेशभूषा, त्यौहारों के जश्न, खानपान के विकल्प से लेकर कला और शिल्प में दक्ष, संगीत और नृत्य प्रेमी लोग और सर्वत्र फैले सुंदर पहाड़ों तक अनूठी संस्कृति का धनी प्रदेश है छोटा–सा नगालैंड। नगालैंड की 16 जनजातियों और कई उपजातियों की एक–दूसरे से जुदा जीवन पद्धति और इतिहास को समझना एक रोमांचक अनुभव है। इसकी राजधानी कोहिमा सुंदर हिल स्टेशन है। कोहिमा के आसपास

ट्रेकिंग, हाइकिंग और कैंपिंग जैसे रोमांच का भी लुत्फ उठाया जा सकता है। यह स्थान अंगामी जनजाति का घर है।

कोहिमा की कॉमनवेल्थ वॉर सिमेट्री का भ्रमण आपकी अनिवार्य सूची में होना चाहिए जहां 1400 से अधिक सैनिकों की कब्रें हैं, जो द्वितीय विश्वयुद्ध में बर्मा से भारत पर हमला करने वाले जापानियों से लड़ते हुए मारे गए थे। अन्य प्रमुख आकर्षणों में जपफू पीक और नागा हेरिटेज विलेज शामिल हैं। इस 'हेरिटेज विलेज' का हर घर एक खास जनजाति के दरवाजे, बर्तन, गहने, कपड़े, बिस्तर, कैप सहित कई वस्तुओं को संजोए हुए है और खास बात यह कि हर घर एक–दूसरे से पूरी तरह से अलग है। इसके अलावा, जपफू पीक, जुकोऊ घाटी, कोहिमा राज्य संग्रहालय भी घूमने योग्य हैं।

दीमापुर नगालैंड का एक प्रमुख शहर है और सड़क मार्ग से यह राज्य का प्रवेशद्वार है। नगालैंड प्रकृति और इतिहास प्रेमियों दोनों के लिए समान रूप से रोचक और आनंददायी है। प्रकृति के आंचल में स्थित ऐतिहासिक रूप से समृद्ध 10वीं शताब्दी के कचारी खंडहरों की यात्रा आपको अतीत की दुनिया में ले जाएगी। दीमापुर और इसके आसपास डाइजोफे क्राफ्ट विलेज, रंगपहाड़ रिज़र्व फॉरेस्ट, दीमापुर एओ बैपटिस्ट चर्च, कुकीडोलोंग विलेज भी प्रमुख पर्यटन स्थल हैं। इसके अलावा, एओ जनजाति के बाहुल्य वाला मोककचुंग ज़िला अपनी सम्मोहनकारी पहाड़ियों और नदियों की सुंदरता से आपका दिल जीत लेगा। इस बेहतरीन अनुभव के लिए आपको लोंगखुम, मोकोकचुंग गांव और पार्क, चांगटोंग्या, चुचुयिमलंग, उनगमा गांव जैसी जगहों तक पहुंचना होगा। नगालैंड को और गहराई से जानने के लिए आपको फेकतुएनसांग, तौफेमा गांव, खोनोमा गांव, शीलोई झील जैसे बेहद अनछुए स्थलों का रुख करना चाहिए।

Academy for Education & Training (P) Ltd. Delhi

नगालैंड की दोयांग झील के बारे में बेहद रोचक तथ्य यह है कि यह पक्षी विज्ञानियों की अंतरराष्ट्रीय टीम द्वारा विश्व में अमूर बाज की राजधानी घोषित की गई है। यहां करीब 10 लाख बाज हजारों मील का सफर तय करके साइबेरिया क्षेत्र से दोयांग झील में प्रवास के लिए आते हैं।

नगालैंड त्यौहारों की भूमि है। यहां मनाया जाने वाला हॉर्नबिल फेस्टिवल यहां की कला, संस्कृति और परम्पराओं की जीवंत झलक देता है। आमतौर पर दिसंबर में मनाए जाने वाले इस फेस्टिवल में नगालैंड की सभी 17 जनजातियां हिस्सा लेती हैं। यहां का एक विशिष्ट नागा भोजन एक मांस पकवान, उबले हुए आलू की सब्जी, चावल और अत्यंत तीखी मिर्च की चटनी है। इसके अलावा, उबले हुई स्थानीय साग यहां के खाने का अहम हिस्सा है।

त्रिपुरा

असम, मिज़ोरम और बांग्लादेश से घिरा त्रिपुरा गोवा और सिक्किम के बाद देश का तीसरा सबसे छोटा राज्य है। बांग्ला और ककवार्क यहां की प्रमुख भाषा और बोलियां हैं। सुंदर प्राकृतिक दृश्य, सुहानी जलवायु, बाग, सूर्योदय व सूर्यास्त यहां के आकर्षण हैं जो त्रिपुरा में परम शांति का अहसास देते हैं। चाय, बांस, रबर आधारित उद्योग–धंधे और कुटीर उद्योग यहां जीविका का प्रमुख साधन हैं। मछली, चावल और सब्जियां यहां का मुख्य खान–पान है। त्रिपुरा आकर स्थानीय और अति स्वादिष्ट व्यंजन मुईबोरोक का स्वाद लेना न भूलें जो आपको यहां से जाने पर फिर शायद ही मिले।

नगालैंड में नए बीज बोने की खुशी में मोत्सु त्यौहार मनाते आओ ट्राइब के लोग

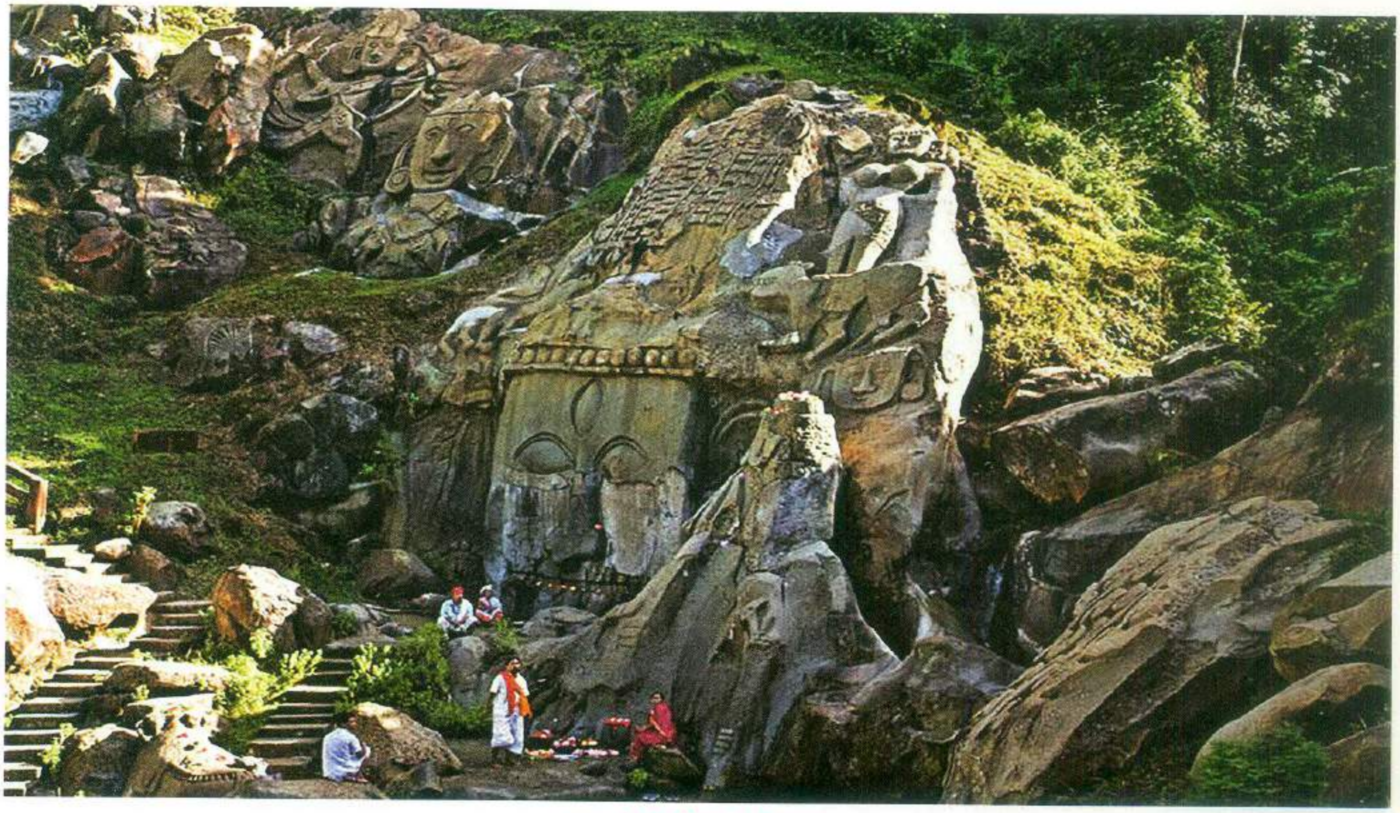

उनाकोटी हिल्स, त्रिपुरा

त्रिपुरा का राजशाही इतिहास भी इसकी विरासत है जिसका वैभव त्रिपुरा की राजधानी अगरतला के उज्वंत पैलेस को देखकर महसूस किया जा सकता है। शहर के मध्य में स्थित इस ऐतिहासिक विरासत की नींव महाराजा राधा किशोर मणिक बहादुर ने सन् 1899–1901 के दौरान रखी थी। ऐसी ही एक और ऐतिहासिक इमारत कुंज भवन है जिसका निर्माण 1917 में महाराजा बीरेंद्र किशोर मनिक बहादुर ने करवाया था। कभी त्रिपुरा के शाही परिवार का निवास रहा सुंदर नीरमहल अगरतला का अनूठा पर्यटन स्थल है। रुद्रसागर झील के बीच में 6 वर्ग किमी. के भूभाग पर बना यह महल न सिर्फ खूबसूरती के लिए बल्कि इंजीनियरिंग कौशल के लिए भी जाना जाता है। इसे 1930 में राजा बीर बिक्रम किशोर देबबर्मण ने बनवाया था।

राज्य संग्रहालय को देखे बिना त्रिपुरा की यात्रा अधूरी है जहां आपको अगरतला के प्राचीन इतिहास, संस्कृति, कला एवं साहित्य से रूबरू होने का मौका मिलता है। अगरतला में आप जगन्नाथ मंदिर भी जा सकते हैं जो स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है। इसके अलावा, आप सेपहिजाला चिड़ियाघर में जा सकते हैं। युवाओं के लिए रोज़ वैली एम्यूज़मेंट पार्क भी है।

धार्मिक पर्यटन की दृष्टि से देश को जाना–माना शक्तिपीठ त्रिपुर सुंदरी मंदिर आपकी भ्रमण सूची में अवश्य शामिल होना चाहिए। अगरतला से 55 किलोमीटर दूर स्थित यह मंदिर देश के 51 शक्तिपीठों में शामिल है। यहां हर साल लाखों श्रृद्धालु शीश नवाने आते हैं। अगरतला से 45 किलोमीटर दूर स्थित ब्रह्म कुंड में हर वर्ष मार्च, अप्रैल और नवंबर के महीनों में मेले लगते हैं। त्रिपुरा में अन्य कई पर्यटक आकर्षण भी हैं जैसे धलाई, उनकोटी और चाय के बागानों के प्रसिद्ध कैलाशहर, मणिपुरी रासलीला, सुकांता अकादमी, लॉन्गथराई मंदिर, नज़रुल ग्रंथागार, क्लाउडेड लेपर्ड राष्ट्रीय उद्यान और राजबाड़ी राष्ट्रीय उद्यान।

त्रिपुरा में रियांग, लीबांग, मोरी, हलाककुकी और भोंग जैसे करीब 20 स्वदेशी समुदाय और गैर–आदिवासी बंगाली समुदाय सौहार्द के साथ रहते हैं। होजगिरि, लीबांग, बिझू, संगला, हाई हक और ओवा त्रिपुरा के उल्लेखनीय लोकनृत्य हैं। राज्य की प्रत्येक जनजाति और समुदाय यहां कई त्यौहार बड़ी भक्ति और उल्लास के साथ मनाते हैं और अपने आने के समय के अनुसार इनकी संस्कृति की झलक पा सकते हैं। अक्टूबर महीने में यहाँ दुर्गापूजा का त्यौहार बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इसके अलावा चौदह देवताओं की पूजा का त्यौहार कराची पूजा, गरिया पूजा, केर पूजा, अशोक अष्टमी मेला, बुद्ध पूर्णिमा, पौष संक्रांति मेला, डोल जात्रा (होली) और वाह (लैंप) त्यौहार की अपनी अलग सुंदरता और आकर्षण है।

मेघालय

मेघालय का अर्थ है बादलों का घर। यह राज्य भारी बारिश, सबसे ऊंचे झरनों, प्राचीन गुफाओं, प्राकृतिक सुंदरता और बहुरंगी जनजातीय संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। विश्व में सबसे अधिक वर्षा

Elite Academy For Education & Training Pvt. Ltd. Delhi

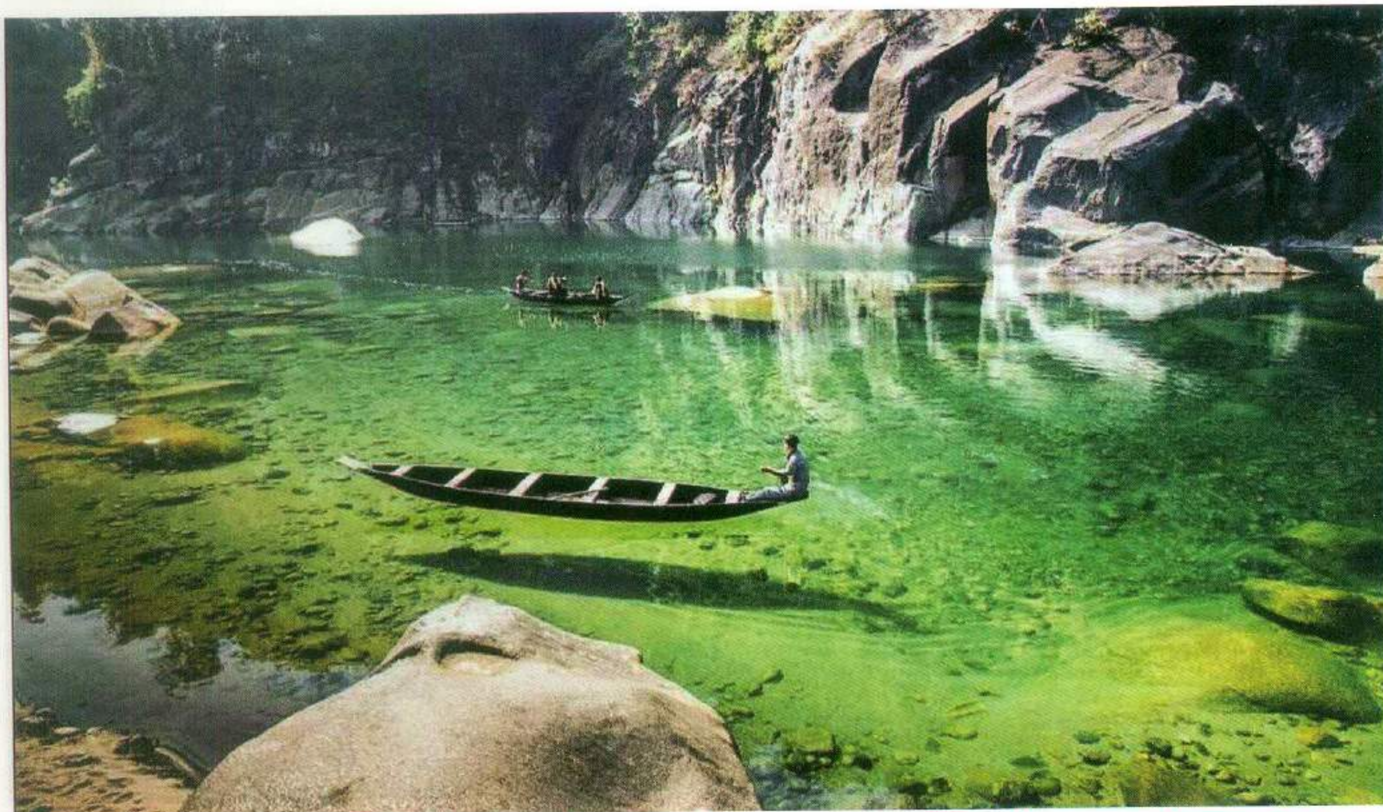

मेघालय में स्थित उमंगोट नदी को डौकी नदी के नाम से भी जाना जाता है। यहां नदी का जल अधिकतर इतना स्वच्छ होता है कि नाव हवा में तैरती प्रतीत होती है।

वाले क्षेत्र मावसिनराम और चेरापूंजी यहीं हैं। चारों ओर से पहाड़ों से घिरी मेघालय की राजधानी शिलांग को 'पूर्व का स्कॉटलैंड' भी कहा जाता है। शिलांग में आप भारतीय, चीनी, और तिब्बती व्यंजनों का लुत्फ उठा सकते हैं। शिलांग की नाइटलाइफ भी बड़ी रंगबिरंगी है। यहां कई पब, बार और डिस्कोथेक हैं। साथ ही, कई अच्छे रेस्टोरेंट भी हैं। यहां चावल से बनने वाले एक पारंपरिक व्यंजन क्यात और स्थानीय सुपारी युक्त पान कुवाई का आनंद भी ले सकते हैं।

राजधानी शिलांग से 60 किलोमीटर दूर चेरापूंजी करीब 1450 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है जहां बारिश के दिनों में देश–विदेश के पर्यटक पहुंचते हैं और खूबसूरत नज़ारों का दीदार करते हैं। मेघों की अठखेलियां देखने के लिए वार्ड झील, उमियम झील, शिलांग चोटी और हाथी फॉल्स का भी रुख़ किया जा सकता है। वैसे तो मेघालय में आपको लगभग हर रास्ते पर झरने मिलेंगे लेकिन नोहकालीकाई झरना विशेष दर्शनीय है। यहां प्राकृतिक चूना पत्थर और बलुआ पत्थर की प्राचीन गुफाएं इसे बाकी राज्यों से अलग बनाती हैं। इनमें से कई गुफाएं बेहद लंबी और गहरी हैं जिनमें जाना रोमांचक अनुभव प्रदान करेगा। यदि आप पर्वतारोहण, ट्रेकिंग, चट्टान पर चढ़ाई और लंबी पैदल यात्रा जैसे साहसिक पर्यटन करना चाहें तो खासी हिल्स और गारो हिल्स जा सकते हैं। शिलांग सहित पूरे मेघालय में बेंत, बांस, हथकरघा तथा हस्तशिल्प की वस्तुएं यहां की यादगार के तौर पर खरीदी जा सकती हैं।

पूर्वोत्तर में यातायात संपर्क अब आसान

अधिकांश भाग पहाड़ी होने के कारण उत्तर–पूर्वी राज्यों में यातायात संपर्क चुनौतीपूर्ण रहा जिससे यहां पर्यटन के विकास पर भी असर पड़ा। लेकिन सरकार ने पिछले कुछ वर्षों में इन राज्यों के चहुंमुखी विकास पर विशेष ध्यान दिया है, जिसके तहत इन राज्यों में सड़क, रेल और हवाई संपर्क में खासतौर पर व्यापक सुधार हुआ है। उदाहरण के लिए क्षेत्रीय संपर्क योजना 'उड़ान' के तहत इन सात राज्यों में कुल 46 विमान मार्गों पर सेवाएं उपलब्ध हैं। यानी न सिर्फ देश के बड़े शहरों से पूर्वोत्तर तक, बल्कि पूर्वोत्तर के प्रमुख शहरों के बीच हवाई यात्रा भी बेहद सुगम हो चुकी है। इसके अलावा जिरीबाम–इम्फाल के बीच बनने वाला दुनिया का सबसे ऊंचे पिलर वाला रेल ब्रिज और अरुणाचल में बन रही नेफचू सुरंग ऐसे कुछ उदाहरण हैं जो आने वाले समय में इन राज्यों में परिवहन को और भी सुगम बनाएंगे और ज़ाहिर है पर्यटन क्षेत्र को भी इसका लाभ मिलेगा। कुल मिलाकर पूर्वोत्तर आपके इंतज़ार में बाहें फैलाए तैयार है। आप भी एक ताउम्र यादगार रहने वाली यात्रा की तैयारी कर सकते हैं। शुभ यात्रा!

(लेखक भारतीय सूचना सेवा अधिकारी हैं। लेख में व्यक्त विचार निजी हैं।)

पारिस्थितिकी पर्यटन से स्थानीय सुसंगत विकास

–अमरेंद्र किशोर

पारिस्थितिकी पर्यटन ने प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा पर्यटन विकास में रचनात्मक योगदानकर्ता के रूप में विश्व समुदाय का ध्यान आकर्षित किया है और भारत दुनिया के सर्वाधिक जैव विविधता वाले सात देशों में से एक है। इस कारण अपनी समृद्ध एवं प्राचीन विरासत के कारण यह बहुत से देशों के पर्यटकों को आकर्षित करता है। कहने का आशय है कि अपने देश में इको फ्रेंडली टूरिज़्म की अपार संभावनाएं हैं। देश के पर्यावरण मंत्रालय, पर्यटन मंत्रालय, होटल एसोसिएशन, टूर ऑपरेटर आदि 'ईको फ्रेंडली' टूरिज़्म को आधार बना कर पैकेज घोषित करते हैं। ऐसे पैकेज टूर के दौरान पर्यावरण संरक्षण का तो ध्यान रखा ही जाता है, साथ ही, पर्यटकों को 'इको फ्रेंडली' बनने के लिए प्रेरित भी किया जाता है।

सुसंगत विकास और पारिस्थितिकी पर्यटन नई दुनिया के रचे गए शब्द हैं। बावजूद इसके कि पहली नज़र में ये शब्द अपने आप में परस्पर विरोधाभास रखते हैं। क्योंकि आधुनिक विकास की प्रक्रिया पारिस्थितिकी के साथ छेड़छाड़ से लेकर उसके सफाये से होती है। इससे स्थानीय असंतुलन पैदा होना लाज़िमी है और ऐसी स्थिति में विकास का सुसंगत होना किसी भी सूरत में संभव नहीं लगता।

समूची दुनिया में विकास और पर्यटन के नाम पर जल–जंगल–जमीन–जन और जानवर का सदियों से दोहन होता रहा है। निर्माण के लिए पहाड़ तोड़े गए। खेती और दैनिक ज़रूरतों के लिए जंगल काटे गए। सिंचाई और पनबिजली के लिए नदियों की धार के साथ छेड़छाड़ की घटनाएं हुईं और विकास के नाम पर उद्योगों और बांधों के लिए करोड़ों लोगों को अपने मूल से उजड़ना पड़ा। आज के इस माहौल में जब विकास का सबसे ज़्यादा असर कुदरती संसाधनों पर पड़ रहा है और साथ में परियोजना स्थलों की स्थानीय आबादी को उसकी कीमत चुकानी पड़ी है, ऐसी परिस्थिति में इन दोनों पारिभाषिक शब्दों में विकसित होते इंसानी समाज की समझदारी दिखती है। यह आधुनिक समाज का सुखद पक्ष है।

सुखद इस संदर्भ में, क्योंकि पारिस्थितिकी पर्यटन पर्यावरण के संतुलन में बदलाव के बिना विकसित होता है। साथ ही, यह प्रकृति के मन मिज़ाज के अनुरूप है। मतलब, स्थानीय कुदरत के स्वभाव और मिज़ाज तथा उपलब्ध संसाधनों की मौजूदगी को ध्यान में रखकर पर्यटन की योजना तय की जाती है। इस प्रकार पारिस्थितिकी पर्यटन का सीधा मतलब कुदरती संसाधनों

यवल–वन्यजीव अभयारण्य, मध्य प्रदेश

को नुकसान पहुंचाए बगैर पर्यटन की सुविधाओं और स्थितियों के निर्माण से है। दुनिया के कई मुल्कों में कुदरत के खालिसपन को बचाकर जिस तरह का पर्यटन उद्योग विकसित किया जा रहा है, यह बात सामान्य लोकमानस के लिए अचरज का विषय ज़रूर है। क्योंकि प्रकृति के भारी विनाश के बाद ही पूरी दुनिया में खेत से लेकर शहरी सभ्यताएं विकसित हुई हैं।

वजह चाहे कुछ भी हो लेकिन आज भी यह धारणा बनी हुई है कि जंगलों को काटकर ही पर्यटन के आयाम खुलते हैं। यह ठीक है कि कुछ दशक पहले तक ज़्यादा से ज़्यादा पर्यटकों को लुभाने के गरज से पर्यटन जल–जंगल और ज़मीन के कुदरती स्वरूप को तबाह किए जाने का भूमंडलीय कारोबार रहा है। बीती सदी के आठवें दशक के आते–आते ही इस कारोबार के भयानक चरित्र का स्थानीय विरोध होने लगा। इसी बीच, विभिन्न प्रकार के जैव–संसाधनों को बचाने को लेकर जब सख्त कानून पारित किए गए तो वैश्विक स्तर पर पर्यटन उद्योग के सामने उन विकल्पों को तलाशने की लाचारी हो गई। यही वजह है कि मुम्बई के मैंग्रोव के जंगलों को काटकर जब होटलों का निर्माण शुरू किया गया तो मैंग्रोव बचाने के लिए सरकार की ओर से जो दिशा–निर्देश आए उसमें इस खास किस्म के जंगलों को काटे जाने की सख्त मनाही थी। केवल मुम्बई ही नहीं बल्कि दुनिया के हर समुद्र तट पर कुदरती संसाधनों के साथ छेड़छाड़ हो रही थी। समुद्र तटीय इलाकों के अलावा पहाड़ों को काटकर या उसके सफाये के बाद पर्यटन के जिन लुभावने साधनों का विकास किया गया, वह प्रकृति की अपूरणीय क्षति हुई।

लंबे समय तक मौज–मस्ती के शौकीन पर्यटकों के गैर–ज़िम्मेदारीपूर्ण रवैये ने और व्यवसायीकरण के बढ़ते अनपेक्षित दबाव ने ऐसे स्थलों के पर्यावरण पर विपरीत असर डाला है। साथ ही, वहां की सुंदरता को भी प्रभावित करना शुरू कर दिया। मसलन, 2 लाख की आबादी वाले शिमला में हर साल 45 लाख से कहीं ज़्यादा पर्यटक पहुंचते हैं। इसी तरह 30,000 की आबादी वाले लेह का हाल और भी बुरा है। यहां आबादी से 10 गुना ज़्यादा पर्यटक पहुंचते हैं। यह सच है कि इतनी भारी संख्या में पर्यटकों के आने से यहाँ के अधिकतर लोगों के लिए पर्यटन आजीविका का मुख्य ज़रिया बन चुका है। लेकिन यहां के भू–उपयोग में आए परिवर्तन और रोज़गार के तरीके में आए भारी बदलाव के चलते स्थिति नाजुक होती जा रही है। क्योंकि हिमनद से बहने वाले पानी से पर्यटन उद्योग का काम चलने वाला नहीं है। इसके चलते ज़मीन के बोर से पानी का इस्तेमाल करने की शुरुआत लेह कस्बे में बहुत पहले हो चुकी है। खबर तो यह भी है कि अब लेह का पानी पीने लायक नहीं रहा। क्योंकि पर्यटकों के लिए सूखे शौचालयों से पानी वाले शौचालयों में आए बदलाव ने वहाँ के पानी को संक्रमित कर दिया है। लद्दाख जैसे दुनिया भर के अनगिनत ठिकानों में पर्यावरण और पारिस्थितिकी का असंतुलन हो चुका है।

दुनिया भर में पर्यटकों के आने, रहने और उनके द्वारा स्थानीय पर्यावरण के साथ मनमाने व्यवहार से जुड़े अनगिनत प्रसंग हमें डराते रहते हैं। ऐसा क्यों न हो, जिन इलाकों में पर्यटन के चलते प्लास्टिक का कचरा अधिक है, वहां मैंग्रोव के जंगल सबसे तेजी से घट रहे हैं। ऐसे इलाकों में दक्षिण–पूर्व एशिया प्रमुख है। प्लास्टिक से तबाह हो रहे मैंग्रोव जंगलों की तरह कई सारे दृष्टांत हैं जो बता रहे हैं कि बेपरवाह पर्यटन ने माटी और पानी के अस्तित्व को संदेहास्पद बना दिया है।

मौजूदा दौर में समूचे विकासशील उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में एक अजीब किस्म की अराजकता पैदा हो गई है। वहाँ संरक्षित क्षेत्र प्रबंधन और स्थानीय समुदायों के आर्थिक विकास और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की ज़रूरतों के बीच संतुलन कायम करने के लिए व्यापक संघर्ष करना पड़ रहा है। तो यह सवाल है कि संकट के इस दौर में किन तरीकों से पारिस्थितिकी और पर्यावरण के मनोनुकूल पर्यटन का कारोबार विकसित किया जाए। क्योंकि कुदरती संसाधन सीमित हैं और उनके आपस का असंतुलन आखिरकार इंसानी समाज पर भारी पड़ सकता है। संसाधनों के उचित रखरखाव से ही इंसानी जीवन और कुदरती संसाधनों के बीच संतुलन कायम रह सकता है। साथ में लम्बे समय तक प्रकृति का उपयोग हम कर सकते हैं। पारिस्थितिकी पर्यटन की चर्चाओं में हम उन तथ्यों पर ध्यान दें कि जिन स्थानों तक इंसान की पहुँच नहीं है वहाँ कुदरत का खालिस रूप आज जस का तस है। लेकिन जिन जंगलों में पहुंच कर उसने रातें बिताई है, अमूमन वहां आग लग रही है। जिन नदियों के पानी से खेती शुरू की थी, वे सब की सब प्रदूषित हैं या वे खत्म होने की कगार पर हैं। यह सब जैव संसाधनों और तमाम कुदरती अवयवों पर इंसानी आबादी के दबाव के कारण हो रहा है। और साथ में उसकी बेपरवाही ने पर्यटन के चेहरे को घिनौना बना दिया है।

हाल के दशकों में जिस तरह पर्यटन और प्रकृति संरक्षण के प्रबंधन से पारिस्थितिकी पर्यटन की जो कला विकसित हुई है, उससे एक तरफ पर्यटन और पारिस्थितिकी की आवश्यकताएं पूरी होने लगीं और दूसरी तरफ, स्थानीय समुदायों की आजीविका की अनुकूल परिस्थितियां भी तैयार हो गई हैं। सबसे अच्छी बात तो यह भी है कि रोज़गार के एक से एक अवसर आने से नए कौशल का विकास हुआ है और उसके चलते स्थानीय आबादी का स्थायी जीवनयापन का भरोसा पुख्ता हुआ है।

यह बात महत्वपूर्ण है कि पारिस्थितिकी पर्यटन (ईको फ्रेंडली टूरिज्म) कोई नई अवधारणा नहीं है, बल्कि वर्तमान परिस्थितियों ने इसे पर्यटन का एक अनिवार्य अंग बना दिया है। इसी संदर्भ में यह बताना ज़रूरी है कि कुदरत को बचाकर पर्यटन को बढ़ावा देने में अव्वल भूटान ने पारिस्थितिकी पर्यटन की एक बेमिसाल नज़ीर पेश की है। लेकिन सवाल है कि क्या भारत ने भूटान से किसी प्रकार की प्रेरणा लेकर पारिस्थितिकी पर्यटन के सही और सटीक तरीके

से लागू किए जाने की पहल की है?

बीते कुछ दशकों में अपने देश में पर्यटन के बढ़ते शौक के कारण पर्यटन स्थलों पर भीड़ बढ़ने लगी है जिससे उसके साथ व्यवसायीकरण भी होने लगा। बीती सदी के आखिरी दशक से समूची दुनिया में बदलाव के संकेत मिलने लगे थे और 21वीं शताब्दी के आते ही जीवन के कुछ नए आयाम खुलकर सामने आए। पर्यटन का विकास उनमें से एक था। विकास की इस समूची प्रक्रिया में जो कदम उठाए गए, वे कुदरती संसाधनों के अतिशय दोहन और आखिरकार उनके विनाश को सफल बनाने का उद्यम साबित हुआ। माहौल ऐसा बन गया कि पर्यटन के नाम पर पहाड़ों से लेकर रेगिस्तान में होने वाले आयोजनों के बाद बिखरे कचरों ने एक समय के बाद स्थानीय आबादी का जीना मुश्किल कर दिया। जिन संसाधनों को इंसान हज़ारों साल से संजोता चला आ रहा था, वे सब के सब आखिरी सांसें गिनने को मज़बूर हुए।

इन्हीं मुश्किलों के बीच अंतर्राष्ट्रीय फोरम, पृथ्वी सम्मेलनों से लेकर जलवायु परिवर्तन के वैश्विक आयोजनों में पर्यावरणविद् और शोधकर्ताओं ने पर्यटन से होने वाले खतरनाक परिणामों को सब के सामने रखना प्रारंभ किया। दुनिया भर में बहसों का दौर चला। भूटान जैसे देश भी पर्यटन को एक निश्चित दायरे में रखने के लिए प्रतिबद्ध दिखे। क्योंकि वहां के संविधान में पर्यावरण की चिंताएं हैं और उसके संवर्धन के प्रावधान हैं। लेकिन भारत के अलावा दक्षिण–पूर्व एशिया में पर्यटकों का कचरा नासूर बन गया। कचरा तक बात सीमित रहती तो उसके कुशल निस्तारण के मुकम्मल प्रबंधन भी हो सकते थे। बांग्लादेश के बंदरबन और रांगामाटी जैसे इलाकों में निर्माण कार्यों से वहां के जैव–संसाधन विद्रोही हो गए। बांग्लादेश की तर्ज पर विकासशील और विकसित मुल्कों में भी कुदरत का प्रतिकार लगातार बढ़ने लगा। इस प्रकार, पर्यटन को सीमित करने के बदले उसे किसी पद्धति में समायोजित किया जाना ज़रूरी समझा गया। इसके बाद 'ईको–फ्रेंडली टूरिज्म' की धारणा ने जन्म लिया। यही वजह है कि 'हमारा पर्यावरण सुरक्षित है तो हमारी पृथ्वी सुरक्षित है', जैसी बातों के शाश्वत सत्य को समझते हुए संयुक्त राष्ट्र ने सदस्य राष्ट्रों का ध्यान ईको टूरिज़्म की ओर आकर्षित किया। स्ट्रैटेजिक इन्वेस्टमेंट रिसर्च यूनिट द्वारा प्रस्तुत तथ्यों से यह पता चलता है कि भारत ने बेहद गंभीरता से पारिस्थितिकी पर्यटन को अपनाने की दिशा में काम किया है।

सुखद खबर है कि देश–विदेश में पर्यावरण पारिस्थितिकी की बनावट और बुनावट को लेकर समाज और सरकार की संवेदनशीलता उल्लेखनीय है। अपने देश में सरकार इस दिशा में काम तो कर रही है लेकिन अभी लोकमानस को इस दिशा में समझने में समय लगेगा। क्योंकि आज तक तरीके से यह समझा पाने में कहीं कोई कमी रह गई है कि पर्यटन के संदर्भ में विनाश पर विकास की स्थितियों में बदलाव आया है। चूंकि ईको फ्रेंडली टूरिज़्म मतलब पारिस्थितिकी पर्यटन ने प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा पर्यटन विकास में रचनात्मक योगदानकर्ता के रूप में विश्व समुदाय का ध्यान आकर्षित किया है और भारत दुनिया के सर्वाधिक जैव विविधता वाले सात देशों में से एक है। इस कारण अपनी समृद्ध एवं प्राचीन विरासत के कारण यह बहुत से देशों के पर्यटकों को आकर्षित करता है। कहने का आशय है कि अपने देश में इको फ्रेंडली टूरिज़्म की अपार संभावनाएं हैं। जैसे देश के पर्यावरण मंत्रालय, पर्यटन मंत्रालय, होटल एसोसिएशन, टूर ऑपरेटर आदि 'ईको फ्रेंडली' टूरिज़्म को आधार बना कर पैकेज घोषित करते हैं। ऐसे पैकेज टूर के दौरान पर्यावरण संरक्षण का तो ध्यान रखा ही जाता है, साथ ही पर्यटकों को 'इको फ्रेंडली' बनने के लिए प्रेरित किया जाता है।

गौरतलब है कि विदेशी पर्यटकों की तुलना में स्थानीय पर्यटकों के लिए यह एक बड़ा दायित्व है कि अपने कुदरती संसाधनों और उनसे जुड़ी परंपराओं का सम्मान करें। स्थानीय संसाधनों के सम्मान का आशय वहां के मूल वाशिंदों की भावनाओं और उनकी परम्पराओं का सम्मान है जो 'यह हमारी धरती है' जैसी बातें अपने आयोजनों–उत्सवों और लोक कथाओं से लेकर लोकगीतों में करते हैं। उन लोगों का पर्यावरण एक साझी विरासत है, जैसे हमारी नदियाँ–खेत–खलिहान, बगीचे, धार्मिक स्थलों के अलावा ऐतिहासिक इमारतें क्षेत्रीय भावनाओं के शरणगाह होते हैं जिसे हमें आने वाली पीढ़ी के लिए संजो कर रखना सिखाया जाता है। लेकिन सम्पूर्णता में प्रकृति, सभ्यता और संस्कृति ने जो हमें दिया है, वो हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों को उसी रूप में सौंपना है। यही हमारे देश की परम्परा है। बात चाहे लघु परम्परा की हो या दीर्घ परम्परा की, हर परम्परा की जड़ों वहां के समाज की पीढ़ियों से नाता रहता है। जब देश की कुदरती धरोहरों की बात आती है तो जंगलों का समाज और वहां के रहवासियों की जीवनशैली का तारतम्य बचाया जाना कहीं ज़्यादा ज़रूरी है।

ध्यान रहे, वैश्विक संदर्भ में भारत का पक्ष स्पष्ट है। चूंकि पारिस्थितिकी पर्यटन को लेकर वर्तमान सरकार मानती है कि संरक्षित क्षेत्रों और उनके आसपास रहने वाले समुदायों को लाभ पहुंचाया जाना ज़रूरी है। सरकार मानती है कि इसी मकसद को प्राथमिकता में रखकर एक सुसंगत विकास की दिशा तय की जा सकती है। इस बात का पछतावा ज़रूर है कि पर्यटन उद्योग की मार कभी किसी ज़माने में उस भूमि और संसाधनों से जुड़े लोगों को झेलनी पड़ी है। बीती बातों से आगे आज यह मान कर हम चलते हैं कि पर्यटन उद्योग जैव विविधता का हर हाल में सम्मान और उसकी हिफाज़त करेगा। मतलब जंगलों की अक्षुणता को हर हाल में बचाये रखना है। नदियों को प्रदूषण मुक्त रखना है और आसपास की जीवंत संस्कृति और उसकी विरासत के विभिन्न आयामों को बचाए रखना है।

संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (यूएनडब्ल्यूटीओ) का यह मानना है कि पर्यटन को महज मौज–मस्ती और धनोपार्जन तक

Elite Academy for Education & Training Pvt. Ltd. Delhi

> हाल के दशकों में जिस तरह पर्यटन और प्रकृति संरक्षण के प्रबंधन से पारिस्थितिकी पर्यटन की जो कला विकसित हुई है, उससे एक तरफ पर्यटन और पारिस्थितिकी की आवश्यकताएं पूरी होने लगीं और दूसरी तरफ, स्थानीय समुदायों की आजीविका की अनुकूल परिस्थितियां भी तैयार हो गई हैं। सबसे अच्छी बात तो यह भी है कि रोज़गार के एक से एक अवसर आने से नए कौशल का विकास हुआ है और उसके चलते स्थानीय आबादी का स्थायी जीवनयापन का भरोसा पुख्ता हुआ है।

सीमित रखना ठीक नहीं है। बल्कि वर्तमान और खासतौर से भविष्य के आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभावों को ध्यान में रखना होगा। यदि मेहमानों–आगंतुकों की सुविधाओं को हम प्राथमिकता में रख रहे हैं तो यह भी देखना होगा कि स्थानीय पर्यावरण पर पूरी गतिविधियों का कैसा प्रभाव पड़ेगा। क्या स्थानीय आबादी इससे विचलित हो सकती है या पर्यटकों की ज़रूरतों को पूरा करने में इस उद्योग की वजह से क्षेत्रीय समाजों के आर्थिक मामलों और संस्कृति की अक्षुण्णता पर असर पड़ सकता है? पारिस्थितिकी पर्यटन को गहराई से देखने पर इस संदर्भ की ओर ध्यान जाता है कि चाहे पर्यटक या उनकी खातिरदारी या उनकी सहायता के लिए तत्पर स्थानीय निवासी हो या स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र–इन सबके एक–दूसरे के साथ एक अंतरंगता और आपसी मध्यस्थता वाले रिश्ते होते हैं। लेकिन जब पर्यटन के साथ विकास की बात उभरती है तो हानिकारक या आशाजनक परिणामों की नाजुक परिस्थितियां लगातार हस्तक्षेप करती हुई दिखती हैं। इसके चलते पर्यावरण की हिफाज़त का मसला महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

पारिस्थितिकी पर्यटन के मुद्दे पर भारत न तो अनभिज्ञ है और न ही उसकी तत्परता में किसी तरह की कमी देखी गई है। लिहाजा, जब एक समर्थ और सुसंगत पर्यटन की बात आती है, तो भारत सरकार ने इस दिशा में विशाल क्षमता से भरे पर्यटन का संकल्प रखा है और इस सम्बन्ध में किए गए कार्यों को विश्वव्यापी सराहना मिल रही है। विभिन्न शहरों, उन शहरों की विरासत और उसके विभिन्न आकर्षण के अलावा एक बेहद विशाल देहाती भारत की तस्वीर समूची दुनिया को अपनी ओर लुभा रही है। खास बात यह भी है कि इसके प्रति लोगों के कौतूहल और जिज्ञासा से भरे आकर्षण पैदा करने के मंसूबों को बढ़ावा दिया जाना साधारण और सतही बात कतई नहीं है। भारत की रूपहली संस्कृति, उसके रोचक पहलू, बेजोड़ खानपान, रंग–बिरंगे परिधान, रंगों में ढले कुदरती संसाधन, अनगिनत जीव और उनकी रिहाइश से जुड़े जीवंत तथ्यों का ताना–बाना एक ऐसे भारत का निर्माण करता है जो समूची दुनिया के सामने यह तर्क रखता है कि सच में 'अतुल्य भारत' अद्भुत तथा अद्वितीय है।

यह समझने की बात है राज्य स्तर पर विकसित होता पर्यटन उपभोग की अवधारणा से बिलकुल अलग है। अधिकतर राज्य सरकारें ग्रामीण जीवन को पर्यटन में शामिल कर रही हैं तो गांव के जीवन के लय का भरपूर सम्मान है। कृषि और किसानी को दिखाने और पर्यटकों को लुभाने का प्रावधान है तो किसान भी इसमें साझेदार या हितग्राही है। साहसिक यात्राओं के प्रावधान हैं तो उससे जुड़े पारम्परिक समुदायों को इसमें ससम्मान शामिल कर उनके जीवनयापन की भरपूर व्यवस्था के प्रावधान हैं। पहाड़ी इलाकों में होमस्टे जैसी सुविधाओं के मूल में बड़े निर्माणों को हतोत्साहित किए जाने का मकसद है तो साथ में स्थानीय लोगों के घर बैठे आय के स्रोत विकसित किए जाने की सकारात्मक सोच भी है। कहने का आशय है कि केंद्र या राज्य सरकार की सदिच्छा से स्थायी और ज़िम्मेदार पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए भी जो सराहनीय पहल की जा रही है, वह समूची व्यवस्था का एक मज़बूत सकारात्मक पक्ष है। क्योंकि कहीं भी संसाधनों के उन्मूलन या उनके सफाये की बात नहीं है बल्कि समायोजन और समन्वय पर जोर है।

इनके अलावा, सरकार और निजी क्षेत्र द्वारा पारिस्थितिकी पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण फैसले किए गए हैं। उदाहरण के लिए हिमाचल प्रदेश सरकार ने पर्यावरण पर्यटन विकास नीति घोषित की है, जिसमें स्थानीय समुदायों की भागीदारी पर बल दिया गया है। इसी तरह कर्नाटक, सिक्किम, राजस्थान और आंध्र प्रदेश के वन एवं पर्यटन विभागों ने अधिकारी मनोनीत किए हैं जो इन गतिविधियों के बीच समन्वय स्थापित करेंगे। केरल द्वारा स्थापित 'तेन्माला' इको–टूरिज़्म प्रमोशन सोसाइटी पर्यावरण पर्यटन का एक मॉडल तैयार करेगी। निजी क्षेत्र में भी पर्यावरण अनुकूल सैरगाहों और होटलों की धारणा ज़ोर पकड़ रही है।

बेशक भली–भाँति संरक्षित पारिस्थितिकी प्रणाली पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करती है। विभिन्न सांस्कृतिक और साहसिक गतिविधियों के दौरान एक कर्त्तव्यनिष्ठ, कम असर डालने वाला पर्यटक अपने व्यवहार से कुदरत को बचाना चाहता है। पुनर्भरण न हो सकने वाले संसाधनों का कम से कम उपयोग और उनकी न्यूनतम खपत का हिमायती बन जाता है। उल्लेखनीय है कि स्थानीय लोगों की सक्रिय भागीदारी पारिस्थितिकी पर्यटन की ज़रूरी शर्त है जो वैसे समुदाय का निर्माण करती है जिससे स्थानीय लोग प्रकृति, संस्कृति अपनी जातीय परम्पराओं के बारे में पर्यटकों को प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध कराने में सक्षम होते हैं–ऐसे कुछ लोकपक्ष हैं जिससे संसाधनों को कम से कम हानि पहुंचाकर स्थानीय लोगों को पर्यावरण पर्यटन का प्रबंध करने का अधिकार देने की सहमति सरकार देती है–ऐसी बातें उभरकर सामने आ रही हैं। क्योंकि पहाड़ों में या सुंदरबन जैसे अतिचुनौतीपूर्ण प्रदेशों में जीविका के वैकल्पिक अवसर अपनाकर अपने आय के जिस स्रोत को विकसित किए जाने की बात है, वह पर्यटक और स्थानीय

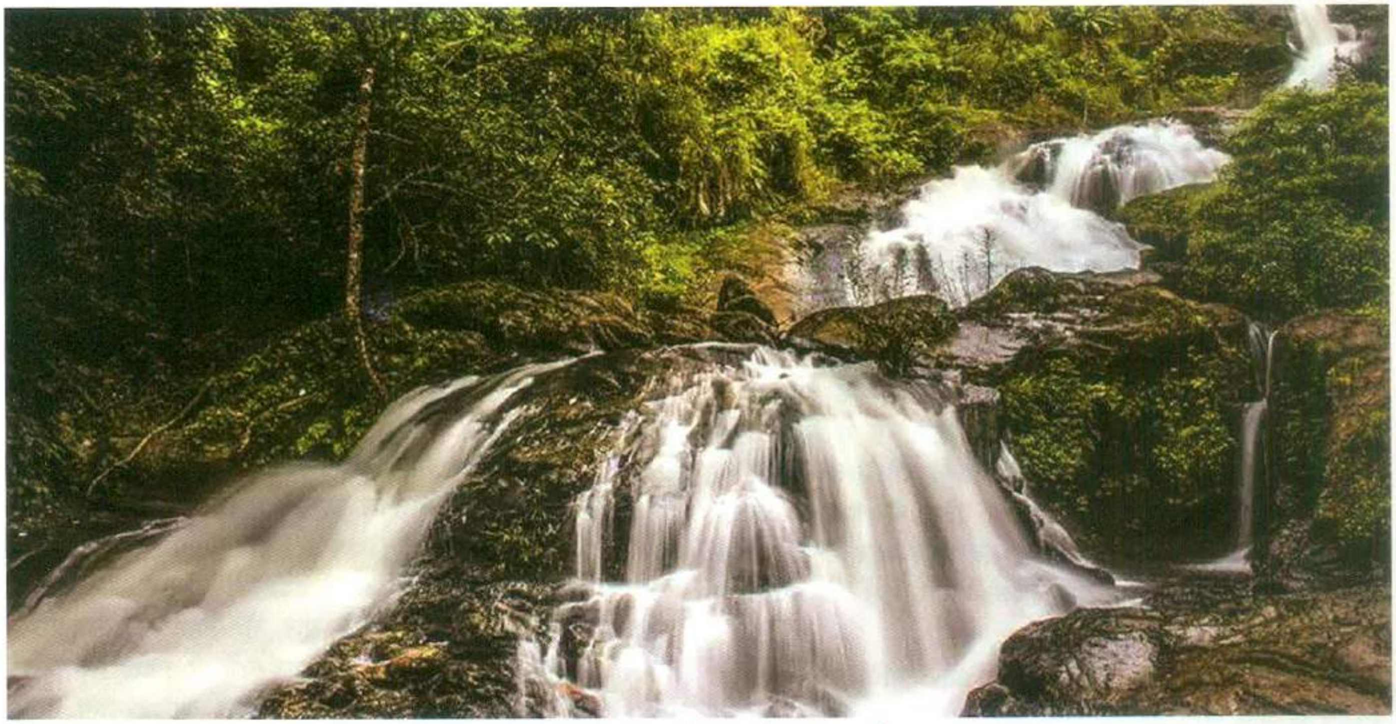

अभय जलप्रपात, कोडगु जिला, कर्नाटक

समुदाय–दोनों के लिए परस्पर लाभकारी हो सकता है।

राज्यों के स्तर पर पारिस्थितिकी पर्यटन का काम सराहनीय है। जैसे हिमाचल प्रदेश का मूल ध्येय समावेशी आर्थिक विकास के लिए राज्य को एक अग्रणी वैश्विक स्थायी पर्यटन स्थल के रूप में स्थान देना है। राज्य सरकार अपने प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र और विरासत को संरक्षित करते हुए एक व्यापक और टिकाऊ पर्यटन अर्थव्यवस्था विकसित करना चाहती है। सरकार अपने नागरिकों के जीवन–स्तर में सुधार करने, नौकरी के अवसरों में वृद्धि करने, यात्री अनुभव बढ़ाने और पर्यटन में निजी क्षेत्र की भागीदारी के माध्यम से नवाचार करने के मंसूबों के साथ सक्रिय है। असम का अपने खास किस्म के विज़न से देश भर में विश्व स्तर पर प्रशंसित ऑल–सीज़न ट्रैवलर डेस्टिनेशन विकसित करने का प्रयास अद्भुत है। जानकारों की मानें तो यह खास विज़न के जरिए अद्वितीय वन्य जीवन, खास जैव विविधता और एक बेजोड़ वंडरलैंड के अनुभव देने का ध्येय रखता है। असम सरकार की योजना है कि आने वाले सालों में पर्यटन लोगों के लिए राजस्व सृजन के मूलभूत स्रोतों में से एक हो। उम्मीद की जाती है कि पारिस्थितिकी पर्यटन सतत विकास में एक सक्रिय और महत्वपूर्ण योगदानकर्ता भी होगा। 'आमार आलोही' ग्रामीण होमस्टे योजना का उद्देश्य असम राज्य में ग्रामीण होम स्टे सुविधाओं को एक नया आयाम देना है। इस योजना का उद्देश्य पर्यटन ग्रामीण और अर्ध–शहरी क्षेत्रों में शिक्षित युवाओं के लिए स्वरोज़गार के अवसर पैदा करना है। होम स्टे योजनाओं पर सब्सिडी के माध्यम से अर्ध–शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में रोज़गार की संभावनाएं प्रदान करने की यह योजना अपने आप में असाधारण है।

इन सबसे अलग हटकर आंध्र प्रदेश सरकार प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों पर हाई–एंड लग्ज़री रिट्रीट विकसित कर रही है। निजी निवेश और सार्वजनिक–निजी भागीदारी योजनाओं को प्रोत्साहित कर और ईओडीबी (ईज ऑफ डूइंग बिजनेस) को बढ़ावा देकर पर्यटन उद्योग में निजी निवेश और उद्यमिता लाने और इसे बढ़ावा देने की योजना पर काम चल रहा है। सरकार पर्यटन के सक्षम और लक्षित सर्वव्यापी विपणन द्वारा पसंदीदा पर्यटन स्थलों की राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर पहचान स्थापित करने की इच्छा रखती है। केरल ने हाल के वर्षों में पर्यटन विस्तार में उल्लेखनीय वृद्धि की है। उनका ब्रांड टैगलाइन गॉड्स ओन कंट्री पर्यटन के नाम से जाना–पहचाना नाम बन गया है। इसका सतत पर्यटन विकास बैकवाटर, आयुर्वेद और ईकोटूरिज़्म पर केंद्रित है। वे तीन श्रेणियों के तहत कई पर्यटन परियोजनाओं को तैयार और क्रियान्वित कर रहे हैं। सबसे व्यापक और सबसे प्रतिष्ठित परियोजनाओं में बेकल में एक समुद्र तट पर खास जगह का विकास यानी उसे बेहतरीन पर्यटक केंद्र के रूप में विकसित किए जाने की योजना है। वागामोन में एक हिल स्टेशन के विकास और एक बैकवाटर की एकीकृत योजना पर काम चल रहा है।

जैव विविधताओं से सम्पन्न भारत में पारिस्थितिकी पर्यटन एक पर्यावरण–अनुकूल गतिविधि है। इस कारण इसका लक्ष्य पर्यावरण मूल्यों और शिष्टाचार को प्रोत्साहित करना है। साथ ही, निर्बाध रूप में प्रकृति का संरक्षण करना भी इसके खास उद्देश्य हैं। इस तरह पारिस्थितिकी विषयक अखंडता में योगदान करके वन्य जीवों

और प्रकृति को लाभ पहुँचाना एक असाधारण काम है। क्योंकि यह मानी हुई बात है कि जब क्षेत्र में परिस्थितियाँ (जैसे व्यवहार्यता, स्थानीय स्तर पर प्रबंध क्षमता और पर्यावरण पर्यटन विकास तथा संरक्षण के बीच स्पष्ट एवं नियंत्रित सम्पर्क) सही हों तो सुनियोजित एवं व्यवस्थित पारिस्थितिकी पर्यटन लम्बे समय में जैव विविधता के संरक्षण के सर्वाधिक कारगर उपायों में एक साबित होगा। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर राज्यों की सरकारों ने ऊर्जा के उपयोग, सोर्सिंग सामग्री और पर्यावरण के अनुकूल मानकों को अपनाने के लिए कुशल प्रबंधन का सहारा लिया है जो एक टिकाऊ विकास की दिशा में कार्रवाई कर रहा है। सरकार की यह कोशिश है कि पर्यटन और प्रकृति संरक्षण का प्रबंध इस ढंग से किया जाए ताकि एक तरफ, पर्यटन और पारिस्थितिकी की ज़रूरतें पूरी हों और दूसरी तरफ, स्थानीय समुदायों के लिए रोज़गार के अवसर पैदा हो। राज्य सरकारों ने नए कौशल, आय और महिलाओं के लिए बेहतर स्तर सुनिश्चित करने को लेकर कई कार्यक्रमों की शुरुआत की है।

ज़रुरत इस बात की है कि ग्रामीण और आदिवासी भारत को पर्यटन से जोड़े जाने की एक ठोस कार्यनीति पर काम किया जाए। गाँवों को उत्पादन केंद्र के तौर पर विकसित किया जाना बेहद ज़रूरी है। गाँव में पशुपालन, मुर्गीपालन से लेकर जैविक खेती पर ज़ोर दिया जाना ज़रूरी है। जिन जगहों पर सैलानी ठहरते हैं, वहां के बाज़ार के साथ गाँव के उन उत्पादन केंद्रों को जोड़ना होगा। उम्मीद की जाती है कि जो किसान या जो व्यवसायी अपना उत्पाद तैयार करेंगे, कम कीमत पर उत्कृष्ट उत्पाद पर्यटकों तक सीधे बाज़ार तक पहुंचाकर पर्यटन को तरीके से बढ़ाया जा सकता है।

भारतीयों को पारिस्थितिकी पर्यटन के क्षेत्र में मालदीव की प्रगति से प्रेरणा लेनी चाहिए। स्मरण रहे कि मालदीव में चूंकि पर्यटन ही प्रमुख उद्योग है, वे पूरी तरह इस पर निर्भर हैं और उन्होंने अपनी समुद्री चट्टानों के संरक्षण के तौर–तरीके विकसित किए हैं। सभी सैरगाहों और होटलों के लिए यह अनिवार्य और अपरिहार्य है कि वे अपने कचरे का निपटान करें, जल संरक्षण करें और अपशिष्ट को फिर से काम में लाने (रि–साइक्लिंग) की व्यवस्था करें। इसके अतिरिक्त इंडोनेशिया ने भी इस मामले में उम्दा काम किया है। फिलीपींस का प्रकृति प्रेम जगजाहिर है। इसलिए पारिस्थितिकी पर्यटन को लेकर इस देश की गंभीरता और उपलब्धि प्रेरणा का प्रसंग है। नेपाल जैसे अन्य देशों ने अपने स्थानीय समुदायों के लाभ के लिए पर्यावरण पर्यटन से प्राप्त आय के उपयोग के कारगर तरीके विकसित किए हैं। उदाहरण के लिए फिलीपींस में समुद्री मछुआरों को इस बात के लिए राज़ी किया गया कि वे 'ब्लास्ट फिशिंग' नहीं करेंगे बल्कि इसके लिए वे अधिक परम्परागत और सुरक्षित तरीके अपनाएंगे। इंडोनेशिया में दुर्लभ पक्षियों की सुरक्षा के लिए 'बर्डवाच' नामक परियोजना शुरू की गई है।

स्थान विशेष की अपनी जैव–विविधता होती है और उन विविधताओं को पर्यटन से जोड़कर आय के बेशुमार स्रोत पैदा किए जा सकते हैं। ध्यान रहे, पर्यटक क्वालिटी की अपेक्षा रखता है। वह उस स्थानीयता को जी लेना चाहता है जो वहां के लोकजीवन की ताकत और सुंदरता होती है। जैव विविधता को बचाना ज़रूरी है लेकिन उसे बढ़ाने की दिशा में काम होना ज़रूरी है। अर्थात् संरक्षण और आर्थिक विकास के साधन के रूप में पारिस्थितिकी पर्यटन की क्षमताओं को पहचानने के लिए नए और अधिक समन्वित दृष्टिकोण की ज़रुरत है जिसमें स्थानीय क्षमता निर्माण और स्थानीय स्तर पर लाभों में बढ़ोत्तरी पर अधिक बल देने की गुंजाइश होनी चाहिए।

ढांचागत विकास कोई साधारण बात नहीं है। गांधी ने जिन स्थानीय संसाधनों को लगाकर ग्रामीण भारत के निर्माण की बात की थी, उसे तरीके से लागू करना होगा। क्योंकि इस तरह की विकास प्रक्रिया स्थानीय नेतृत्व को बढ़ाने के अलावा अधिक सुंदर तथा लोकोपयोगी परिणामों की ओर ले जाती है। साहित्यिक संदर्भों में देखा जाए तो विलियम वर्डस्वर्थ ने जिस प्रकृति की ओर लौटने की बात की थी, उसी आवाहन को अपनाना होगा। पारिस्थितिकी पर्यटन मूलतः प्रकृति को बचाने की पहल है। एक मुकम्मल कोशिश है जो सरकार और समाज के सामंजस्य के बूते शुरू किया जाने वाला आंदोलन है, जिस आंदोलन में कोई स्वर नहीं, कोई हंगामा नहीं है बल्कि कुछ करने की अनोखी और सच्ची ज़िद है। सबको साथ रखकर, सबको लाभान्वित कर प्रकृति को बचा लेना एक खास मकसद है। जैसे टूर ऑपरेटरों–गैर सरकारी भागीदारों का मार्गदर्शन करने संबधी फ्रेमवर्क तैयार करने, स्थानीय प्रकृति गाइडों के लिए कारगर प्रशिक्षण कार्यक्रमय और भागीदार, समुदाय–आधारित पर्यावरण पर्यटन आयोजना के लिए पद्धतियाँ और कौशल विकसित करने की खास ज़रुरत है।

योजनाकारों को नहीं भूलना है कि साहस, परिश्रम, ईमानदारी और शीघ्र निर्णय लेने जैसे अंतर्निहित गुणों का विकास समुचित मानव जाति की पूंजी के रूप में होना चाहिए। अनुमान है कि दुनिया भर में 10 प्रतिशत पर्वतीय क्षेत्रों में कुल मानव आबादी के मात्र 4 प्रतिशत लोग रहते हैं। किंतु वे लोग तराई में रहने वाले 40 प्रतिशत लोगों के भाग्य का निर्धारण करते हैं इस बात को कभी नहीं भुलाया जाना चाहिए। इसका अर्थ यह हुआ कि पर्यटन ढाँचे के आयोजन और विकास, इसका परवर्ती परिचालन और इसका विपणन करते समय हमें पर्यावरण तथा सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्थिरता के मानदंडों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। निसंदेह प्रकृति कभी उस दिल को धोखा नहीं देती जो उसे प्यार करता है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और पर्यावरण विशेषज्ञ हैं। वर्तमान में डेवेलपमेंट फाइल्स (हिंदी) में बतौर प्रबंध संपादक कार्यरत हैं। लेख में व्यक्त विचार निजी हैं।)

ई–मेलः amarendra.kishore@gmail.com

Elite Academy for Education & Training Pvt. Ltd. * Delhi *

योजना | YOJANA | योजना | ଯୋଜନା | യോജന | ಯೋಜನಾ | कुरुक्षेत्र | Kurukshetra | যোজনা | திட்டம் | یوجنا | આજકલ | बाल भारती | रोज़गार समाचार | Employment News

हमारी पत्रिकाएं

योजना
विकास को समर्पित मासिक
(हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू व 10 अन्य भारतीय भाषाओं में)

प्रकाशन विभाग
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

कुरुक्षेत्र
ग्रामीण विकास पर मासिक
(हिंदी और अंग्रेजी)

आजकल
साहित्य एवं संस्कृति का मासिक
(हिंदी तथा उर्दू)

रोज़गार समाचार
साप्ताहिक
(हिंदी, अंग्रेजी तथा उर्दू)

बाल भारती
बच्चों की मासिक पत्रिका
(हिंदी)

घर पर हमारी पत्रिकाएं मंगाना है काफी आसान...

आपको सिर्फ नीचे दिए गए 'भारत कोश' के लिंक पर जा कर पत्रिका के लिए ऑनलाइन डिजिटल भुगतान करना है–
https://bharatkosh.gov.in/Product/Product

सदस्यता दरें

प्लान	योजना या कुरुक्षेत्र या आजकल (सभी भाषा)	बाल भारती	रोज़गार समाचार	
वर्ष	रजिस्टर्ड डाक	रजिस्टर्ड डाक	मुद्रित प्रति (साधारण डाक)	ई-संस्करण
1	₹ 434	₹ 364	₹ 530	₹ 400
2	₹ 838	₹ 708	₹ 1000	₹ 750
3	₹ 1222	₹ 1032	₹ 1400	₹ 1050

सदस्यता शुल्क में रजिस्टर्ड डाक का शुल्क भी शामिल है। कोविड-19 महामारी के मद्देनज़र **नए ग्राहकों को अब रोज़गार समाचार के अलावा सभी पत्रिकाएं केवल रजिस्टर्ड डाक से ही भेजी जाएंगी।** पुराने ग्राहकों के लिए मौजूदा व्यवस्था बनी रहेगी।

ऑनलाइन के अलावा आप डाक द्वारा डिमांड ड्राफ्ट, भारतीय पोस्टल आर्डर या मनीआर्डर से भी प्लान के अनुसार निर्धारित राशि भेज सकते हैं। डिमांड ड्राफ्ट, भारतीय पोस्टल ऑडर या मनीआर्डर '**अपर महानिदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय**' के पक्ष में **नई दिल्ली** में देय होना चाहिए।

रोज़गार समाचार की 6 माह की सदस्यता का प्लान भी उपलब्ध है, प्रिंट संस्करण रु. 265/-, ई-संस्करण रु. 200/-, कृपया ऑनलान भुगतान के लिए https://eneversion.nic.in/membership/login लिंक पर जाएं। डिमांड ड्राफ्ट 'Employment News' के पक्ष में **नई दिल्ली** में देय होना चाहिए।

अपने डीडी, पोस्टल आर्डर या मनीआर्डर के साथ नीचे दिया गया 'सदस्यता कूपन' या उसकी फोटो कॉपी में सभी विवरण भरकर हमें भेजें। भेजने का पता है-

संपादक, पत्रिका एकांश, प्रकाशन विभाग, कक्ष सं. 779, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003.

अधिक जानकारी के लिए ईमेल करें- pdjucir@gmail.com

हमसे संपर्क करें- **फोन: 011-24367453,** (सोमवार से शुक्रवार सभी कार्य दिवस पर प्रात: साढ़े नौ बजे से शाम छह बजे तक)

कृपया नोट करें कि पत्रिका भेजने में, सदस्यता शुल्क प्राप्त होने के बाद कम से कम आठ सप्ताह लगते हैं। कृपया इतने समय प्रतीक्षा करें और पत्रिका न मिलने की शिकायत इस अवधि के बाद करें।

Academy for Education & Training Pvt. Ltd. Delhi

सदस्यता कूपन (नई सदस्यता/नवीकरण/पते में परिवर्तन)

कृपया मुझे 1/2/3 वर्ष के प्लान के तहत .... पत्रिका .... भाषा में भेजें।

नाम (साफ व बड़े अक्षरों में) ....

पता : ....

.... जिला .... पिन ....

ईमेल .... मोबाइल नं. ....

डीडी/पीओ/एमओ सं. .... दिनांक .... सदस्यता सं. ....

कोविड-19 के बाद पर्यटन उद्योग

–भव्या त्यागी एवं करिश्मा शर्मा

वैश्विक महामारी का पर्यटन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। लेकिन इसने 'आयुष' और स्वास्थ्य से संबंधित पर्यटन के लिए संभावनाओं के द्वार भी खोले हैं। महामारी ने संपूर्ण तंदुरुस्ती और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के बारे में जागरूकता में इज़ाफा किया है। इससे उपचार की आयुष प्रणालियों को विश्व भर में प्रचारित करने में सहूलियत हुई है। देश में चिकित्सा पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 'हील इन इंडिया' अभियान चलाया गया है जिसका आयुष एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

भारत एक बहु–सांस्कृतिक इंद्रधनुष है। खानपान, मतों, कलाओं, शिल्पों, इतिहास, खेलों, प्रकृति और जनजातियों की विविधताएं इसे बहुरंगी बनाती हैं। उत्तर के विशाल हिमालय, पश्चिम के सुनहरे थार रेगिस्तान, पूर्व के प्रभावशाली वन्य जीवन और दक्षिण के समुद्र तटों की अपनी भौगोलिक विशिष्टताएं हैं। इन सभी क्षेत्रों के पास सैलानियों को आकर्षित करने के लिए अपनी अलग विशेषताएं मौजूद हैं। मैक्समूलर ने ठीक ही कहा था, "हमें अगर प्राकृतिक संपदा, भक्ति और सौंदर्य से सबसे ज्यादा परिपूर्ण, पृथ्वी पर स्वर्ग की तलाश हो तो मेरे विचार से यह भारत ही होगा।"

पर्यटन एक मानव केंद्रित उद्योग है। कोविड–19 वैश्विक महामारी ने अन्य देशों की तरह भारत में भी पर्यटन के सभी पहलुओं में व्यवधान डाला है। संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (यूएनडब्ल्यूटीओ) के अनुसार अंतरराष्ट्रीय सैलानियों के आगमन में लगभग 70 प्रतिशत की गिरावट आयी है। पर्यटन मंत्रालय के आंकड़े बताते हैं कि मार्च, 2019 की तुलना में मार्च, 2020 में भारत में विदेशी पर्यटकों का आगमन लगभग 66 प्रतिशत कम रहा।[1] पर्यटन में इस भारी गिरावट की वजह विश्व भर में आंशिक या पूर्ण लॉकडाउन तथा स्वदेशी और अंतरराष्ट्रीय यात्राओं पर प्रतिबंध रहे। इससे सरकारों और व्यवसायों के अलावा स्थानीय समुदाय भी प्रभावित हुए। विश्व बैंक के अनुसार वैश्विक निर्यात से मिलने वाले राजस्व में 13 खरब अमेरिकी डॉलर का नुकसान हुआ।

यात्रा और पर्यटन क्षेत्र ने ऐतिहासिक तौर पर सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में बड़ा योगदान किया है। विश्व यात्रा और पर्यटन परिषद के आंकड़े बताते हैं कि 2019 में वैश्विक अर्थव्यवस्था में इस क्षेत्र का योगदान 10.3 प्रतिशत रहा है। एक अध्ययन के अनुसार वर्ष 2020 में जीडीपी का अनुमानित नुकसान कम–से–कम 3435 अरब यूएस डॉलर का रहा। वैश्विक महामारी से आए व्यवधान से सबसे ज़्यादा प्रभावित क्षेत्र एशिया रहा (पांडेय और अन्य 2021)। एक अनुमान के अनुसार अकेले भारत में यात्रा और पर्यटन उद्योग में लगभग चार करोड़ प्रत्यक्ष और परोक्ष रोज़गारों का नुकसान हुआ। इस उद्योग को कुल 16.7 अरब यूएस डॉलर का नुकसान होने का अनुमान है (फिक्की 2020, मल्लपुर 2020)।

बेशक वैश्विक महामारी ने अनेक चुनौतियां पैदा की हैं लेकिन इनके बावजूद भारत में पर्यटन से संबंधित हितधारकों के सामने मौजूदा रुझानों के पुनर्मूल्यांकन और कोविड–19 के बाद इस क्षेत्र को फिर से दुरुस्त करने का अनूठा अवसर है। वैश्विक महामारी ने विभिन्न समुदायों, समूहों, संस्थाओं और सरकारों को अलग–अलग ढंग से प्रभावित किया है। इसलिए इससे सामाजिक और आर्थिक तौर पर उबरने का रास्ता भी एक जैसा नहीं हो सकता। पांडेय और अन्य के अध्ययन (2021) में इस संदर्भ में 'रेस्पॉन्ड' का नज़रिया अपनाने की सिफारिश की गई है। यहां रेस्पॉन्ड का

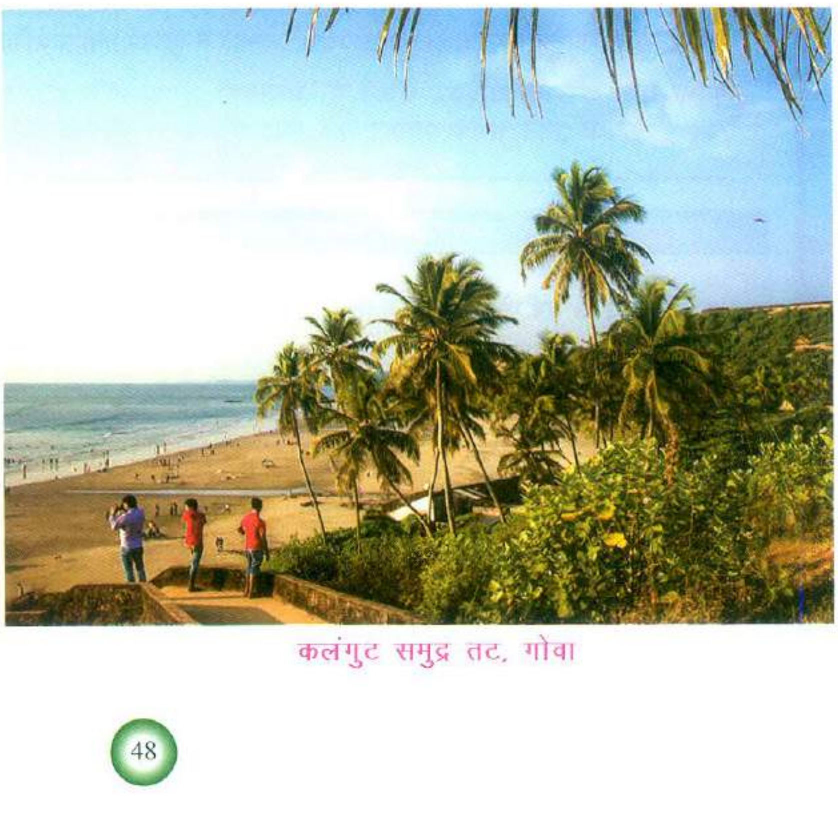

कलंगुट समुद्र तट, गोवा

[1] https://tourism.gov.in/sites/default/files/2020-05/Brief%20Note%20FTA%20March%2020_0.pdf

अरुणाचल प्रदेश

मतलब यात्राओं की बहाली (रिस्टार्ट ट्रैवल), प्रोटोकॉल की स्थापना (एस्टैबलिश प्रोटोकॉल्स), मांग संवर्धन (स्टीमुलेट डिमांड), समन्वय प्रोत्साहन (प्रोमोट कोऑर्डिनेशन), नये सामान्य व्यवहार को लागू करना (ऑपरेशनलाइज़ द न्यू नॉर्मल), नये विकल्पों का पोषण (नर्चरिंग न्यू ऑप्शंस) और डिजिटल समाधानों का विकास (डेवलप डिजिटल सोल्यूशंस) है। इस नज़रिये का उद्देश्य कोविड–19 की वैश्विक महामारी के प्रभाव को घटाना और संवहनीय पुनरुद्धार की ओर ठोस कदम बढ़ाना है। कई अन्य अध्ययनों में भी वैश्विक महामारी के बाद पर्यटन के संवहनीय पुनरुद्धार के लिए चार्टर का ज़िक्र किया गया है। इनमें शारीरिक दूरी, यात्रा और प्रवेश पाबंदियों, निजी संरक्षा उपकरणों के उपयोग, समग्र चिकित्सा और स्वास्थ्य स्थिति में सुधार के लिए सुरक्षा उपायों, पर्यटकों के व्यवहार में परिवर्तन का अनुमान लगाने के लिए मांग की निगरानी और डिजिटल प्रौद्योगिकियों के व्यापक इस्तेमाल जैसे उपायों को शामिल किया गया है। इन अध्ययनों से चार मुख्य बिंदु सामने आए हैं। पहला, बाज़ार के नए रुझानों को समझें। दूसरा, उपभोक्ताओं के मौजूदा रुझान के आधार पर एक सुरक्षित, ठोस और समावेशी पर्यटन तंत्र फिर से स्थापित करें। पर्यावरण पर्यटन जैसे क्षेत्रों में बढ़ती दिलचस्पी का फायदा उठाने के लिए नए सिरे से विचार किया जाना चाहिए। आखिरी बिंदु यह है कि स्वदेशी और अंतरराष्ट्रीय पर्यटनों पर एक समान ध्यान दिया जाना चाहिए।

केंद्र सरकार ने भारत में पर्यटन उद्योग को मज़बूत करने के लिए अनेक नई योजनाएं और कार्यक्रम शुरू किए हैं। वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने 2022–23 के केंद्रीय बजट में पर्यटन मंत्रालय को 2400 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। यह राशि पिछले वित्त वर्ष के आवंटन की तुलना में 18.42 प्रतिशत अधिक है। इस आवंटन में से 1181.30 करोड़ रुपये 'स्वदेश दर्शन' योजना के लिए हैं जिसके तहत पूर्वोत्तर क्षेत्र में पर्यटन सर्किटों का विकास किया जाएगा। पर्यटन अवसंरचना के विकास के लिए 1644 करोड़ रुपये रखे गए हैं।

धार्मिक, स्वास्थ्य, विरासत, रोमांचक तथा बैठक, प्रोत्साहन, सम्मेलन और प्रदर्शनी (माइस) पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 'प्रसाद' (पिलग्रिमेज रिजुवेनेशन एंड स्पिरिचुअल एंड हेरिटेज ऑगमेंटेशन ड्राइव) योजना शुरू की गई है। प्रसाद योजना के लिए बजट में 235 करोड़ रुपये रखे गए हैं।[2] कोविड–19 प्रभावित क्षेत्रों के लिए आपातकालीन ऋण गारंटी योजना (ईसीएलजीएस) को मार्च 2023 तक के लिए बढ़ा दिया गया है। इससे पर्यटन क्षेत्र के पुनरुद्धार की गति में तेज़ी आने के साथ ही नए रोज़गार भी पैदा होंगे।[3] सरकार विदेशी पर्यटकों का भारत में स्वागत करने के लिए तैयार है। केंद्रीय पर्यटन राज्यमंत्री जी किशन रेड्डी ने पहले पांच लाख पर्यटकों को मुफ्त वीज़ा देने की हाल ही में घोषणा की है।[4] इसके अलावा 170 देशों के यात्रियों को ई–वीज़ा सुविधा मुहैया करायी गई है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के 'वोकल फॉर लोकल' और 'आत्मनिर्भर भारत' के मंत्र स्वदेशी पर्यटन और स्थानीय अर्थव्यवस्था

2 https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1794322
3 https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1811580
4 https://tourism.gov.in/sites/default/files/2022-04/usq%203347%20for%2031032022.pdf

> मंत्रालय ने पर्यटन और आतिथ्य क्षेत्र के पुनरुद्धार के लिए एक राष्ट्रीय कार्यबल का गठन किया है। इस क्षेत्र की सहायता के लिए एक राष्ट्रीय पर्यटन नीति जारी की गई है। इस नीति में पर्यटन से जुड़े कामकाज को मज़बूत करना और इसके उपक्षेत्रों का विकास भी शामिल है। मंत्रालय ने स्वदेशी और विदेशी पर्यटकों की सहायता के लिए 12 अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में 24/7 पर्यटक सूचना हेल्पलाइन शुरू की है।

को बढ़ावा देने में प्रभावी साबित हुए हैं। पर्यटन मंत्रालय ने 'देखो अपना देश' कार्यक्रम शुरू किया है। इस कार्यक्रम के तहत भारतीय पर्यटन स्थलों, स्थानीय कलाओं और खानपान के बारे में वेबिनार, ऑनलाइन संकल्प और क्विज़ जैसी गतिविधियों के जरिए जागरूकता पैदा की जा रही है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य ऐसे पर्यटन स्थलों के बारे में भी जानकारी देना है जो अब तक लोकप्रिय नहीं रहे हैं। अब तक दो लाख से ज़्यादा नागरिक 'देखो अपना देश' संकल्प में शामिल हुए हैं जिनमें से लगभग 80 प्रतिशत की उम्र 20 और 45 वर्ष के बीच है।[5] इसे ज़बर्दस्त सफलता माना जा सकता है। अनेक पर्यटन स्थल निकट भविष्य के लिए पूरी तरह बुक हो चुके हैं। पर्यटन मंत्रालय और भारतीय गुणवत्ता परिषद ने यात्रियों के भरोसे और विश्वास को बढ़ाने के लिए 2020 में एक नवोन्मेषी कार्यक्रम 'साथी' शुरू किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य रेस्तोरांओं, होटलों और ऐसे अन्य संस्थानों के सुरक्षित संचालन के लिए नीतियों और मानक प्रक्रियाओं (एसओपी) को लागू करना है।

हितधारकों के लिए प्रक्रिया को ज़्यादा आसान बनाने के साथ ही टूर ऑपरेटरों, ट्रैवल एजेंटों और पर्यटक परिवहन संचालकों की मान्यता को छह माह के लिए बढ़ा दिया गया है। रेल मंत्रालय ने खूबसूरत पश्चिमी घाटों की पर्यटन क्षमता के दोहन के लिए कई ट्रेनों में शीशे की छत वाले डिब्बे लगाए हैं। इन डिब्बों में पर्यटक खूबसूरत नज़ारों को हर दिशा से देख सकेंगे। 400 नई वंदे भारत ट्रेनों का संचालन शुरू होने और 25,000 किलोमीटर नई एक्सप्रेस–वे के निर्माण से देश भर के पर्यटन स्थलों तक पहुंचना और आसान हो जाएगा। धार्मिक पर्यटन के पैकेजों में रामायण मार्ग, बौद्ध वृत और राजसी राजस्थान टूर शामिल हैं। थॉमस कुक और एसओटीसी टूर्स जैसी यात्रा कंपनियां भारत में विभिन्न आतिथ्य ब्रांडों के साथ तालमेल कर रही हैं। इस तरह के तालमेल के जरिए ये कंपनियां नवोन्मेषी कार्यस्थलों, स्वास्थ्य ब्रेक और किफायती लक्ज़री अवकाशों का सृजन कर रही हैं।

वैश्विक महामारी ने प्रौद्योगिकी में नवोन्मेषों और परिवर्तनों का मार्ग भी प्रशस्त किया है। नीति आयोग ने इस महामारी के बाद के युग में अनुभवात्मक पर्यटन के प्रावधान पर ज़ोर दिया है जिसमें सूचना प्रौद्योगिकी का व्यापक इस्तेमाल किया जाएगा। अतुल्य भारत की वेबसाइट और मोबाइल ऐप के लिए गूगल के सहयोग से निजी कहानियों पर आधारित संवादात्मक सामग्री विकसित की जा रही है। इसके अलावा, भारत के प्रमुख विश्व विरासत स्थलों के लिए 360 डिग्री वॉक थ्रू निर्मित किए जा रहे हैं।

पारम्परिक तौर पर कई लक्ज़री होटल व्यक्तिगत संपर्क पर ज़ोर देते रहे हैं। लेकिन महामारी के बाद आईटीसी और ताज जैसे भारत के कुछ लक्ज़री होटल चाबीरहित कमरों, रोबोट सेवाओं और डिजिटल मेनू की ओर बढ़ रहे हैं।

पर्यटन उद्योग ने नागरिक उड्डयन मंत्रालय के सहयोग से डिजी यात्रा की शुरुआत की है। इसके तहत यात्रियों की यात्रा सुगमता के लिए विभिन्न हवाई अड्डों में चेहरा पहचान प्रौद्योगिकी पर आधारित आगमन और प्रस्थान की सुविधा मुहैया करायी गई है।[6] एमैड्यूस रीथिंक ट्रैवल ग्लोबल सर्वे के अनुसार सर्वेक्षण में भाग लेने वाले 84 प्रतिशत यात्रियों ने कहा कि प्रौद्योगिकी यात्रा उनके आत्मविश्वास को बढ़ाएगी। भारतीय यात्रा और आतिथ्य उद्योग वस्तु इंटरनेट प्रौद्योगिकियों (आईओटी) को अपना रहा है जिससे पर्यटन को महामारी के बाद की अनिश्चितता भरी दुनिया में आसानी से उबरने में सहूलियत होगी।

सरकार ने देश में ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए भी अनेक कदम उठाए हैं। गंतव्यों और सर्किटों के लिए उत्पाद/अवसंरचना विकास (पीआईडीडीसी) योजना के तहत ग्राम्य जीवन, कला, संस्कृति और विरासत को प्रदर्शित करने के लिए ग्रामीण पर्यटन संवर्धन कार्यक्रम चलाया गया है।[7] विभिन्न उपक्रम और गैर–सरकारी संगठन भी देश में ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए काम कर रहे हैं। ग्रासरूट्स नामक संस्था पर्यटन समिति के सहयोग से ग्रामीणों को गाइड, रसोइयां और मेजबान बनने का प्रशिक्षण देने के लिए नियमित पर्यटन कार्यक्रम चलाती है। भारत स्थित सामाजिक उपक्रमों और गैर–सरकारी संगठनों कबानी और उरावू ने पिछड़े और ग्रामीण क्षेत्रों में एक समावेशी समुदाय आधारित पर्यटन कार्यक्रम विकसित किया है। पेशेवर विकास संगठन धान फाउंडेशन ने संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) और भारत सरकार के सहयोग से तमिलनाडू के करैकुडी और कशुगुमलै में ग्रामीण आजीविका के लिए अंतःविकसित पर्यटन परियोजना शुरू

> स्मार्टफोन और इंटरनेट के प्रसार ने यात्रा और आतिथ्य क्षेत्र के तेजी से डिजिटलीकरण में उत्प्रेरक का किरदार अदा किया है। ऑटोरिक्शा चालक या रेहड़ी वाले को यूपीआई के जरिए भुगतान करना अब आम बात है। कई रेस्तोरांओं ने भी आगंतुकों की सहूलियत और उनका आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए क्यूआर कोड समर्थित ऑनलाइन ऑर्डर और संपर्क रहित भुगतान प्रणालियों को तेजी से अपनाया है।

5 https://pledge.mygov.in/my-country/

6 https://www.india.gov.in/spotlight/digi-yatra-new-digital-experience-air-travellers

7 https://pib.gov.in/newsite/PrintRelease.aspx?relid=123578

की है। इस परियोजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन के अवसरों का लाभ उठाना है।

वैश्विक महामारी का पर्यटन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। लेकिन इसने 'आयुष' और स्वास्थ्य से संबंधित पर्यटन के लिए संभावनाओं के द्वार भी खोले हैं। महामारी ने संपूर्ण तंदुरुस्ती और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के बारे में जागरूकता में इज़ाफा किया है। इससे उपचार की आयुष प्रणालियों को विश्व भर में प्रचारित करने में सहूलियत हुई है। पिछले कुछ वर्षों में स्वास्थ्य पर्यटन की लोकप्रियता बढ़ी है। भारतीय यात्रा स्टार्टअप संस्थाएं इस मौके का इस्तेमाल कर स्वास्थ्य पर्यटन को बढ़ावा देने में जुटी हैं। देश में चिकित्सा पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 'हील इन इंडिया' अभियान चलाया गया है जिसका आयुष एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। मौजूदा समय में भारतीय पर्यटन उद्योग को 'आयुष' ने एक बेहतरीन अवसर मुहैया कराया है।

पर्यटन मंत्रालय ने स्वास्थ्य यात्राओं के लिए दिशानिर्देश तैयार किए हैं। ये दिशानिर्देश गुणवत्तापूर्ण प्रचार सामग्री उपलब्ध कराने, सेवा प्रदाताओं के प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण तथा स्वास्थ्य संबंधी अंतरराष्ट्रीय और स्वदेशी कार्यक्रमों में भागीदारी जैसे विषयों से संबंधित हैं। मंत्रालय ने मान्यता प्राप्त स्वास्थ्य केंद्रों समेत चिकित्सा पर्यटन सेवा प्रदाताओं को बाज़ार विकास सहायता (एमडीए) योजना उपलब्ध करायी है।[8]

पर्यटन मंत्रालय, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) और रेस्पॉन्सिबल टूरिज़्म सोसायटी ऑफ इंडिया के बीच एक करार किया गया है। इसके तहत तीनों पक्ष मिल कर काम करते हुए पर्यटन क्षेत्र में संवहनीय प्रयासों को बढ़ावा और समर्थन देने के उपाय करेंगे।[9] इस पहल से नागरिकों को आर्थिक विकास और पहुंच को बढ़ाने के मकसद से संवहनीय और हरित यात्रा परिवहन प्रणालियों को अपनाने के लिए प्रेरणा मिलेगी। संवहनीय यात्रा प्रयास देश में कोविड–19 से बुरी तरह प्रभावित पर्यटन उद्योग को फिर से पटरी पर लाने में उपयोगी साबित हो सकते हैं।

विश्व की विभिन्न अर्थव्यवस्थाएं आवागमन पर पाबंदियों में ढील देने की ओर बढ़ रही हैं। ऐसे में पर्यावरण, आध्यात्मिक, शिक्षा और चिकित्सा पर्यटन में भारत की व्यापक संभावनाओं पर गौर किया जाना चाहिए। देश की अंदरूनी और विदेश नीतियां पर्यटन उद्योग को प्रोत्साहन देने के लिए माहौल तैयार कर रही हैं। लेकिन नई तरह की सामान्य स्थिति में नवोन्मेष और अनुकूलनों की संभावनाएं अब भी बरकरार हैं। यात्रा प्रोटोकॉलों के अनुरूप समाधानों का विकास किया जाना चाहिए। सुरक्षित, समावेशी और संवहनीय यात्रा प्रक्रियाओं को बढ़ावा देने की ज़रूरत है। हमारा लक्ष्य इस क्षेत्र में योगदान की देश की संभावनाओं का भरपूर इस्तेमाल करना है ताकि भारत विश्व का अव्वल पर्यटन केंद्र बन सके।

(लेखिका द्वय इंवेस्ट इंडिया की रणनीतिक निवेश अनुसंधान इकाई में शोधकर्ता हैं। लेख में व्यक्त विचार निजी हैं।)

ई–मेल: bhavya.tyagi@investindia.org.in
karishma.sharma@investindia.org.in

[8] https://tourism.gov.in/wellness-tourism
[9] https://pib.gov.in/Pressreleaseshare.aspx?PRID=1797238

योग से सम्पूर्ण स्वास्थ्य की ओर

–डा. कृष्ण चंद्र चौधरी

"योग अतीत के गर्भ में प्रस्तुत कोई कपोल–कथा नहीं है। यह वर्तमान की सर्वाधिक मूल्यवान विरासत है। यह वर्तमान युग की अनिवार्य आवश्यकता और आने वाले युग की संस्कृति है।"

–स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

योग सम्यक जीवन का विज्ञान है, अतः इसका समावेश हमारे जीवन और हमारे दैनिक जीवन में एक नित्यचर्या के रूप में होना चाहिए। यह हमारे व्यक्तित्व के शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक, सभी पहलुओं को प्रभावित करता है। 'योग' शब्द का अर्थ एकत्व होता है और यह संस्कृत धातु 'यूज' से बना है, जिसका अर्थ होता है जोड़ना। इस जोड़ने को आध्यात्मिक शब्दावली में व्यक्ति चेतना का समष्टि चेतना से मिलन कहा जाता है।

योग विज्ञान का प्रभाव व्यक्तित्व के सबसे बाहरी पक्ष–शरीर से प्रारंभ होता है, जो अधिकतर व्यक्तियों के लिए एक व्यावहारिक आरंभिक बिंदु है। इस स्तर पर असंतुलन का अनुभव होने से अंगों, पेशियों और तंत्रिकाओं के कार्यकलापों में सामंजस्य नहीं रह पाता है, वे एक–दूसरे के प्रतिकूल कार्य करने लग जाते हैं। उदाहरणार्थ, अंतःस्रावी प्रणाली के नियमित होने से तंत्रिका तंत्र की कार्यकुशलता इतनी कम हो जाती है कि रोग होने की संभावना हो जाती है। योग का लक्ष्य शरीर के विविध कार्यकलापों के बीच पूर्ण सामंजस्य स्थापित करना है ताकि वे संपूर्ण शरीर के हित में कार्य करें। स्थूल शरीर से प्रारंभ कर योग मानसिक और भावनात्मक स्तर की ओर बढ़ता है। अनेक लोग दैनिक जीवन के दबावों और आपसी व्यवहार से उत्पन्न भय और मानसिक रोगों से पीड़ित होते हैं। योग समस्त व्याधियों को निर्मूल तो नहीं कर सकता, परंतु उनसे जुड़ने की प्रमाणिक विधि प्रदान कर सकता है।

Academy for Education & Training Pvt.Ltd ★ Delhi ★

योग भारत की प्राचीन परंपरा की अमूल्य निधि है। यह शरीर व मस्तिष्क के बीच एकता स्थापित करने का विज्ञान है। मनुष्य और प्रकृति के बीच जुड़ाव का नाम ही योग है, यह विचार, संयम और निरोगकता प्रदान करने वाला है। हमारी बदलती जीवनशैली में यह चेतना बनकर हमें जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद करता है। योग आपको बच्चे की तरह बना सकता है। जहां पर मन की निश्छलता और विकासहीनता का स्थायित्व होता है। यौगिक शास्त्रों के अनुसार जीवात्मा का परमात्मा से मिलन योग के सही और सफल अभ्यास का परिणाम है जो जीवन, शरीर व मन के बीच उत्तम एकता को प्रदर्शित करता है। विश्व के सबसे प्राचीनतम विज्ञान योग का सृजन भारत की पुण्यभूमि से हुआ है। ऐसा माना जाता है कि संभवतः योग सिंधु घाटी सभ्यता से भी पुराना है।

पौराणिक तौर पर योग उस प्राचीनकाल से है जब पहले गुरु शिव, जिन्हें आदियोगी कहा गया है, ने पहली योग की शिक्षा दी थी। शिक्षा ग्रहण करने वाले तेजस्वी, ओजस्वी पुरुष थे जिन्हें आज हम सप्त ऋषियों (वशिष्ठ, कश्यप, आत्रि, विश्वामित्र, कंव, भारद्वाज, शैनक) के नाम से जानते हैं। यूं तो योग का अभ्यास वेदों के लिखे जाने के पूर्व से चला आ रहा है परंतु महर्षि पतंजलि ने पहली बार व्यवस्थित एवं सुचारू रूप से अपने 196 योग सूत्रों के द्वारा इसे क्रमबद्ध किया। साथ ही, उसका मतलब भी समझाया। महर्षि पतंजलि के बाद भी अनेक ऋषियों, संतों एवं योग आचार्यों ने योग विकसित तथा लिखित रूप में संरक्षित करने का भगीरथ प्रयास किया।

योग : प्रतीक चिन्ह के सूत्र

प्रतीक चिन्ह में दोनों हाथों को जोड़ना योग का प्रतीक है। यह व्यक्तिगत और चेतना का सार्वभौमिक के साथ योग को प्रतिबिंबित करता है। यह शरीर और मन, मनुष्य और प्रकृति की समरसता का प्रतीक है। यह स्वास्थ्य और कल्याण के समग्र दृष्टिकोण को भी दर्शाता है। इसमें चित्रित भूरी पत्तियां–भूमि, हरी पत्तियां–प्रकृति और नीली पत्तियां–अग्नि तत्व का प्रतीक हैं। दूसरी ओर, सूर्य ऊर्जा और प्रेरणा के स्रोत का प्रतीक है। प्रतीक चिन्ह मानवता के लिए शांति और समरसता को प्रतिबिंबित करता है जो योग का मूल है।

वर्तमान में शारीरिक रूप से लगभग निष्क्रिय हो चुकी अपनी जीवनशैली में अगर आप सकारात्मक बदलाव लाना चाहते हैं तो इसका सबसे आसान, प्रभावी और सुरक्षित माध्यम योग है, वो भी बिना कुछ खर्च किए। विज्ञान भी इस बात को स्वीकारता है कि मांसपेशियों की ताकत और शरीर के लचीलेपन में वृद्धि, श्वसन और हृदय संबंधी बेहतर गतिविधि, व्यसन से उबरना, तनाव, चिंता,

अवसाद और लंबे समय से चले आ रहे दर्द में कमी, नींद की प्रकृति में सुधार के साथ–साथ समग्र स्वास्थ्य लाभ के लिए योग सबसे बेहतरीन उपाय है। योग की इसी क्षमता का असर है कि आज इसकी लोकप्रियता भारत के दायरे से बाहर निकल कर पूरी दुनिया में फैल चुकी है।

योग का मनोस्वास्थ्य पर असर

योग के नियमित अभ्यास से शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक सुधार होता है। योग के अंतर्गत योगासनों, प्राणायाम और ध्यान को शामिल किया जाता है। योगासन, प्राणायाम और ध्यान सेहत के लिए किसी वरदान से कम नहीं हैं। विभिन्न आसनों से हड्डी, मांस–मज्जा और शरीर के भीतरी अंग सशक्त होते हैं। वहीं प्राणायाम से शरीर के भीतर की नाड़ियां सुचारू रूप से कार्य करती हैं। योग चिंता और अवसाद जैसे मनोरोगों के इलाज में सहायक है। यह आपके हृदय को भी स्वस्थ रखने, मधुमेह, खराब कोलेस्ट्रॉल को कम रखने और अच्छे कोलेस्ट्रॉल के स्तर को बढ़ाने में भी मदद करता है। नियमित रूप से योग करने से पुराने कमर दर्द से राहत मिलती है और योग हमारी हड्डियों और जोड़ों को लचीला बनाए रखता है। योगासन, ध्यान और प्राणायाम आदि के रूप में नियमित योग करने से आपके संपूर्ण स्वास्थ्य को फायदा पहुंचता है।

योग से मानसिक तनाव नियंत्रण में रहता है। योग हमारे मस्तिष्क को तनावमुक्त और शांतचित्त रखने में मदद करता है। योग से उच्च रक्तचाप को सामान्य रखने में मदद मिलती है, तनाव कम होता है और मोटापा नियंत्रित होता है। साथ ही, व्यक्ति का रक्तसंचार सुचारू रूप से संचालित होता है, जिसका प्रभाव तन ही नहीं बल्कि मन पर भी पड़ता है।

मौजूदा समय में मधुमेह एक स्वास्थ्य समस्या बन चुका है। दुनिया भर में सबसे ज़्यादा मधुमेह रोगी भारत में ही हैं। भारत को मधुमेह की राजधानी कहा जाने लगा है। कई अध्ययनों से पता चला है कि योग मधुमेह के रोगियों के लिए भी लाभकारी है। योग शरीर की हर कोशिका को प्रभावित करता है। योगाभ्यास करने वाले व्यक्ति का दृष्टिकोण सकारात्मक होता है एवं वह उद्देश्यपूर्ण और स्वस्थ जीवन व्यतीत करता है। निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि योग के कई मानसिक लाभ हैं। जैसे स्वास्थ्य में सुधार, एकाग्रता का बढ़ना, आत्मविश्वास में वृद्धि और जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण आदि।

योग में वह क्षमता है कि वह किसी भी बीमारी के इलाज में सहायक की भूमिका निभा सकता है। जीवनशैली संबंधी समस्या, गैर–संचारी विकारों और कैंसर, हृदय रोग, मानसिक आघात आदि जैसी आधुनिक बीमारियों के मरीज़ों के पुनर्वास में वैश्विक स्तर पर इसकी स्वीकार्यता अपने आप में योग की क्षमता को दर्शाती है। योग केवल व्यायाम नहीं है, बल्कि स्वयं के साथ, विश्व और प्रकृति के साथ एकत्व खोजने का भाव है। योग हमारी जीवनशैली में परिवर्तन लाकर हमारे अंदर जागरुकता उत्पन्न करता है तथा प्राकृतिक परिवर्तनों से शरीर में होने वाले बदलावों को सहन करने में सहायक हो सकता है।

भारत के प्रयासों की वजह से दुनिया में 21 जून, 2015 से अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की शुरुआत हुई। उसी का नतीजा है कि अचानक आई कोविड की आपदा के दौर में भी उपचार से ज़्यादा रोकथाम पर आधारित भारत की प्राचीनतम और समृद्ध परंपरा के रूप में योग बचाव का अहम साधन बना और दुनिया को भी इस ताकत का अहसास कराया। योग आज दुनिया में एक नई एकीकृत ताकत के रूप में उभरा है।

योग ने विश्व को जोड़ दिया है। जैसे योग शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा को जोड़ता है, वैसे ही योग आज विश्व को भी जोड़ रहा है। हर कोई चाहता है कि तनाव मुक्त जीवन हो, बीमारी से मुक्त जीवन हो, प्रसन्न जीवन हो, इन सबको किसी एक मार्ग से पाया जा सकता है तो वह मार्ग है योग का। एक संपूर्ण जीवन को संतुलित रूप में कैसे जिया जा सकता है? तन से, मन से, विचारों से, आचारों से, स्वस्थ होने की अंतर्यात्रा कैसे चले, यह अनुभव करना है तो योग के माध्यम से हो सकता है।

"वासुदेव कुटुम्बकम" का सिद्धांत भारतीय दर्शन में ही संभव है। योग पहले भी दुनिया में लोकप्रिय था, लेकिन संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतरराष्ट्रीय मान्यता देने के बाद बड़ी भागीदारी ने योग को घर–घर पहुंचा दिया। इस तरह भारत ने दुनिया को योग की शक्ति से रूबरू कराया। कोविड महामारी के दौर में योग का महत्व और बढ़ा है। कोविड-19 के दौर में कई लोगों ने मानसिक समस्याओं का सामना किया। संक्रमण से बचाव के लिए मज़बूत रोग प्रतिरोधक शक्ति बेहद ज़रूरी है। ऐसे में कई योगासन भी हैं जो आपके शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाने में मदद करते हैं। स्वस्थ शरीर की दिशा में यह अहम साबित हो सकते हैं।

दैनिक जीवन में प्राणायाम को अवश्य शामिल करना चाहिए। यह प्राणायाम योग या श्वास संबंधी व्यायाम हमारे श्वसन तंत्र को मज़बूत करता है। मौजूदा दौर में यह अधिक प्रासंगिक है क्योंकि शरीर का श्वसन तंत्र ही है जो कोरोना वायरस से बुरी तरह प्रभावित होता है। कोविड के दौर में योग ने पारिवारिक बंधन को भी मजबूत किया है और घरो में बंद रहने की मजबूरी में एक नई सकारात्मक ऊर्जा का संचार किया है।

शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता को मज़बूत बनाने में योग का महत्वपूर्ण स्थान है। योगासन करने से रक्त में श्वेत रक्त कोशिकाओं का अद्भुत विकास होता है। यह तो माना ही जाता है कि योग निरोग रहने में मदद करता है। जहां योग हैं, वहां बीमारियां नहीं आ सकती। वर्तमान समय में कोरोना महामारी ने सिर्फ आधुनिक विज्ञान की विफलता को सिद्ध कर दिया है। ऐसे में भारत के लिए स्वर्णिम अवसर है कि योग के ज्ञान–विज्ञान का विश्व में प्रचार करने के साथ ही विज्ञान के क्षेत्र में भी अगुआ बने।

योग एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है जिसमें मन, शरीर, आत्मा स्वस्थ रहते हैं और सभी का जीवन तनाव एवं भयमुक्त रहता हैं। अध्ययन में सामने आया है कि कोविड प्रबंधन और लॉकडाउन के दौरान तनाव कम करने में योग की बेहद अहम भूमिका रही है।

यही नहीं, आज चिकित्सा विज्ञान भी स्वस्थय जीवन की दिशा में योग के महत्व को स्वीकार कर रहा है।

जीवन में योग से लाभ

- शरीर संतुलन और लचीलेपन में सुधार करता है।
- माँसपेशियों की शक्ति और रक्त परिसंचरण को बढ़ाता है।
- सांस लेने में सुधार करता है।
- पीठ के निचले हिस्से के दर्द को कम करता है।
- नियमित दवा लेने के अलावा योग मधुमेह, श्वसन, श्वास विकारों और अन्य जीवनशैली से संबंधित विकारों के प्रबंधन में मदद कर सकता है।
- यह अवसाद, थकान, चिंता संबंधी विकार और तनाव को कम करने में मदद करता है।

मनुष्य योग के द्वारा मानसिक स्तर पर तनाव से दूर रहता है। इसके वैज्ञानिक प्रमाण भी हैं। योग के द्वारा मनुष्य की आंतरिक शक्ति और बीमारियों से लड़ने की क्षमता बढ़ जाती है। योग के द्वारा हम स्वयं के साथ–साथ अपने परिवार, और अड़ोस–पड़ोस को अच्छी दिनचर्या के साथ जीवन को जीने के लिए तैयार कर सकते हैं। यह बात सही है कि योग के द्वारा किसी बीमारी को त्वरित रूप से सही नहीं किया जा सकता है परंतु अगर जन समुदाय ने योग को अपनी दिनचर्या में स्थान देने के महत्व को समझ लिया और उसे अपनी दैनिक दिनचर्या में स्थान दिया तो उसके शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति मज़बूत होती है।

मानसिक रूप से योग के द्वारा विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान लंबे समय से किया जाता है। आने वाले समय के लिए शरीर मस्तिष्क को इतना मजबूत करता है कि मस्तिष्क विभिन्न प्रकार के तनाव का सामना कर सके तथा विभिन्न प्रकार की बीमारियों से लड़ने की स्थिति में रह सके। अतः योग और नियमित व्यायाम को दैनिक दिनचर्या में शामिल करें क्योंकि यह शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अच्छा है।

योगासन (शारीरिक मुद्राओं), साँस लेने की तकनीक और ध्यानावस्था पर आधारित शारीरिक व्यायाम का एक लोकप्रिय रूप है। तनाव और कोलाहलपूर्ण सामाजिक जीवन में अधिकतर लोगों के लिए योग स्वास्थ्य रक्षा एवं पारिवारिक मंगलकामना का साधन है। कार्यालय में लंबे समय तक बैठने और मेजों पर झुककर दायित्वों के निर्वाहन से उत्पन्न दिनभर की थकान और परेशानी को आसानी से अभ्यास मिटा डालता है। काम से अवकाश के घटते समय की पूर्ति शिथिलीकरण की तकनीकों द्वारा की जाती है।

रात–दिन मोबाइल फोन की घनघनाती घंटियों और 24 घंटे जीवन की आपा–धापी के बीच योग व्यक्तिगत राहत पहुंचाता है और कर्म में भी कुशलता लाता है। व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति के अतिरिक्त कई सामाजिक कुरीतियों से जूझने की शक्ति प्रदान करता है। ऐसे समय में जब विश्व पुराने मूल्यों को नए मूल्यों से प्रतिस्थापित किए बिना ही उन्हें अस्वीकार कर चौराहे पर किंकर्त्तव्यविमूढ़ खड़ा है, योग लोगों को अपने वास्तविक स्वरूप से जोड़ने का साधन प्रदान कर रहा है।

मानवता के लिए योग

अगले महीने 21 जून को, हम 8वाँ 'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस' मनाने वाले हैं। इस बार 'योग दिवस' की थीम है **योगा फॉर ह्युमेनिटी (मानवता के लिए योग)** मैं आप सभी से 'योग दिवस' को बहुत ही उत्साह के साथ मनाने का आग्रह करूँगा। हाँ! कोरोना से जुड़ी सावधानियां भी बरतें, वैसे, अब तो पूरी दुनिया में कोरोना को लेकर हालात पहले से कुछ बेहतर लग रहे हैं, अधिक–से–अधिक वैक्सीन कवरेज की वजह से अब लोग पहले से कहीं ज्यादा बाहर भी निकल रहे हैं, इसलिए पूरी दुनिया में 'योग दिवस' को लेकर काफी तैयारियाँ भी देखने को मिल रही हैं। कोरोना महामारी ने हम सभी को यह एहसास भी कराया है कि हमारे जीवन में स्वास्थ्य का कितना अधिक महत्व है और योग इसमें कितना बड़ा माध्यम है। लोग यह महसूस कर रहे हैं कि योग से फिजिकल, स्पिरिचुयल और इंटेलेकचुयल वैलबिंइग को भी कितना बढ़ावा मिलता है। विश्व के टॉप बिजनस पर्सन से लेकर फिल्म और स्पोर्ट्स पर्सनेलिटी तक, स्टूडेंट्स से लेकर सामान्य मानव तक, सभी, योग को अपने जीवन का अभिन्न अंग बना रहे हैं। मुझे पूरा विश्वास है, कि दुनिया भर में योग की बढ़ती लोकप्रियता को देखकर आप सभी को बहुत अच्छा लगता होगा। साथियो, इस बार देश–विदेश में 'योग दिवस' पर होने वाले कुछ बेहद इन्नोवेटिव उदाहरणों के बारे में मुझे जानकारी मिली है। इन्हीं में से एक है गारजियन रिंग(Guardian Ring)– एक बड़ा ही यूनीक प्रोग्राम होगा। इसमें मूवमेंट ऑफ सन (Movement of Sun) को सेलीब्रेट किया जाएगा, यानी, सूरज जैसे–जैसे यात्रा करेगा, धरती के अलग–अलग हिस्सों से, हम, योग के जरिये उसका स्वागत करेंगे। अलग–अलग देशों में इंडियन मिशन वहाँ के लोकल टाइम के मुताबिक सूर्योदय के समय योग कार्यक्रम आयोजित करेंगे। एक देश के बाद दूसरे देश से कार्यक्रम शुरू होगा। पूरब से पश्चिम तक निरंतर यात्रा चलती रहेगी, फिर ऐसे ही, ये, आगे बढ़ता रहेगा। इन कार्यक्रमों की स्ट्रीमिंग भी इसी तरह एक के बाद एक जुड़ती जाएगी, यानी, ये, एक तरह का रिले योगा स्ट्रीमिंग इवेंट होगा। आप भी इसे जरूर देखिएगा।

29 मई, 2022 को प्रसारित प्रधानमंत्री की मन की बात के अंश

निश्चित ही आज मानवीय संवेदना का चारों ओर अभाव दिखाई दे रहा है। इस परिप्रेक्ष्य में योग साधारण शारीरिक व्यायाम नहीं है, वरन एक नवीन जीवन पद्धति को स्थापित करने का प्रभावकारी साधन है, एक ऐसी जीवनशैली है, जिसमें जीवन की बाहरी एवं आंतरिक वास्तविकताओं का सुंदर संयोग होता है। निश्चित ही यह जीवनशैली एक ऐसी अनुभूति है, जिसे बुद्धि से नहीं समझा जा सकता है। अभ्यास और अनुभूति के आधार पर ही इसे जीवंत और समझने लायक बनाया जा सकता है। अंत में तन–मन से जीवन चले और अपनाएं योग मार्ग। आनंदमय हो जीवन सबका, योग यही सिखलाये।

(लेखक सहजानंद ब्रह्मर्षि महाविद्यालय, आरा (वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय) में मनोविज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष हैं।)

ईमेलः krishna-nipccd@gmail.com

कुरुक्षेत्र का आगामी अंक

जुलाई 2022 – जल संसाधन

आर. एन. आई./708/57
डाक-तार पंजीकरण संख्या : डी.एल. (एस)-05/3164/2021-23
आई.एस.एस.एन. 0971-8451, पूर्व भुगतान के बिना आर.एम.एस.
दिल्ली में डाक में डालने के लिए लाइसेंस : यू (डी.एन.)-54/2021-23
01 जून, 2022 को प्रकाशित एवं 5-6 जून, 2022 को डाक द्वारा जारी

R.N.I/708/57
P&T Regd. No. DL (S)-05/3164/2021-23
ISSN 0971-8451, Licenced under U (DN)-54/2021-23
to Post without pre-payment at R.M.S. Delhi.

Just Released

संघ एवं राज्य सिविल सेवा

परीक्षाओं के सामान्य अध्ययन
हेतु अत्यन्त लाभदायक सामग्री.
विभिन्न विश्वविद्यालयों के
भारतीय अर्थव्यवस्था
के प्रश्न-पत्र एवं अन्य
परीक्षाओं के लिए भी उपयोगी.

संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण 2022

1 मई, 2022 तक अद्यतन

Code 791
₹ 330.00

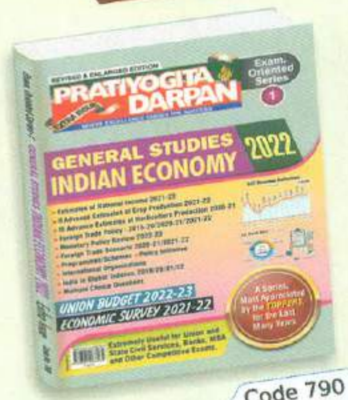

Code 790
₹ 365.00

केन्द्रीय बजट 2022-23
आर्थिक समीक्षा 2021-22

टॉपर्स की राय में...

- .....मैंने प्रतियोगिता दर्पण के अतिरिक्तांक 'भारतीय अर्थव्यवस्था व एग्रीकल्चर' की मदद ली, ये काफी सराहनीय हैं.
  —गौरव सिंह
  65वीं बी.पी.एस.सी. परीक्षा में प्रथम स्थान
- .....सामान्य अध्ययन के अतिरिक्तांक एवं कुछ अन्य वैकल्पिक विषयों के अतिरिक्तांक, अभ्यर्थियों के लिए उपयोगी हैं. मुख्य परीक्षा एवं साक्षात्कार में इनसे बड़ी मदद मिलती है.
  —अनुज नेहरा
  उ.प्र. पी.सी.एस. परीक्षा, 2016 में प्रथम स्थान
- .....मैंने प्रतियोगिता दर्पण का अर्थव्यवस्था अतिरिक्तांक पढ़ा, जो अत्यंत उपयोगी है.
  —मिन्टू लाल मीना
  सिविल सेवा परीक्षा, 2018 (हिन्दी माध्यम से चयनित)
- .....प्रतियोगिता दर्पण के अतिरिक्तांक अच्छे हैं, खासकर अर्थव्यवस्था का, जिसे मैंने पढ़ा है.
  —विवेक त्रिपाठी
  उत्तर प्रदेश सिविल सेवा परीक्षा, 2017 में चयनित
- .....प्रतियोगिता दर्पण का अर्थव्यवस्था का अतिरिक्तांक बेहद महत्वपूर्ण रहा है.
  —अनिरुद्ध कुमार
  सिविल सेवा परीक्षा, 2017 में हिन्दी माध्यम से सर्वोच्च स्थान
- .....प्रतियोगिता दर्पण का अर्थव्यवस्था का अतिरिक्तांक अच्छा है.
  —गंगा सिंह
  सिविल सेवा परीक्षा, 2016 में हिन्दी माध्यम से द्वितीय स्थान
- .....प्रतियोगिता दर्पण के अतिरिक्तांक संक्षिप्त, सटीक एवं सारगर्भित हैं, अर्थव्यवस्था का अतिरिक्तांक अतुलनीय है. सभी अतिरिक्तांक गागर में सागर के समान हैं.
  —जयजीत कौर होरा
  उ.प्र. पी.सी.एस., 2016 में प्रथम स्थान

मुख्य आकर्षण

◆ भारतीय अर्थव्यवस्था–प्रमुख विशेषताएं
◆ राष्ट्रीय आय : 2021-22 के द्वितीय अग्रिम अनुमान
◆ कृषि, उद्योग, बैंकिंग एवं अधोरचना सम्बन्धी नवीन तथ्य
◆ विदेशी व्यापार : 2020-21/2021-22
◆ नई विदेश व्यापार नीति : 2015-20/2020-21/2021-22
◆ भारत पर विदेशी ऋण 2021-22
◆ मौद्रिक नीति समीक्षा, अप्रैल 2022
◆ वैश्विक सूचकांकों में भारत 2021/22
◆ कृषि उपजों के द्वितीय एवं बागवानी फसलों के प्रथम अग्रिम अनुमान : 2021-22 ◆ केन्द्र सरकार की नवीन योजनाएं
◆ फसलों के फसल सत्र 2021-22 के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित
◆ नीतिगत पहलें ◆ भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2021
◆ एसडीजी इण्डिया इण्डेक्स 2020-21 ◆ भ्रष्टाचार बोध सूचकांक, 2022
◆ नवीनतम आर्थिक तथ्यों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

Scan the QR Code with your mobile and buy
QRPD012D
Download FREE QR Scanner app from the app store

Available on : pdgroup.in amazon flipkart.com

प्रतियोगिता दर्पण 1, स्टेट बैंक कॉलोनी, खन्दारी, आगरा-मथुरा बाईपास, आगरा-282 005
फोन : (0562) 2530966, 2531101 • E-mail : care@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in
• नई दिल्ली 23251844, 43259035 • हैदराबाद 24557283 • पटना 2303340 • हल्द्वानी मो. 07060421008

प्रकाशक और मुद्रक: मोनीदीपा मुखर्जी, महानिदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003.
मुद्रक : विबा प्रेस प्रा. लि., सी-66/3, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-II, नई दिल्ली-110020, वरिष्ठ संपादक: ललिता खुराना